प्राचीन भारत का इतिहास

सिन्धुघाटी सभ्यता :-

- इस सभ्यता की सर्वप्रथम खुदाई 1921 में दयाराम साहनी के नेतृत्व में पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के मान्टगोमरी जिले में हड़प्पा नामक स्थान पर हुई।
- उसके बाद 1922 में राखलदास बनर्जी द्वारा पकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में मोहन जोदडो नामक स्थान पर करवाई गई।
- सिन्धु घाटी सभ्यता क्षेत्रफल मे अपने समकालीन विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता थी। इस सभ्यता का कुल क्षेत्रफल 12, 99, 600 Km^2 था। यह सभ्यता त्रिभुजाकार आकार में फैली थी।
- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान के सिन्धु, ब्लूचिस्तान, और पंजाब प्रान्त में तथा भारत के J - K, पंजाब, हरियाण, राजस्थान पश्चिमी U.P., गुजरात तथा महाराष्ट्र में है।
- इस सभ्यता को पहले सिन्धुघाटी सभ्यता घाटी या सिन्धु सभ्यता कहा जाता था। अब इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है क्योकि इस सभ्यता की सबसे पहले खुदाई हड़प्पा में हुई थी।

"सिन्धु घाटी सभ्यता का विस्तार"

पाकिस्तान :-

- ब्लूचिस्तान प्रान्त में - सुत्कांगेडोर, सुत्काकोह, डाबरकोट
- सिन्ध प्रान्त में - मोहनजोदड़ो, अलीमुरीद, कोटदीजी, चन्हूदढ़ो
- पंजाब प्रान्त में - हड़प्पा

भारत में :-

1.	J & K प्रान्त में	- मांडा
2.	पंजाब प्रान्त में	- रोपड़, संघोल,बाड़ा
3.	हरियाणा प्रान्त में	- बनवाली, राखीगढ़ी, मीत्ताथल
4.	राजस्थान प्रान्त में	- कालीबंगा, पीलीबंगा,
5.	गुजरात प्रान्त में	- लोथल, रंगपुर, भंगवतराव, सुरकोटदा
6.	U.P.	- आलमगीरपुर
7.	महाराष्ट्र	- दैमाबाद

नदियों के किनारे से प्रमुख नगर

1.मोहन जोदडो	-	सिन्धुनदी
2.हड़प्पा	-	रावी नदी
3.रोपण	-	सतलज
4.कालीबंगा	-	घग्घर
5.लोथल	-	भोगवा
6.रंगपुर	-	मादर
7.आलमगीरपुर	-	हिन्डन
8.कोटदीजी	-	सिन्धु

सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

हडप्पा - यहां पर मजदूरों के आवस के साक्षय मिले। (1) R-37 नाम का कब्रिस्तान (2) पीतल का बना इक्का (3) 6-6 पांक्तियो मे निर्मित कुल 12 कमरो वाले अन्नागार के अवशेष (4) कुम्हारो के 14 भट्टे मिले

मोहनजोदडो- मृतकों का टीला कहा गया है। यहां पर एक टीले पर 38 शवो को एक साथ दफनाया गया। मोहनजोदडो को सिन्ध का बगीचा (नखलिस्तान) भी कहा गया। यह सिन्धुघाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है। खुदाई में सात स्तर मिले, विशाल स्नानगृह मिला हैं। इसका उपयोग किसी धार्मिक प्रयोजन के लिए होता होगा। इस सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत यहां का विशाल अन्नागार है। कांसे की बनी नर्तकी की मूर्ति मिली। हाथी का कपाल मिला है। सूती कपड़े के साक्ष्य मिले जो चांदी के बर्तन पर लिपटे है। पिघले हुए तांबे का ढेर मिला है।

- पशुपतिनाथ अंकित मुद्रा मिली है। सीप का बना हुआ पैमाना।
- यहां पर प्राप्त मुद्रा पर नाव की आकृति मिली है। कुम्हारो के 6 भट्टे मिले है।

कालीबंगा - काली मिट्टी की चूडियॉ (आशय) यहॉ से काली मिट्टी की चूडियाँ मिली है। यहाँ पर हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा दोनों सभ्यता के अवशेष मिले। **हल से जुते खेत के साक्ष्य मिले**। यहां पर अग्निवेदिकाएँ मिली जो एक पंक्ति में बनी है। मेसोपोटामिया की बेलनाकार मोहर मिली। कालीबंगा में मकानों के फर्श अंलकृत है।

लोथल - उसके पूर्वी भाग में **बन्दरगाह स्थित** है। फारस की मोहर मिली है। चावल के साक्ष्य मिले है। घोडे की मृंण्मूर्तियां मिली है। युगल शवादहान के साक्ष्य भी मिले।

बनवाली - हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती नदी के किनारे स्थित था। यहाँ से हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन और उत्तर हड़प्पा कालीन सभ्यता के प्रमाण मिलते है। अग्निवेदिकाएँ मिली है। मिट्टी का बना हल का खिलौना । जौ, तिल, सरसो आदि फसले मिली ।

चन्हूदड़ो - यह नगर मोहनजोदडों से 130Km दक्षिण में स्थित है। खिलौने बनाने का और गुरिये बनाने का कारखाना मिला।कांसे का इक्का, बैलगाडी का साक्ष्य।

रंगपुर - गुजरात मेँ अहमदाबाद जिले के मादर नदी के किनारे है। पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता के अवशेष मिले।उत्तर हडप्पा के साक्ष्य भी मिले। चावल के साक्ष्य।

सुरकोटदा - यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। यहां से हड़प्पा सभ्यताके पतन के अवशेष मिलते है। यहाँ से घोड़े की हड्डियों के अवशेष मिले है।

कोटदीजी - यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत में **खैरपुर नामक स्थान** पर स्थित है।यहां पर हड़प्पा पूर्व सभ्यता के साक्ष्य मिले है।

सुतकांगेन्डोर-यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान नामक स्थान पर दाश्क नदी के किनारे स्थित है। यह स्थान सिंधु सभ्यता के पश्चिमी छोर का अंतिम स्थल है।

आलमगीरपुर - यह उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले में हिन्डन नंदी के किनारेस्थित है। यहां से हड़प्पा सभ्यता के पतन के संकेत मिलते है। यह स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे पूर्व में स्थित है।

धौलावीरा-गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

"सिन्धुघाटी सभ्यता की विशेषताएँ"

1. सिन्धु घाटी सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी। इस सभ्यता के लोग तांबा और टिन को मिलाकर कांसा बनाना सीख गए थे।
2. सिन्धु घाटी सभ्यता नगरीय सभ्यता थी। सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजित तरीके से बसाए गए थे।
3. सिन्धु घाटी सभ्यता मे सड़कें कच्ची होती थी जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।
4. सड़कों के दोनों ओर पक्की ईटों द्वारा नालियों का निर्माण किया जाता था। नालियों को पत्थर या लकड़ी द्वारा ढक दिया जाता था।
5. यहां के लोग सफाई और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते थे।
6. सिन्धु घाटी सभ्यता में मकान बनाने के लिए पक्की ईटो का प्रयोग किया जाता था।
7. घरों के खिड़की व दरवाजे सड़क की ओर न खुलकर पीछे गली की ओर खुलते थे।

सामाजिक स्थितिः- सिन्धु घाटी सभ्यता में समाज जाति-व्यवस्था पर आधारित नहीं था बल्कि समाज वर्ग व्यवस्था पर आधारित था। समाज चार वर्गो मे बटा था- पुरोहित वर्ग, सैनिक, व्यापारी, शिल्पकार, श्रमिक, कृषक। सिन्धु घाटी सभ्यता में स्त्रियों की मृण्मूर्तियाँ अधिक मिलने से ऐसा अनुमान लगाया जाता है, कि सिन्धु घाटी सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक था। लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनो प्रकार का भोजन करते थे। ये सूती और ऊनी दोनो प्रकार के सिलेसिलाए वस्त्र पहनते थे। रेशमी वस्त्रो का प्रयोग नहीं करते थे। स्त्री और पुरूष दोनों ही सोना, चांदी, तॉवा, हाथीदांत, मनके, सींग आदि के बने आभूषणों का उपयोग करते थे। उनके मनोरंजन के साधन शिकार करना, नृत्य, संगीत, चौपड़ खेलना, आदि। ये युद्धप्रिय कम और शांतिप्रिय अधिक थे। इनके घरेलू बर्तन मिट्टी और धातु के बने थे।

आर्थिक स्थितिः- इस सभ्यता के लोग कृषि, पशुपालन, उद्योग धन्धे और व्यापार करते थे। ये लोग लकड़ी के हल से खेत जोतकर कृषि कार्य करते थे। हल से जुते हुए खेत के साक्ष्य कालीबंगा से मिले। इस सभ्यता के लोग गेहूं, जौ, मटर, सरसों, चावल, तिल, कपास, बाजरा, तरबूज और खरबूज की खेती करते थे। इस सभ्यता के लोगो ने ही पहली बार कपास उगाना प्रारम्भ किया था।चावल के साक्ष्य लोथल और रंगपुर से मिले। सिन्धु सभ्यता में सिचाई की व्यवस्था नहीं थी। अनाज रखने के लिए हड़प्पा, मोहनजोदडों और लोथल से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिले। लोथल से पीसने के लिए पत्थर की चक्की के पाट मिले।

पशुपालन - बैल, भेड, बकरी, भैंस, गाय, सुअर, कुत्तें और गधे पालते थे। प्रारम्भ में घोड़े के साक्ष्य नंहीं मिले। लेकिन बाद में लोथल और रगपुर से घोड़े की मृंण्मूर्तियां और सुरकोटदा से घोड़े का कंकाल मिला। इस सभ्यता में कूबड़ वाला बैल विशेष प्रिय जानवर था।

उद्योग धन्धें - इस सभ्यता में कताई, बुनाई, का व्यवसाय प्रमुख था। सूती और ऊनी कपड़े बनये जाते थे। कुम्हार चाक के प्रयोग से बर्तन बनाते थे। वर्तनो को चिकना और चमकीला बनया जाता था। यहां पर पत्थर, धातु और मिट्टी की मूर्तियां बनाई जाती थी। ये लोग सभी धातु से परिचित थे लेकिन लोहा से नहीं। मृंण्मूर्तियो मे सबसे अधिक मातृदेवी की मूर्ति मिली है।

व्यापार - इस सभ्यता के लोग देश के अन्दर और विदेशों के साथ व्यापार करते थे। ये जल और स्थल दोनों मार्गो से व्यापार करते थे। इस सभ्यता के लोग मिश्र, ईरान, मेसोपोटामिया, बेबीलोन, और मध्य ऐश्याई देशों से था। ये लोग सबसे अधिक खनिज पदार्थो का व्यापार करते थे।

"विभिन्न क्षेत्रों से आयात की वस्तुएँ"

चांदी	-	ईरान, अफगानिस्तान
सोना	-	राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र में
तांबा	-	राजस्थान के खेतडी क्षेत्र में
टिंन	-	अफगनिस्तान, ईरान
सेलखड़ी	-	ब्लूचिस्तान, राजस्थान
संगमरमर	-	राजस्थान
शिलाजीत	-	हिमालय क्षेत्र से

धार्मिक स्थिति - इस सभ्यता के लोग मूर्ति पूजा करते थे। लेकिन इस सभ्यता मे कही से भी मन्दिर के साक्ष्य नहीं मिले।इस सभ्यता मे लोग मातृदेवी की पूजा करते थे।मातृदेवी की मूर्तियो एवं चित्रों मे उसे विभिन्न रूपो मे दिखाया गया है। सिन्धु सभ्यता मे पशुपतिनाथ की पूजा की जाती थी। मोहन जोदडो से पशुपतिनाथ की मोहर मिली है।ये लोग पशुओं की भी पूजा करते थे। जिनमे कूवड वाला बैल विशेष पूज्यनीय था। वृक्ष पूजा के रूप में पीपल की पूजा की जाती थी। इसके अलावा नागपूजा और जलपूजा के भी साक्ष्य मिले। इस सभ्यता में स्वास्तिक पूजा के भी साक्ष्य मिले। ये लोग भूत प्रेतो और तन्त्र मन्त्र में भी विश्वास करते थे।

राजनीतिक स्थिति - इस सभ्यता मे राजमहलों और दुर्गो के मिलने से अनुमान लगाया जाता है कि यहां कोई शासक वर्ग अवश्य था। सत्ता किसके हाथ में थी यह स्पष्ट नहीं था। **स्टुअर्ट पिगट** का मानना है शासन पुरोहित वर्ग के हाथ में था। **आर.एस.शर्मा** कहते है शासन व्यापारी वर्ग के हाथ में था। इस सभ्यता की दो राजधानियां थी हड़प्पा और मोहनजोदडों।

- **सिन्धु घाटी सभ्यता के निर्माता** - सबसे अधिक कंकाल भूमध्यसागरीय लोगों के मिले। इसलिए इन्हें सिन्धुसभ्यता का निर्माता माना जाता है। इन्हें द्रविड जाति के लोग माना जाता है।
- **सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि** - इस लिपि को अभी तक नहीं पढ़ा गया है। यह लिपि भावचित्रात्मक है। यह लिपि दांये से बांये ओर लिखी जाती थी।इस लिपि के 400 चिन्ह प्राप्त हुए है।
- **सिन्धु सभ्यता की मोहरेः-** मोहरों का निर्माण अधिकतम सेलखड़ी (टेरीकोटा) से हुआ है। मोहरों मे सबसे अधिक एकसींग वाला बैल अंकित है। मोहनजोदडों और लोथल से प्राप्त मोहरों पर नाव का चित्र मिला है। मोहनजोदडों की एक मोहर पर पशुपतिनाथ का चित्र मिला है।
- **सिन्धु सभ्यता की मूर्तियाँः-** मूर्तियां, पत्थर, धातु और मिट्टी की बनी हुई थी। मोहनजोदडों से सेलखड़ी की मूर्ति प्राप्त हुई है। मोहनजोदडों से कांसे की बनी 14 C.M. ऊंची नृत्य करती हुई स्त्री की मूर्ति मिली। मूर्तियों मे सबसे अधिक मानव और पशुओं की मृंण्मूर्तियां मिली है। मानव की अपेक्षा पशुओं की ज्यादा मिली।नारी की मृंण्मूर्तियाँ पुरूषों से ज्यादा मिली है।
- **सिन्धु सभ्यता का पतनः-** सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के लिए कोई एक निश्चित कारण नहीं बताया जा सकता । विभिन्न विद्धानों ने इसके अलग-अलग कारण बताया।
  - ➢ जॉन मार्शल और अर्नेस्ट मैके ने बाढ़ को कारण बताया।

➢ मार्टिन व्हीलर और गार्डन चाइल्ड के अनुसार, यह सभ्यता विदेशी आक्रमण (आर्यो के आक्रमण) से समाप्त हुई।

''वैदिक सभ्यता''

वैदिक सभ्यता आर्यो से सम्बधित है। आर्य संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ ''कुलीन'' है। आर्यो के निवास स्थल के बारे में विद्वानों के बीच मतभेद है। कुछ लोग उन्हें भारत का मूलनिवासी मानते है। तो कुछ उन्हें विदेशी मानते है। मैक्स मूलर और जे.जी. रीड ने मध्य एशिया को। यही मत सबसे अधिक मान्यता प्राप्त है।

बाल गंगाधर तिलक ने - उत्तरी ध्रुव को

''वैदिक साहित्य''

- 'वेद' संस्कृत भाषा के **'विद्' से बना है। इसका अर्थ है। जानना या ज्ञान।** वेदों को अपौरूषेय कहा जाता है।
- वेदों का प्रारम्भिक ज्ञान मौखिक रूप से एक दूसरे को सुनाया जाता था। इसलिए उन्हें श्रुति भी कहा गया।
- वेद संख्या में चार है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
- वेदों का संकलन व्यास द्वारा किया गया है।
- ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद को **वेदत्रयी** कहा जाता है।

I. ऋग्वेद :- सबसे पुराना वेद है। इसमें देवताओं की स्तुति से सम्बधिंत रचनाओं का संग्रह है। ऋग्वेद में 33 देवीदेवताओं का वर्णन है। गायत्री मन्त्र का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है। गायत्री मंत्र सूर्य की देवी सावित्री को समर्पित है। ''**असतो मां सदगयम**'' वाक्य ऋग्वेद से लिया ।

II. सामवेद :- सामवेद की रचना ऋग्वेद मे दिये गए मन्त्रों को गाने योग्य बनाने के उद्देश्य से की गई थी। सामवेद को भारत की प्रथम संगीत की पुस्तक माना जाता है।

III. यजुर्वेद :- यजु का अर्थ होता है- यज्ञ। इसमे यज्ञों की विधियों का वर्णन किया गया है। इसकी भाषा पद्यात्मक और गद्यात्मक दोनों है।

IV. अथर्ववेद :- इसमें भूतप्रेत, जादूटोना और अनेक प्रकार की औषधियों का वर्णन किया गया है।

ब्राह्मण ग्रन्थ :- उनकी रचना वैदिक संहिताओं के कर्मकांडो की व्याख्या करने के लिए की गई थी। उनकी रचना गद्य शैली में की गई थी।

1. ऋग्वेद - ऐतेराय, कौषितकी
2. सामवेद - पंचविश, षडविश, जैमिनी, छन्दयोग
3. यजुर्वेद- तैतरीय, शतपथ
4. अथर्ववेद - गौपथ

उपवेद :-

ऋग्वेद - आयुर्वेद
सामवेद - गन्धर्ववेद
यजुर्वेद - धर्नुर्वेद
अथर्ववेद - शिल्पवेद

उपनिषद :- उपनिषदो में प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का संग्रह है। उनमें मुख्य रूप से ब्रह्म ज्ञान पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। उसमें आत्मा परमात्मा के बारे में और विश्व की उत्पत्ति के सम्बन्ध में रहस्यवादी सिद्धांतो का विवरण दिया गया है। उपनिषदों में यज्ञों की आलोचना की गई है। उपनिषदों की कुल संख्या 108 है। भारत का राष्ट्रीय वाक्य '**सत्यमेव जयते**' मुण्डकोपनिषिद से लिया गया है। मैत्रायणी उपनिषद में त्रिमूर्ति और चार आश्रम का उल्लेख किया गया है। उपनिषदो को वेदान्त भी कहा जाता है।

पुराण :- पुराणों की कुल संखया 18 है। जिनमें सबसे पुराना पुराण मत्स्यपुराण है। इसके अलावा ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण, भागवतपुराण, अग्निपुराण, गरूडपुराण, प्रमुख है। पुराणों में राजाओं की वंशावलियाँ दी गई है। मत्स्यपुराण से सातवाहन वंश के बारे मे विशेष जानकारी दी गई।

स्मृतियाँ :- इनको धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। इनसे मनुष्य के पूरे जीवन से सम्बधित अनेक क्रियाकलापों के बारे में जानकारी मिलती है। मनुस्मृति सबसे प्राचीन है। इसके अलावा नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, पाराशर स्मृति प्रमुख है।

षट्दर्शन और प्रतिपादक

1. सांख्य दर्शन - कपिल
2. वैषेशिक - कणाद
3. न्यायदर्शन - गौतम
4. योगदर्शन - पतंजली
5. पूर्व मीमांसा - जैमिनी
6. उत्तर मीमांसा - बृहदरायण (व्यास)

महाकाव्य :- दो है -

1. रामायण
2. महाभारत (जयसंहिता)- विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

- **वैदिक काल**
  - वैदिक सभ्यता का काल 1500 से 600 BC तक है।
  - इसको दो भागों में बाँटा गया है।
    1. ऋग्वैदिक/पूर्व वैदिक काल-(1500-1000 BC)
    2. उत्तरवैदिक काल - (1000-600 BC)
- **ऋग्वैदिक काल :-** इस काल की सम्पूर्ण जानकारी हमें ऋग्वेद से मिलती है। ऋग्वेद में आर्यो का सर्वप्रथम निवास स्थल सप्तसैधव प्रदेश बताया गया। आर्यो का भौगोलिक विस्तार अफगानिस्तान, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उ.प्र.। ऋग्वेद में 25 नदियों का वर्णन किया गया। जिनमें सबसे अधिक बार सिन्धु का उल्लेख किया गया है। गंगा का एक बार, यमुना का 3 बार ऋग्वेद में किया गया है।
- सप्तसैधंव प्रदेश की सात नदियो का ऋग्वेद में उल्लेख इन नामों से किया गया है।

सिन्धु	- सिन्धु	सरस्वती	- सरस्वती
सतलज	- शतुद्रि	रावी	- परूष्णी
व्यास	- विपाशा	झेलम	- वितस्ता
चिनाव	- अस्किनी		

ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक स्थितिः- भरतजन के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। दाशराज्ञ युद्ध परूष्णी नदी के किनारे हुआ था। इस युद्ध में भरत कवीले के राजा सुदास ने 10 राजाओ के संघ को पराजित किया था। सुदास का पुरोहित वशिष्ठ और दस राजाओ के संघ का पुरोहित विश्वामित्र था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

ऋग्वैदिक काल मे समाज कवीले के रूप में संगठित था। कवीलो को जन कहा जाता था और जन के अलावा विश और ग्राम राजनीतिक संगठनो का उल्लेख मिलता है। इस काल में परिवार सबसे छोटी राजनीतिक इकाई थी। जन के प्रमुख को राजन या जनस्यगोपा कहा जाता था। इस समय तक राजा का पद दैवीय शक्ति के रूप में नहीं माना जाता था। राजा की सहायता के लिए तीन प्रमुख अधिकारी थे पुरोहित, सेनानी, ग्रामिणी।

राजा की सहायता के लिए सभा, समिति, संस्थायें थी। अर्थर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया। सभा और समिति की कार्यवाही में स्त्रियाँ भी भाग लेती थी। ''सभा'' कुछ वृद्ध एंव श्रेष्ठ व्यक्तियों की संस्था थी। जबकि 'समिति' आम जनप्रतिनिधि संस्था थी।

ग्राम के प्रमुख को ग्रामिणी कहा जाता था। परिवार के प्रमुख को कुलाप/दम्पति/गृहस्वामी कहलाता है। गाय की चोरी सबसे ज्यादा होती थी। राजा के अधिकारियों को रत्निन कहा जाता था। विश के प्रमुख को विशपति कहा जाता था।

- **सामाजिक स्थितिः-** ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक समाज था। पिता परिवार का मुखिया होता था। समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। ऋग्वैदिक काल में समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्णो में बंटा था। शूद्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरूषसूक्त में मिलता है। पुरूषसुक्त में उन चारों वर्णों की उत्पत्ति परम ब्रह्म के शरीर से बताई है। ब्राह्मण - मुख से, क्षत्रिय - बाजू, वैश्य - जंघा, शूद्र- पैर। इस काल में वर्ण व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी। ऋग्वैदिक काल में व्यवसाय पैतृक नही थे।

  इस काल में समाज मे स्त्रियों का सम्मानजनक स्थान था। वे पुरूषो की भाँति उपनयन संस्कार, शिक्षा और यज्ञ आदि का अधिकार रखती थी। इस काल में अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववारा, घोषा आदि विदुषी महिला थी। स्त्रियाँ पति के साथ यज्ञो में सम्मिलित होती थी। इस समय विवाह युवा अवस्था में होते थे। विवाह में कन्याओं को अपना मत रखने की छूट थी। इस समय अन्तर्जातीय विवाह होते थे। इस काल में एकविवाह का प्रचलन था। लेकिन राजकुल में बहुविवाह प्रचलित था। इस समय विधवा विवाह और नियोग प्रथा का प्रचलन था। बाल विवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा का प्रचलन नहीं था। इस समय विवाह विच्छेद सम्भव था और स्त्री पुनर्विवाह कर सकती थी। स्त्रियों को सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार नहीं थे। पिता की सम्पति का अधिकारी केवल पुत्र ही होता था। इस काल में दास प्रथा प्रचलित थी। शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे। ऋग्वेद में मछली और नमक का उल्लेख नही मिलता । ये विशेष अवसरों पर सोमरस का प्रयोग करते थे।ये लोग सूती, ऊनी और चमड़े के बने वस्त्रों का प्रयोग करते थे।ये तीन प्रकार के वस्त्र धारण करते थे।

  1. वास **2.** अधिवास 3. नीवि

  - ये रथदौड़, शिकार, युद्ध, नृत्य और जुआ के द्वारा मनोरंजन करते थे।

- **आर्थिक स्थिति :-** इस काल में ग्रामीण सभ्यता थी। मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। पशु ही सम्पत्ति की वस्तु समझे जाते थे। पशुओं में गाय को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। गाय के लिए युद्ध होते थे। इसलिए इसे ''गविष्टि'' कहा गया।गाय का सामान्यता वध नहीं किया जाता था। इसलिए इसे अवध्या कहा गया है। लेकिन अतिथि-सरकार में गाय का मांस खिलाया जाता था इसलिए अतिथि को गौहन्ता कहा गया। इस काल में गाय का प्रयोग मुद्रा के रूप में होता था। ये लोग लोहे से परिचित नहीं थे। ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख 24 बार हुआ। यव (जौ) इस काल की प्रमुख फसल थी। ऋग्वैदिक काल में बढ़ई (तक्षन), धातुकर्मी, स्वर्णकार, रथकार, चर्मकार, जुलाहा (वाय) और कुम्हार प्रमुख व्यवसायी थे। व्यापारी को पाणी कहा जाता था। निष्क सोने का बना हार था। जो मुद्रा के रूप में भी प्रयोग मे आता था। इनमें सामान्यता व्यापार वस्तु विनियम द्वारा होता था।

- **धार्मिक स्थिति :-** आर्य लोग प्रकृति पूजा करते थे। ऋग्वेद मे 33 देवताओं का उल्लेख है। जो लोग बहुदेववादी होते हुए भी ऐकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। ऋग्वेद का प्रमुख देवता इन्द्र था। इसे पुरन्दर भी कहा गया। यह बादल, वर्षा और युद्ध का देवता था। इस काल का दूसरा प्रमुख देवता अग्नि था। उसे देवताओं का मुख कहा गया। यह मानव व देवताओं के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता था। तीसरा प्रमुख देवता वरूण था। इसे प्राकृतिक घटनाओं का संयोजक और नैतिकता का देवता माना गया। सोम- वनस्पति देवता था। ऋग्वेद का 9वाँ मंडल सोमदेवता को समर्पित था।

  मरूत - तूफान का देवता, पूषन - पशुओं का देवता था।

  देवताओं के साथ-साथ ऊषा, अदिति, सरस्वती, सावित्री, आदि देवियों का भी उल्लेख है। ऋग्वेद में मूर्ति पूजा तथा मंदिर का उल्लेख नहीं है।

  - देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ प्रमुख कर्मकांड था।

''उत्तर वैदिक काल'' (1000-600 BC)

इस काल के बारे में जानकारी तीन वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद से तथा ब्राह्मण ग्रन्थ, अरण्यक ग्रन्थ और उपनिषद ग्रन्थों से मिलती है। उस काल में आर्यो का भौगोलिक विस्तार गंगा के पूर्व में हुआ था। आर्यो ने सप्तसैंध्व प्रदेश से आगे बढ़कर सम्पूर्ण गंगा घाटी पर अधिकार कर लिया था। द.भारत में आर्यो का फैलाव विदर्भ तक हुआ था।

राजनैतिक स्थितिः- उत्तरवैदिक काल में छोटे-2 कवीलों ने मिलकर क्षेत्रगत जनपदो का निर्माण किया। पुरू और भरत मिलकर कुरू जनपद बना। तुर्वुश और क्रिवि मिलकर पांचाल बना। उत्तरवैदिक काल में कवीले के स्थान पर क्षेत्रीयता के तत्वों में वृद्धि हुई।इस काल में राष्ट्र शब्द का प्रयोग व्यापक क्षेत्र के लिए हुआ।

इस काल में शासन राजतन्त्रात्मक था। राजा का पद वंशानुगत होता था।राजा के राज्याभिषेक के समय राजसूय यज्ञ होता थ।

इस काल में राजा बड़ी उपाधियाँ जैसे अधिराज, सम्राट, और एकराट आदि धारण करने लगा। राजा के पद की उत्पत्ति के बारे में सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण से जानकारी मिलती है। साम्राज्य के विस्तार से अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया जाता था। यह यज्ञ तीन दिन तक चलता था और इसमें घोड़ा छोड़ा जाता था।

राजा के प्रमुख कार्य सैनिक और न्याय सम्बन्धी थे। सभा और समिति का प्रभाव कम हो गया था। स्त्रियों का इनमें प्रवेश वर्जित हो गया था। अथर्ववेद से राजा के निर्वाचन की सूचना प्राप्त होती है। राजा राज्याभिषेक के समय रत्निनों के घर जाता था। राजा की सहायता के प्रमुख 12 रत्निन थे। संगृहीत- कोषाध्यक्ष था। भागदुध- करसंग्रह करने वाला अक्षवाप- जुएं का निरीक्षण करने वाला पालागल- राजकीय आदेशो और सन्देशों को पहुचाता था। राजा न्यायव्यवस्था का सर्वोच्च

अधिकारी था। गांव के छोटे-मोटे विवाद ग्रामवदिन द्वारा निपटाये जाते थे।

उत्तरवैदिक काल की सामाजिक स्थिति :- वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में बदलने लगी थी। ब्राह्मण, क्षत्रियो के अधिकार और अधिक बढ़ गये थे। इस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य तीनों को द्विज कहा जाता था। शूद्रों की स्थिति में गिरावट आयी थी। इस काल में छुआछूत का उदय नहीं हुआ था। अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न होते थे। इस काल में शूद्रों को यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकार नही था। शतपथ ब्राह्मण में क्षत्रियों को ब्राह्मण से श्रेष्ठ बताया गया।

इस काल में आर्यो ने जीवन को चार भागों में बांटा था। इन्हे आश्रम कहा गया। चारो आश्रमों के बारे में सर्वप्रथम जावली उपनिषद में मिलती है। 1. ब्रह्मचर्य, 2. गृहस्थ, 3. वानप्रस्थ, 4. संन्यासी। इन चारो में गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ माना है।

इस काल में ऋवैदिक काल की तुलना में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी थी। मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों कों जुआ और शराब के साथ तीसरी बुराई माना गया। ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्र को परिवार का संरक्षक और पुत्री को दुख का कारण बताया है। अथर्ववेद में कन्या का जन्म दुख का कारण बताया गया। इस काल में स्त्रियों का उपनयन संस्कार नहीं होता था। समाज में बहुविवाह का प्रचलन था। बाल विवाह नहीं होते थे। सतीप्रथा, पर्दाप्रथा का प्रचलन नहीं था। इस समय स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। इस समय 16 संस्कार प्रचलित थे।

आर्थिक स्थिति :- कृषि प्रमुख व्यवस्था थी। परन्तु पशुपालन भी किया जाता था। इस समय गेहूं, और चावल प्रमुख फसले थी। चावल को व्रीहि कहा जाता था। इस समय खाद का प्रयोग और नहरो से सिचाई होती थी। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारो क्रियाये जुताई, बुवाई, कटाई और मढाई का उल्लेख किया गया। गाय, बैल, भेड़, बकरी, भैस, घोड़ा आदि पशु पाले जाते थे। इस काल में गाय की पवित्रता और बढ़ गई थी। इस काल में स्वर्णकार, रथकार, जुलाहा, लुहार, कुम्हार आदि प्रमुख शिल्पी थी। शतमान, पाद, कृष्णल माप की इकाई थी। व्यापार वस्तुविनिमय द्वारा होता था।

धार्मिक स्थिति :- इस काल में यज्ञ, अनुष्ठान एवं कर्मकांडीय गतिविधियाँ बढ़ी। जबकि अरण्यक और उपनिषदो में इनकी आलोचना की गई। यज्ञों में पशुओं की बलि दी जाती थी। इस काल में प्रमुख देवता "प्रजापति" हो गये। इस काल में देवताओं की संख्या बढ़ गई थी। इस काल में पूशन-शूद्रो के देवता हो गये थे।

"जैन धर्म" व "बौद्ध धर्म :- जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उदय ब्राह्मण धर्म की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ था। जैन धर्म और बौद्ध धर्मो का प्रारम्भ क्षत्रियों द्वारा किया गया था।

"जैन धर्म"

जैन धर्म के संस्थापक ऋषभवदेव थे। जिन्हे जैन धर्म का प्रथम तीर्थंकर माना जाता है। जैन धर्म के अनुसार कुल 24 तीर्थंकर हुऐ पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर थे। पार्श्वनाथ का जन्म महावीर स्वामी से 250 वर्ष पूर्व हुआ था। पार्श्वनाथ ने चार महाव्रतो का प्रतिपादन किया। 1.सत्य 2.अहिंसा 3.अस्तेय 4.अपरिग्रह

- पार्श्वनाथ के इन चार महाव्रतों के साथ पांचवा ब्रह्मचर्य महावीर स्वामी ने जोडा था।

महावीर स्वामी :-

ये जैन धर्म के 24 वे तीर्थकर थे। इनको जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उनका जन्म 599BC या 540BC में वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ वज्जिसंघ के प्रमुख थे। इनकी माता थी। महावीर स्वामी के वचपन का नाम वर्धमान था। महावीर स्वामी का विवाह यशोदा के साथ हुआ था। महावीर स्वामी के **प्रियदर्शना** नाम की पुत्री थी। जिसका विवाह जमोली से हुआ था।

महावीर स्वामी ने 30वर्ष की अवस्था में बडे भाई नन्दिवर्धन की आज्ञा लेकर गृह त्याग किया और 12वर्ष की कठोर तपस्या के बाद 42वर्ष की अवस्था में इनको जम्भ्रिका ग्राम के पास ऋजुपालिका नदी के किनारे केवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसीलिए उन्हे "केवलिन" कहा जाता है। साल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।

महावीर को इन्द्रियों को जीत लेने के कारण 'जिन' और पराक्रम दिखाने के कारण 'महावीर', वन्धनरहित होने के कारण 'निर्ग्रन्थ' कहा गया है।

महावीर की मृत्यु 72 वर्ष की अवस्था में 527 BC या और 468 BC में राजग्रह के निकट पावापुरी में हुई थी। इनके शरीर त्यागने की घटना को निर्वाण कहा जाता है।

- जैन धर्म में अहिंसा पर सबसे ज्यादा जोर दिया।

जैन धर्म में संसार को दुखमूलक माना गया है। जैन धर्म अनीश्वरवादी है। जैन धर्म वेदो को नही मानता। जैन धर्म कर्मवादी है। इस धर्म में पुनर्जन्म को मान्यता है। इस धर्म के अनुसार आत्मा संसार की सभी वस्तुओं में है।

- जैन धर्म में कर्मकाण्डो का विरोध किया गया है।

त्रिरत्न :- 1.सम्यक ज्ञान 2.सम्यक आचरण 3.सम्यक श्रद्धा/दर्शन

- जैन धर्म में तप पर अधिक बल दिया गया है। इस धर्म के अनुसार कायाकलेश के द्वारा निर्वाण प्राप्त को उचित माना गया।

स्यादवाद/रहस्यवाद/सप्तभंगी सिद्धान्त/अनेकान्तवाद जैन धर्म से सम्बधित है। जैनधर्म महावीर की मृत्यु के बाद दो भागों में बट गया था। 1. दिगम्बर 2. श्वेताम्बर। दिगम्बर लोग नग्न अवस्था में रहते ये जबकि श्वेताम्बर श्वेत वस्त्र धारण थे। जैन धर्म का विभाजन चौथी शताब्दी BC के अन्त में चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में उस समय हुआ जब मगध में 12 वर्ष का भयंकर अकाल पड़ा। भद्रवाहु अपने शिष्यों के साथ श्रवणवेलगोला चले गऐ थे और जब अनुनायियों को श्वेत वस्त्र धारण करने के कारण उन्हे श्वेताम्बर कहा।

- **सम्मेलन :-** प्रथम सम्मेलन चौथी शताब्दी BC में पाटलीपुत्र में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में हुई थी। इस समय शासक चन्द्रगुप्त मौर्य था। इस सभा के बाद जैनधर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर में बट गया।

दूसरी जैन सभा 512 A.D में बल्लभी में देवर्धिक्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुई थी। इस सभा में जैन धर्मों के ग्रन्थों को संकलित कर लिपिवद्ध किया गया था। आरम्भ में जैन धर्म में मूर्ति पूजा का प्रचलन नही था। लेकिन बाद में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों ने महावीर एवं अन्य तीर्थकरों की पूजा प्रारम्भ कर दी थी।

- **जैन धर्म के प्रमुख मन्दिर और मूर्तियाँ :-** 1.कलिंग का हाथीगुम्फा मन्दिर 2.राजस्थान के माऊन्टआबू का दिलवाडा मन्दिर 3.कर्नाटक में श्रावणवेलगोला मे गोमतेश्वर की मूर्ति। 4.

खजुराहों में पार्श्वनाथ और आदिनाथ का मंन्दिर 5.कर्नाटक में बने जैन मठो को वसदिस कहा गया है।

- **जैनधर्म का साहित्य :-** जैनधर्म के धार्मिक ग्रन्थ अर्धमागधी भाषा में लिखे गए। जैन धर्म का संस्कृत भाषा में लिखा गया कल्पसूत्र महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। जैन धर्म के ग्रन्थों को 'आगम' कहा गया।

"बौद्ध धर्म"

बौद्ध धर्म का संस्थापक महात्मा बुद्ध थे। महात्मा बुद्ध का जन्म 563 BC या 567 BC में कपिलवस्तु के पास लुम्बनी गांव में हुआ था।

उनके पिता शुद्धोधन शाक्य वंश के क्षत्रिय थे। जो कपिलवस्तु के राजा थे। महात्मा बुद्ध की माता का महामाया का बुद्ध के जन्म के 7 दिन बाद ही देहान्त हो गया था। उनका पालन पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया था। इसलिए इनको गौतम कहा जाता है।

16 वर्ष की अवस्था में महात्मा बुद्ध का विवाह यशोधरा के साथ किया गया था।यशोधरा के अन्य नाम, गोपा, बिम्बा और भद्रकच्छा मिलते है। इनके राहुल नाम का एक पुत्र हुआ। महात्मा बुद्ध का वास्तविक नाम सिद्धार्थ था।

बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्ति के लिए रात्रि मे गृह त्याग किया। इस घटना को बौद्ध ग्रन्थों में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया। गृह त्याग के बाद वे सबसे पहले वैशाली पहुचें। उन्होने बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी के किनारे सात दिन तक समाधि में रहने के बाद आठवे दिन वैशाख पूर्णिमा को उन्हे बोधि ज्ञान प्राप्त हुआ। इसलिए इन्हें बुद्ध कहा जाता है। इन्हें 35 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्त हुआ। जिस वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ उसे वोधिवृक्ष कहा गया।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश वाराणसी के पास ऋषिपत्तन (सारनाथ) में पांच ब्राह्मण को दिया था। इसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है। इन्होने सारनाथ मे ही बौद्ध संघ की स्थापना की। आरम्भ में इन्होने संघ में स्त्रियों को प्रवेश नही दिया। लेकिन बाद अपने प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया। इनकी पहली महिला शिष्या महाप्रजापति गौतमी थी। इसके बाद मौसी की पुत्री चंदना तत्पश्चात यशोधरा उनकी शिष्या बनी। महात्मा बुद्ध ने सबसे अधिक समय तक श्रावस्ती में उपदेश देने का कार्य किया।

महात्मा वुद्ध की मृत्यु 483 BC या 487BC में कुशीनगर (U.P.) में हुई थी। इस घटना को **"महापरिनिर्वाण"** कहा जाता है। महात्मा का जन्म, ज्ञानप्राप्ति एवं मृत्यु ये सभी घटनाएं वैशाख की पूर्णिमा को हुई।

महात्मा बुद्ध ने श्रावस्ती में अंगुलीमाल डाकू का हृद्य परिवर्तन करके उसे अपना शिष्य बनाया।वैशाली की प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली भी इनकी शिष्या बन गई थी। आनंद उनका चचेरा भाई था जो इनका सबसे प्रिय शिष्य था।

सिद्धान्त :- 1.चार आर्य सत्यः-(A) संसार दुखमय है। (B) दुख का कारण तृष्णा। (C) दुख को रोका जा सकता। (D) दुख को रोकने का उपाय आष्टांगिक मार्ग हैं। आष्टांगिक मार्ग को मध्यम मार्ग भी कहा जाता है।

बौद्ध धर्म कर्मप्रधान है। यह अनीश्वरवादी है। वेदों में भी विश्वास नहीं करता है। यह आत्मा में विश्वास नहीं करता लेकिन पुनर्जन्म में विश्वास करता है। बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण इसी जीवन में सम्भव हो सकता है। बौद्ध धर्म धार्मिक कर्मकांडो, यज्ञ आदि का विरोध करता है। बौद्ध धर्म में सभी वर्णों को स्थान दिया गया है। महात्मा ने अपने उपदेश आमजन की भाषा पाली में दिये थे।

त्रिरत्नः- (i) बुद्ध (ii) संघ (iii) धम्म

बौद्ध धर्म की संगतियाँ :-

प्रथमः- ये 483 BC में राजग्रह की सप्तपर्णि गुफा में अजातशत्रु के शासन काल में महाकश्यप की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस सभा में बुद्ध के उपदेशों को सुत्तपिटक और विनयपिटक में अलग-अलग संकलित किया गया था।

द्वितीय संगतिः- यह 383 BC में वैशाली में राजा कालाशोक के शासन काल में सर्वकामी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस सभा में भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ साविर और महासंघिक दो भागों में बंट गया था।

तृतीयः- यह अशोक के शासन काल में पाटलीपुत्र में 251 BC में मोगलीपुत्रतिस्स की अध्यक्षता में हुई। इस सभा में बौद्ध धर्म के तीसरे पिटक अभिधम्मपिटक को संकलित किया गया और संघ में मतभेद को रोकने के लिये कठोर नियम बनाये गए।

चतुर्थः- यह प्रथम शताब्दी में कनिष्क के शासन काल में कश्मीर के कुण्डल वन में वसुमित्र की अध्यक्षता में हुई। इसके उपाध्यक्ष अश्वघोष थे। इस प्रकार सभा में बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में बट गया।

बौद्ध साहित्य :- बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक महत्वपूर्ण है।

(I) **सुत्तपिटक :-** इसमें गौतम वुद्ध के उपदेशों का संग्रह है।

(II) **विनय पिटक** :- इसमें बौद्ध धर्म के उपदेशों का संग्रह है।

(III) **अभिधम्म पिटकः-** यह बौद्ध धर्म का दार्शनिक ग्रन्थ है। इस पिटक का संकलन अशोक के समय तीसरी बौद्ध संगति में किया गया। जातक कथाओ में महात्मा बुद्ध के 549 पूर्व जन्मों की कहानियाँ मिलती है।

जैनधर्म और वौद्ध धर्म में समानता :-

1. दोनों ही धर्मो को क्षत्रिय राजकुमारो ने प्रारम्भ किया।
2. दोनों ही धर्मो ने यज्ञ सम्बन्धी कर्मकांडो, छुआ-छूत और जाति व्यवस्था का विरोध हुआ।
3. दोनों ही ईश्वर और वेदो में विश्वास नहीं करते।
4. दोनो ने ही उपदेश जनसाधरण की भाषा में दिये।
5. दोनों ही ने कर्मवाद और पुनर्जन्म में विश्वास किया।

असमानताः-

1. दोनों ही धर्म अहिंसा में विश्वास करते थे। लेकिन जैन धर्म अहिंसा पर बहुत अधिक बल देता था।
2. जैन धर्म में निर्वाण प्राप्त करना शरीर त्यागने के बाद ही सम्भव था। परन्तु बौद्ध धर्म में निर्वाण प्राप्ति के लिये शरीर त्यागने की आवश्यकता नहीं है।
3. जैन धर्म में कायाक्लेश को अपनाकर कठोर व्रत का पालन किया जाता था। जबकि बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग को अपनाने की बात कही गई।
4. जैन धर्म भारत के बाहर नही फैल सका। परन्तु बौद्ध धर्म विश्व के कई देशों में फैला।

- **महाजनपद :-** 600 BC में भारत में 16 महाजनपदों का उदय हुआ।इनका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तरनिकाय और जैन ग्रंथ

समीक्षा इंस्टीट्यूट

भगवतीसूत्र में किया गया है। इन 16 महाजनपदों में वज्जि और मल्ल में गणंतत्रात्मक व्यवस्था थी तथा अन्य सभी महाजनपदों में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी।

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

(1) हर्यक वंश :- इस वंश का सबसे प्रमुख शासक विम्बसार था। यह महात्मा बुद्ध का समकालीन था। इसका उपनाम श्रेणिक था। इसने गिरिव्रज को अपनी राजधानी बनाया। बिम्वसार 15 साल की उम्र में पर गद्दी पर बैठा था। बिम्वसार ने वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपने राज्य का विस्तार किया और उसे सुदृढ़ता प्रदान की। बिम्वसार ने कौशल देश के राजा प्रसेनजित की बहन कौशलदेवी के साथ विवाह किया।

अजातशत्रु :- अजातशत्रु अपने पिता विम्वसार की हत्या कर गद्दी पर बैठा था। अजातशत्रु को कुणिक भी कहा जाता था। अजातशत्रु के शासनकाल के 8वें वर्ष में महात्मा बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ था। अजातशत्रु ने बुद्ध के कुछ अवशेषों को लेकर राजगृह में एक स्तूप का निर्माण करवाया था।

- अजातशत्रु के शासनकाल में राजगृह में 483BC में प्रथम बौद्ध संगीति हुयी थी।

अंतिम समय में अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदयन द्वारा गद्दी कर अधिकार कर लिया गया था।

उदयन :- अजातशत्रु के बाद उदयन मगध की गद्दी पर बैठा। उदयन ने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र की स्थापना की और उसे राजधानी बनाया।

(2) शिशुनाग वंश :- इस वंश का संस्थापक शिशुनाग था। जनता द्वारा नागदशक को हटाकर शिशुनाग को मगध का राजा बनाया गया। शिशुनाग ने अवन्ति और वत्स को जीतकर इसे मगध राज्य में मिला लिया था।

कालाशोक या काकवर्ण :- इसने वैशाली के स्थान पर पाटलिपुत्र को अपनी पुनः राजधानी बनाया। इसके समय वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। इस वंश का अंतिम शासक नंदीवर्द्धन था।

(3) नंद वंश :- नंदवंश का संस्थापक महापदमनन्द था। यह शूद्र जाति का था। पुराणों में इसे सर्वक्षत्रान्तक कहा गया है। महापद्मनन्द ने एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर एकछत्र व एकराट् की उपाधि ग्रहण की थी।

नंद वंश का अंतिम शासक धनानंद था। इसके शासनकाल में सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था। धनानन्द की हत्या करके चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में मौर्यवंश की स्थापना की।

विदेशी आक्रमण :- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हकमानी वंश के राजाओं ने किया था। जिस समय ईरानी आक्रमण भारत पर हुए उस समय वहाँ के राज्यों में परस्पर वैमनस्य और संघर्ष चल रहा था।

यूनानियों का आक्रमण :- ईरानी आक्रमण के बाद भारत पर यूनानी आक्रमण हुये। सिकन्दर मकदूनिया (मैसीडोनिया) का शासक था। सिकन्दर ने 326 BC में भारत पर आक्रमण किया।

पोरस और सिकन्दर के बीच 326 BC में झेलम नदी के किनारे वितस्ता या हाइडोस्पीज का युद्ध लड़ा गया। जिसमें सिकन्दर विजयी हुआ। लेकिन सिकन्दर पोरस की बहादुरी से प्रभावित हुआ और सिकन्दर ने उसका राज्य वापस करके उससे दोस्ती कर ली। सिकन्दर के सैनिकों ने व्यास नदी के पश्चिमी तट से आगे बढ़ने से मना कर दिया था इसलिये सिकन्दर को 325 BC में भारत से लौटना पड़ा। सिकन्दर अपने विजित भारतीय प्रदेशों को सेनापति फिलिप को सौंपकर वापस लौट गया।

- 323 BC में बेबीलोन में सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

सिकन्दर भारत में 19 माह रहा। सिकन्दर के आक्रमण का भारत के कई क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ा। भारत और यूनान के बीच स्थल व जल मार्ग से सम्पर्क स्थापित हो गया था। सिकन्दर के आक्रमण की तिथि को प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रमाणिक तिथि माना जाता है। इसी के आधार पर भारतीय इतिहास का तिथिक्रम निश्चित किया जाता है। सिकन्दर ने कई नगरों की स्थापना की थी। भारतियों ने यूनानियों से सिक्कों के निर्माण की कला सीखी।

- भारतियों ने यूनानियों से ज्योतिष का ज्ञान सीखा।

मौर्य काल

चन्द्रगुप्त मौर्य -

मगध में मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा की गई थी। चाणक्य ने तक्षशिला में चन्द्रगुप्त मौर्य को सभी शिक्षाएं दी। चन्द्रगुप्त मौर्य 322 BC में 25 वर्ष की आयु में पाटलीपुत्र के सिंहासन पर बैठा। इन्होने विशाल साम्राज्य प्राप्त करने के लिये कई विजय की ।

305 BC में यूनानी शासक सेल्यूकस ने भारत पर आक्रमण किया। जिससे सेल्यूकस और चन्द्रगुप्त के बीच भीषण युद्ध हुआ। जिसमें सेल्यूकस की हार हुई। उस युद्ध के बाद दोनों के बीच सन्धि हुई। सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपने राज्य के चार क्षेत्र कन्धार, हिरात, ब्लूचिस्तान, काबुल और सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ किया।

- सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में अपने एक राजदूत मैंगस्थनीज को भेजा।
- मेगस्थनीज ने ''इंडिका'' पुस्तक लिखी।
- गिरनार अभिलेख से ज्ञात होता है कि सौराष्ट्र क्षेत्र में पुष्यगुप्त चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यपाल था। इसने यहाँ पर सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य का मंत्री था। इसका वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था। चाणक्य ने संस्कृत भाषा में राजनीति और प्रशासन से सम्बधित पुस्तक ''अर्थशास्त्र'' लिखी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध साम्राज्य का विस्तार करके एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया और प्रथम चक्रवर्ती सम्राट होने का गौरव प्राप्त किया।

चन्द्रगुप्त ने जीवन के अन्तिम क्षणों में जैन धर्म स्वीकार किया और अपने पुत्र बिन्दुसार को सिंहासन पर बैठाकर जैन आचार्य भद्रवाहु के साथ मैसूर के पास श्रवणवेलगोला चला गया था और यही पर चन्द्रगिरि पहाडी पर कायाक्लेश द्वारा शरीर को त्याग दिया।

- चन्द्रगुप्त के समय सौराष्ट्र के गवर्नर पुष्यगुप्त ने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य भारत का प्रथम चक्रवर्ती सम्राट था।

बिन्दुसार :-

बिन्दुसार 298 BC में मगध का शासक बना। यूनानी लेखको ने इसका नाम अमित्रोचेडस बताया। इसे अमित्रघात भी कहा गया है।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

बिन्दुसार के शासन काल में विदशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण थे। स्ट्रेवो के अनुसार सीरिया के राजा ऐन्टीयोकस ने अपना राजदूत बिन्दुसार के दरबार में भेजा था। पिलनी के अनुसार मिश्र के राजा फिलाडेल्फस टॉल्मी II ने बिन्दुसार के दरवार में डायनोसिमस को अपना राजदूत बनाकर भेजा था। बिन्दुसार ने सीरिया के राजा एन्टीयोकस को पत्र लिखकर सूखे अंजीर, शराब और दार्शनिक भेजने को कहा था। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था। आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलीपुत्र गोशाल द्वारा की गई थी।

अशोक :-

273 BC में विन्दुसार की मृत्यु के बाद मगध की गद्दी पर वैठक के लिये उत्तराधिकार का युद्ध हुआ था। जिसमें 4 वर्ष के सत्ता संघर्ष में अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या करके गद्दी पर बैठ गया। अशोक का विधिवत् राज्याभिषेक 269 BC में हुआ था।

- अभिलेखों में अशोक को देवनामप्रिय और प्रियदस्सी कहा गया है जबकि मास्की और गुजर्रा अभिलेख में इसका नाम अशोक मिलता है।
- पुराणों में उसे अशोक वर्धन कहा गया है।

अशोक की चार रानियाँ थी। (i) महादेवी (ii) असंघमित्रा (iii) कारूवकी (iv) तिस्सरक्षा

महादेवी विदिशा की सेठ की पुत्री थी। इसके साथ अशोक का विवाह उस समय हुआ जब उज्जैनी का गर्वनर था। अशोक के पुत्र महेन्द्रऔर पुत्री संघमित्रा महादेवी की संतान थी। अशोक के अभिलेखो में केवल एक मात्र पत्नी कारूवकी का उल्लेख मिलता है। जो तीवर की मां थी। कुणाल असंधमित्रा का पुत्र था।

बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक ने कश्मीर जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था।

- कल्हण के अनसार अशोक ने कश्मीर में श्रीनगर की झेलम नदी के किनारे स्थापना की।

अशोक के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना कलिंग युद्ध है। यह युद्ध अशोक के राज्याभिषेक के आठवे वर्ष 261 BC में हुआ था। इस युद्ध में भयंकर नरसंहार हुआ था। 1 लाख लोग मारे गये थे। 1.5 लाख लोगों को बन्दी बनाया गया। अशोक इतना द्रवित हुआ कि उसने भविष्य में कभी युद्ध न करने का संकल्प लिया। यह अशोक के शासन काल का यह पहला और अन्तिम युद्ध था। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने दिग्विजय के स्थान पर धम्म विजय की नीति को अपनाया। अशोक ने नेपाल में ललितपत्तन नाम से नगर बसाया और अशोक की पुत्री चारूमति ने देवपत्तन नगर बनाया।

- अशोक ने शैव धर्म को छोडकर वौद्ध धर्म ग्रहण किया था। अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा निग्रोथ या उपगुप्त ने दी थी।

अशोक के शासन काल में पाटलीपुत्र में मोगली पुत्रतिस्स की अध्यक्षता में तीसरी बौद्ध सभा हुई थी। इस बौद्ध संगति की समाप्ति पर अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये देश के विभिन्न भागों में बौद्ध भिक्षु धर्म प्रचारक भेजे थे। उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये श्रीलंका भेजा था।

अशोक ने अपनी प्रजा के नैतिक विकास के लिए जिन आचारो की सहिंता के पालन की बात कही उसे अभिलेखो में धम्म कहा गया। अशोक ने धम्म की परिभाषा दीर्घनिकाय के राहुलोवादसुत से ली गई है। अशोक के दूसरे और सातवें स्तम्भ लेख में उन गुणों का वर्णन किया गया है जो धम्म का निर्माण करते है

- अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया था। जिनमें साँची का स्तूप प्रमुख है। यह म.प्र. के रायसेन जिले में है।

अशोक के अभिलेख :-

अशोक के अभिलेख ब्रह्मी, खरोष्टी और आर्मेइक लिपियों में लिखे गए है। ब्रह्मी लिपि देवनगरी लिपि का रूप है और खरोष्टी लिपि दांयी तरह से लिखी जाती है। अशोक के अभिलेख सबसे अधिक पाली भाषा और ब्रह्मी लिपि में लिखे गए।

अशोक के अभिलेख तीन प्रकार के थे। (1) शिलालेख (संख्या-14) (2) स्तम्भ लेख (3) गुहालेख

- 13वे शिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन किया गया है।

14 वे शिलालेख में अशोक ने जनता को धार्मिक जीवन जीने का उपदेश दिया। 5 वे शिलालेख में धर्म महामात्रो की नियुक्ति के वारे में जानकारी दी। 7वे और आठवे शिलालेख में अशोक की तीर्थ यात्राओं का उल्लेख है। अशोक के लघुशिला लेख अधिकाशंता साम्राज्य के दक्षिण और मध्य में स्थित है।

स्तम्भ लेखो की संख्या -7 है। जो अलग-2 स्थानों से मिले है। अशोक के कोशाम्बी में स्थित प्रयाग स्तम्भ लेख को अकबर ने इलहाबाद के किले में स्थापित करवाया।

- फिरोजशाह तुगलक द्वारा टोपरा और मेरठ के स्तम्भ लेखों को दिल्ली में लगवाया।
- मौर्य वंश का अन्तिम शासक वृहद्रथ था।

मौर्य प्रशासनः-

भारत में पहली बार राजनीतिक एकता देखने को मिलती है। मौर्य काल में पहली बार चक्रवर्ती सम्राट का आदर्श चरितार्थ हुआ। मौर्य प्रशासन तन्त्र के बारे में जानकारी मैगस्थनीज की पुस्तक इंड़िका, कौटिल्य, के अर्थशास्त्र और अशोक के अभिलेखो से मिलती है।

मौर्य काल में राजा को सहायता के लिए एक मंत्री परिषद होती थी। जो राजा को प्रशासन से सम्बंधित मामलों में सलाह देती थी। लेकिन राजा मंत्रीपरिषद के किसी भी निर्णय को मानने के लिये बाध्य नहीं था।

अर्थशास्त्र में सबसे उच्च वर्ग के अधिकारियों को तीर्थ कहा गया है। .सन्निधाता- राजकोष का प्रमुख

- अशोक के समय सौराष्ट्र के राज्यपाल तुषास्प ने सुदर्शन झील की मरम्मत करवायी।

प्रान्तों को विषय में बांटा गया था। इसका अधिकारी विषयपति होता था। ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम के मुखिया को ग्रामिक कहा जाता था।

ब्राह्मण राज्य :- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद मगध में ब्राह्मण साम्राज्य का उदय हुआ। इसके अन्तर्गत चार प्रमुख वंश थे।
(1) शुंग वंश (2) कण्व वंश (3) सातवाहन वंश (4) वाकाटक वंश

शुंग वंश :-

अन्तिम मौर्य साम्राट वृहद्रथ की हत्या करके उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शुंगवंश की स्थापना की। पुष्यमित्र शुंग को प्रथम ब्राह्मण राज्य स्थापित करने और ब्राह्मण धर्म पुनरूत्थान का श्रेय दिया जाता है।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

पुष्यमित्र शुंग ने अपने शासन काल में दो अश्वमेध यज्ञ किये। पंताजली इन यज्ञों में पुरोहित थे।

बौद्ध ग्रन्थों में पुष्यमित्र शुंग को वौद्ध भिक्षुओं का हत्यारा और मठो, विहारों का नष्ट करने वाला बताया गया है।

पुष्यमित्र शुंग बौद्ध धर्म का प्रवल विरोधी था। शुंग काल में भरहुत और सांची के स्तूपों में बने तोरणद्वार लकडी के स्थान पर पत्थर के बनवाये गये।

- पंताजली ने इसी के शासन काल में पणिनी की पुस्तक अष्टाध्यायी पर **महाभाष्य** लिखा।
- इसी काल में मनुस्मृति लिखी गई। महाभारत का शांति पर्व और अश्वमेधपर्व का विस्तार इसी काल में हुआ।
- अग्निमित्र के पौत्र वसुमित्र ने यवन सेनापति मिंनाडर को हराया था।
- शुंग शासक भागभद्र के दरबार में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस रहता था। हेलियोडोरस ने भागवत धर्म से प्रभावित होकर वेसनगर में वसुदेव के सम्मान में एक गरूडध्वज स्तम्भ की स्थापना की।
- शुंग वंश का अन्तिम शासक देवभूति या देवभूमि था।

कण्व वंश :-

शुंग वंश के अन्तिम शासक देवभूति की हत्या करके उसके अमात्य वासुदेव ने की थी और वासुदेव ने कण्व वंश की स्थापना की।

- अंतिम शासक सुशर्मा थे।

सातवाहन वंश :-

- सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने सुशर्मा की हत्या करके की। इसने गोदावरी नदी के किनारे प्रतिष्ठान (पैठान) को अपनी राजधानी बनाया।
- इस वंश के शासक शतकर्णी ने दो अश्वमेध यज्ञ और एक राजसूय यज्ञ करवाया था।
- शतकर्णी के अल्प आयु पुत्र वेदश्री और शक्तिश्री ने कुछ समय तक अपनी मां नायनिका देवी के संरक्षण में शासन किया।
- सातवाहन वंश के राजा हाल ने ''गाथासप्तशती'' नाम से ग्रन्थ लिखा। इसके शासन काल में अमरावती स्तूप का विकास किया गया।
- गौतमी पुत्र शतकर्णी सातवाहन वंश का सबसे महान शासक था। इसने सातवाहन वंश को पुर्नजीवित किया। इसलिए इसे सातवाहन वंश का द्वितीय संस्थापक माना जाता है।
- गोतमीपुत्र शतकर्णी की विजयों का उल्लेख उसकी माँ बलश्री की नासिक प्रशस्ति में मिलते है। इसने शक वंश के राजा नहपान के सिक्को पर अपना नाम अंकित करवाया।
- गौतमीपुत्र शतकर्णी के बाद उसका पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलमावी शासक बना। शक शासक रूद्रदामन की पुत्री से पुलमांवी का विवाह हुआ था।
- सातवाहन काल का समाज मातृसत्तात्मक था।

वाकाटक वंशः-

- वाकटाक वंश का संस्थापक विध्यंशक्ति था।

इस वंश के शासक प्रवरसेन को 4 अश्वमेध यज्ञ करवाने का श्रेय प्राप्त है।

गुप्त वंश के राजा चन्द्रगुप्त -II अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के राजा रूद्रसेन-II से किया था।

वाकाटक वंश के शासक प्रवरसेन ने सेतुवन्ध ग्रन्थ की रचना की।

मौर्यात्तरकाल में भारत पर विदेशी आक्रमणः- मौर्योत्तर काल में भारत के उत्तर पश्चिम से विदेशियों का आक्रमण हुआ था।

- विदेशी आक्रमणकारियो में इन्डोग्रीक (हिन्दयूनानी), पार्थियन (पहलव), शक, तथा कुषाण प्रमुख हैं।

विदेशी राजवंशों के राज्य

INDO-GREECE :-

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाले प्रथम आक्रमणकारी इन्डोग्रीक थे। इन्हे भारतीय ग्रन्थों में यवन कहा गया है। ये लोग वैक्ट्रिया से आये थे।
- भारत पर पहला सफल इन्डोग्रीको का आक्रमण डेमट्रियस के नेतृत्व में हुआ था।
- यूनानियों की एक शाखा यूक्रेटाइडस के नेतृत्व में वेक्ट्रिया पर उस समय अधिकार करने में सफल रहा जिस समय डेमेट्रियस भारत पर आक्रमण करने में व्यस्त था।
- डेमेट्रियस वंश का सबसे योग्य और महान शासक मिनान्डर था मिनान्डर ने भारत में यूनानी सत्ता को स्थायित्व प्रदान किया। मिनान्डर ने साकल को अपनी राजधानी बनाया। वौद्धग्रन्थ मिलिन्दपन्हो में मिनान्डर को मिलिन्द कहा गया ।
- मिलिन्दपन्हो में बौद्ध विद्वान नागसेन और **मिनान्डर** के बीच वौद्ध धर्म पर हुये बाद विवाद का वर्णन किया गया है। इस वाद विवाद के बाद ही मिनान्डर ने वौद्ध धर्म स्वीकार किया था।
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करवाने का श्रेय हिन्दयूनानियो को दिया जाता है। साहित्य, कला और ज्योतिष के क्षेत्र में भारत यूनानियों का ऋणी है।

पार्थियन (पहलव) :-

भारत पर शासन करने वालो प्रथम पार्थियन शासक माउस था।

पहलव वंश का शक्तिशाली शासक गोन्डोफर्निश था। इसके शासन काल में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक, **सेन्ट थामस** भारत आया। सेन्टथामस की मद्रास के पास हत्या कर दी गई थी।

- कुछ समय बाद कुषाणों ने पार्थियनों के भारतीय साम्राज्य को तहस-नहस कर दिया था।

शक या सीथियन :-

- शक मुख्यता मध्य ऐशिया की एक घुमक्कड़ जाति थी। भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रान्त में वसने वाले शको ने अपने आप को क्षत्रप कहा।
- रूद्रदामन इस वंश का सबसे प्रतापी और योग्य शासक था। इसने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की।
- रूद्रदामन के बारे में विस्तृत जानकारी रूद्रदामन द्वारा संस्कृत भाषा में लिखवाये गए प्रथम अभिलेख जूनागढ में स्थित गिरनार अभिलेख से मिलती है। इस अभिलेख से रूद्रदामन द्वारा सातवाहन वंश के राजा सतकर्णी को दो वार पराजित करने का विवरण मिलता है।

समीक्षा इन्स्टीट्यूट

- रूद्रदामन प्रथम ने चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा वनवाई गई सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार अपने व्यक्तिगत धन से करवाई थी। इसके शासन काल में संस्कृत साहित्य का विकास हुआ।

कुषाण वंशः-

- कनिष्क कुषाण वंश का सबसे योग्य एवं महान शासक था।कनिष्क 78 AD में गद्दी पर बैठा और इस समय शक सम्बत जारी किया।
- कनिष्क ने पुरूशपुर (पेशावर) को अपनी राजधानी बनाया और मथुरा को दूसरी राजधानी बनाया।
- कनिष्क ने चीन के साथ दो युद्ध किये थे। जिनमें एक में पराजय और एक में जीत हुई थी।
- कनिष्क के समय कश्मीर के कुण्डलवन में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। अध्यक्षः- वसुमित्र, उपाध्यक्ष अश्वघोष था। इस संगति में बौद्ध धर्म दो शाखाओं हीनयान और महायान में बट गया था।
- कनिष्क महायान शाखा का अनुयायी था।

  कनिष्क के दरबार में नागार्जुन, अश्वघोष, पार्श्व और वसुमित्र जैसे वौद्ध विद्वान रहते थे। चरक उसके दरवार का चिकित्सक था। चरक नें चरक संहिता पुस्तक लिखी।

  अश्वघोष ने संस्कृत भाषा में बुद्धचरित, सौन्दरानंद, सूत्रालंकार और सारिपुत्र प्रकरण नामक ग्रन्थों की रचना की। बुद्धचरित को बौद्ध धर्म का महाकाव्य कहा जाता है और इसकी तुलना वाल्मीक की रामायण से की जाती है। अश्वघोष की तुलना मिल्टन, गेटे और वाल्टेयर से की जाती है
- कुषाणों के समय में सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण और तांवे के सिक्के जारी किये गये।

मौर्योत्तरकाल में राजव्यवस्था और प्रशासन वंश :-

मौर्यत्तरकाल में राजतन्त्र में दैवीय तत्वों को समायोजित किया गया। रोम शासको से प्रभावित होकर कुषाण वंश के राजाओं ने मन्दिर बनवाकर उसमें मरे हुऐ राजाओं की मूर्ति को स्थापित करने की परम्परा प्रारम्भ की।

सातवाहन वंश के राजाओं ने ब्राह्मण और बौद्ध भिक्षुओं को करमुक्त भूमि देना प्रारम्भ किया। जिससे जागीरदारी प्रथा का उदय हुआ।

मौर्योत्तर काल मेंव्यापार और वाणिज्यः-

मौर्योत्तर काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इस काल में वाणिज्य और व्यापार का अत्यधिक विकास था। इस काल मे पश्चिमी देशों के साथ व्यापार में प्रगति हुई। भारत के रोम के साथ व्यापार में काफी बढ़ोत्तरी हुई।

मध्य ऐशिया से गुजरने वाला व्यापारिक मार्ग चीन और रोमन सामाज्य को जोडता था। उसे रेशम मार्ग या सिल्क मार्ग के नाम से जाना जाता था। रोम और चीन के बीच व्यापार में कुषाणों की भूमिका विचौलियों के समान थी।

प्लिनी ने भारत रोम व्यापार में रोम से भारत आ रहे सोने के सिक्को पर दुख व्यक्त किया है।रोमन व्यापार का सर्वाधिक लाभ दक्षिण भारत को मिला। प्लिनी ने भारत को रत्नो की एक मात्र जननी कहा है।

प्रथम शताब्दी BC में किसी अज्ञात यूनानी नाविक द्वारा PariPlus of the erethran sea पुस्तक लिखी जिसमें भारत से रोम को निर्यात की जाने वाली वस्तुओ मे मोती, हाथी दांत, मलमल, हीरे, केसर, आदि का उल्लेख किया है। भारतीय व्यापारी चीन से रेशम खरीदकर उसे रोम साम्राज्य को निर्यात करते थे।

इस समय आयात-निर्यात मुख्यता बेरीगाजा (भड़ौच) और वारक्केरिकम बन्दरगाहो से होता था। इसके अलावा अरिकमेडू, ताम्रलिप्ती, कावेरीपत्तन प्रमुख बन्दरगाह थे। अरिकमेडू में खुदाई से एक रोमन बस्ती के अवशेष मिले है। जो व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध थी।

इस समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग सूत उद्योग था। इस काल में विभिन्न शिल्पियों ने श्रेणी की स्थापना की।

मौर्योत्तर काल में कला :-

- इस काल में स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला तीनो का विकास हुआ। इस समय मूर्तिकला की मथुरा और गान्धार शैली का विकास हुआ। बुद्ध की मूर्तियों का सर्वाधिक निर्माण गान्धार कला के अर्न्तगत हुआ।
- गान्धार शैली के अन्तर्गत निर्मित बुद्ध की मूर्तियों का मुख यूनानी देवता अपोलो से मिलता है। इस शैली (गान्धार) में मानव शरीर का वास्तविक चित्रण हुआ है। मथुरा कला शैली में मूर्तियों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया है।
- मौर्यकालीन चित्रकला के अर्न्तगत अजन्ता की गुफाएं काफी प्रसिद्ध है। अजन्ता की गुफा संख्या 9,10 इसी काल की है।
- सातबाहन राजाओं के द्वारा कार्ले के गुहा में एक विशाल चैत्य गृह और तीन विहार बनवाये गये। कार्ले का चैत्य गृह सबसे बडा है।
- सातवाहनों के समय अमरावती स्तूप का निर्माण करवाया गया।

"गुप्त साम्राज्य"

मौर्यो के बाद भारत में गुप्तों ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। गुप्तों का साम्राज्य मौर्यों से भी विशाल था। गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी शताब्दी के अन्त में हुआ। गुप्त साम्राज्य की प्रारम्भिक सत्ता का केन्द्र प्रयाग था। गुप्त शासकों ने अपना प्रारम्भिक साम्राज्य मध्यगंगा मैदान, प्रयाग, साकेत और मगध तक स्थापित किया था।

गुप्तकालीन अभिलेखो के आधार पर श्रीगुप्त को गुप्त वंश का संस्थापक माना गया है। श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि श्रीगुप्त किसी शासक के अधीन शासन करता था। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गद्दी पर बैठा। इसने भी महाराज की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त प्रथम-(319-35 A.D) :—

यह गुप्त वंश का प्रथम स्वतन्त्र शासक था। चन्द्रगुप्त प्रथम 319-20 में गद्दी पर वैठने के बाद गुप्त सम्वत प्रारम्भ किया। यह गुप्त वंश का प्रथम शासक था जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त-I ने वैशाली के प्रसिद्ध लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी के साथ विवाह किया था। जिससे गुप्त वंश की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो गई। चन्द्रगुप्त-I ने अपने जीवन काल में ही समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

समद्रगुप्त (335 से 375 A.D) :-

चन्द्रगुप्त-I के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त गद्दी पर बैठा।

समुद्रगुप्त के मंत्री एवं दरबारी कवि हरिषेण ने इलहाबाद में स्थित अशोक के स्तम्भ लेख पर प्रयाग प्रशस्ति के नाम से अभिलेख लिखा। जिसमें समुद्रगुप्त की विजयों एवं उसके शासन काल से जुडी हुई

समीक्षा इंस्टीट्यूट

महत्वपूर्ण जानकारियां मिलती है। प्रयाग प्रशस्ति संस्कृत भाषा में चम्पू शैली में लिखी गई।

समुद्रगुप्त ने अपने जीवन काल में अनेक युद्ध किये। इसने उत्तरभारत के नौ राजाओं को पराजित करके उनके राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया था। जबकि उसने दक्षिण भारत के 12 राज्यों को पराजित करके उन्हें अपना करद बनाकर उनके राज्यों को बापस कर दिया था। समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय को धर्म विजय कहा जाता है।

समुद्रगुप्त ने विन्ध्य के आटविक (जंगली) राज्यों को पराजित किया। समुद्रगुप्त ने पूर्वी हिमालय और कुछ सीमावर्ती राज्यों जैसे नेपाल, असम, और वंगाल को पराजित कर दिया था। उसने उत्तर पश्चिम के शक और मुरन्डो को पराजित किया।उसने पंजाब के कुछ पूर्वी गणराज्यों को भी अपनी शक्ति का अहसास करा दिया था।

समुद्रगुप्त की इन्ही विजयों के कारण इतिहासकार डा. स्मिथ ने उसे ''भारत का नेपोलियन'' कहा है।

समुद्रगुप्त के सिक्को पर ''अश्वमेध पराक्रम'' खुदा है। जिससे उसके अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करबाने का प्रमाण मिलता है। कुछ चित्रों पर समुद्रगुप्त को वीणावादन करते हुये दिखाया गया है। समुद्रगुप्त ने अपने सिक्को पर लिच्छवि दोहित्र अंकित करवाकर गर्व का अनुभव किया था।

समुद्रगुप्त के स्वर्ण मुद्राओं में गरूड मुद्रायें सर्वाधिक लोकप्रिय थी।

- समुद्रगुप्त ने अपने सिक्को पर व्याघ्र पराक्रम और पराक्रमांक जैसी उपधियाँ अंकित करवाई।

श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से बौधगया में एक बौद्धमठ बनवाने की अनुमति मांगी थी। जिसे उसने स्वीकार किया था।

रामगुप्त :-

विशाखदत्त के ग्रन्थ देवीचन्द्रगुप्तम में कहा गया है कि समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र रामगुप्त गददी पर बैठा लेकिन यह एक दुर्बल शासक था। उसके ऊपर शक वंश के राजा रूद्रसिंह-III ने आक्रमण किया था। जिससे रामगुप्त ने भयभीत होकर अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी का विवाह शक राजा के साथ में करने की शर्त स्वीकार कर ली थी। जिससे इसके भाई चन्द्रगुप्त-II ने उसे बन्दी बनाकर उसकी पत्नी ध्रुवस्वामिनी के साथ विवाह करने के बाद शक शासक रूद्रसिंह-III को पराजित कर दिया था। शक राजा को पराजित करने की स्मृति में चांदी के सिक्के जारी किये और इन सिक्को पर उसने ' **शकारि** ' की उपाधि अंकित करवाई।

चन्द्रगुप्त-II :-

उसकी अन्य उपधियाँ देवराज, देवगुप्त, और विक्रमादित्य थी। चन्द्रगुप्त-II ने कई राजवंशों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये थे। उसने नागवंश की राजकुमारी कुवेरनागा से अपना विवाह किया था। चन्द्रगुप्त-II ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक वंश के राजा रूद्रसेन-II के साथ किया।

रूद्रसेन-II की मृत्यु के बाद वाकाटक वंश पर गुप्तों का शासन हो गया।

चन्द्रगुप्त-II ने पाटलीपुत्र के साथ उज्जैनी को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। चन्द्रगुप्त II ने उत्तरपश्चिम गणराज्यों को समाप्त करके 'गणारि' की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त-II के समय प्रथम चीनी यात्री फाह्यान भारत आया। जो 399 से 414 तक भारत में रहा। फाह्यान ने अपनी पुस्तक "फो-क्यो-की'' में भारत का वर्णन किया। फाह्यान की भारत यात्रा का उद्देश्य बौद्धधर्म के प्रमाणिक ग्रंथों की खोज करना तथा बौद्ध तीर्थ स्थलों को देखना था।

चन्द्रगुप्त-II के शासन काल में साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

चन्द्रगुप्त-II के दरबार में सस्कृत भाषा का महाकवि और नाटककार **कालिदास** रहता था। इसे भारत का शेक्सपीयर कहा जाता है। इसने संस्कृत भाषा में सात पुस्तकें लिखी। (1) मेघदूतम् (2) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (प्रसिद्ध नाटक) (3) ऋतुसंहारम् (4) रघुवंशम् (5) मालविकाग्निमित्रम् (6) कुमारसंभवम् (7) विक्रमोवर्शीयम्

अमरसिंह संस्कृत भाषा के व्याकरण विद्वान चन्द्रगुप्त-II के दरवार में थे। इन्होंने ''अमरकोश'' लिखा। उसके दरबार में एक गणितज्ञ, खगोलविद और ज्योतिषाचार्य **आर्यभट्ट** थे। आर्यभट्टीयम् नाम से पुस्तक लिखी।

आर्यभट्ट के सम्मान में भारत ने अपना पहला उपग्रह 1975 में इन्ही के नाम से छोड़ा था। आर्यभट्ट ने सूर्यशतक के नाम से पुस्तक लिखी।

बारहमिहिर :- चन्द्रगुप्त- II के दरबार में खगोलशास्त्री, नक्षत्र वैज्ञानिक, वनस्पति विज्ञान, और भौतिक भूगोल विषयों के ज्ञाता था। इन्होंने पंचसिद्धांतिका, बृहतसंहिता और लघुसंहिता के नाम से पुस्तकें लिखी।

ब्रह्मगुप्त :- इसने ब्रह्मसिद्धान्त के नाम से पुस्तक लिखी।

- चन्द्रगुप्त- II के दरबार का प्रमुख चिकित्सक एवं **आयुर्वेदाचार्य** धनवन्तरि था।
- चन्द्रगुप्त- II के दरबार में सुश्रुत नाम का चिकित्सक था। जिसने सुश्रुतसंहिता पुस्तक लिखी।
- चन्द्रगुप्त- II ने दिल्ली के पास मेहरौली में लौहस्तम्भ स्थापित करवाया।

कुमार गुप्त- I :-

- चन्द्रगुप्त-II के बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त गद्दी पर बैठा।
- कुमार गुप्त-I के बारे में जानकारी विलषण अभिलेख से मिलती है।
- इसके द्वारा बडी संख्या में मुद्राये जारी की गई थी। कुमारगुप्त की बयाना से लगभग 323 मुद्रायें मिली है। जिसमें चांदी की मयूर शैली की मुद्राये विशेष महत्वपूर्ण हैं।
- कुमारगुप्त-I ने नालन्दा विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया था।
- कुमारगुप्त-I ने एक अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया था।
- स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त-I के शासन के अन्तिम समय में हूण जातियों के आक्रमण हुये।
- कुमार गुप्त-I के समय चीन से अच्छे सम्बन्ध थे।

स्कन्दगुप्त :-

- स्कन्दगुप्त कुमारगुप्त-I का पुत्र था। यह गुप्त वंश का अन्तिम महान शासक था। स्कन्दगुप्त के गदी पर बैठते ही उसे हूणो के आक्रमणो का सामना करना पड़ा।

  स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख और जूनागढ अभिलेख में हूणों पर स्कन्दगुप्त की विजयो का उल्लेख है। जूनागढ अभिलेख से ज्ञात होता है कि स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था। उस झील का पुर्ननिर्माण स्कन्दगुप्त ने सौराष्ट्र के राज्यपाल पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित को सौंपा था जिसने झील के किनारे पर एक विष्णुमंदिर का भी निर्माण करवाया था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- कहौम स्तम्भ लेख में स्कन्दगुप्त को शक्रोपम कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त के द्वारा जारी किये गये सोने सिक्के कम संख्या में थे और उनमें सोने की मात्रा भी कम थी।
- गुप्त वंश का अंन्तिम शासक विष्णुगुप्त था।

आर्थिक स्थिति :-

- गुप्तकाल की अर्थव्यवस्था काफी अच्छी थी।इस समय राजा के द्वारा भूमि दान में दी जाती थी। गुप्तकाल में सोना, चाँदी, तांबा, एवं लोहा धातुओं का प्रचलन था।
- गुप्तकाल में वेतन सामान्यता भूमि अनुदान के रूप में दिया जाता था।
- गुप्तकाल में वस्त्र निर्माण, शिक्षा कार्य काफी प्रगति पर था।
- मन्दसोर अभिलेख में रेशम बुनकरो की श्रेणी द्वारा विशाल सूर्यमंदिर की मरम्मत करवाने का उल्लेख किया गया है।
- व्यापारिक समिति को 'निगम' कहा जाता था और उसके मुखिया को 'श्रेष्ठी' कहा जाता था। गुप्तकाल में व्यापार और वाणिज्य में गिरावट आयी।

  गुप्तशासकों ने सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी किये। सोने के सिक्को को 'दीनार' कहा जाता था।
- चीनी यात्री फाहयान के अनुसार विनिमय का माध्यम कौड़ी था।
- गुप्तकाल मे राजकीय आय का प्रमुख स्त्रोत भूमि कर था।
- भू-राजस्व नगद और अनाज दोनो रूपों में लिया जाता था।

सामाजिक स्थिति :-

- गुप्तकालीन समाज वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय और ब्राह्मण में विभाजित था। इस काल में कई नयी जातियों का उदय हुआ ।
- फाहयान ने समाज में अस्पृश्य जातियों के होने का उल्लेख किया है।
- गुप्तकाल में कायस्थ जाति का उल्लेख मिलता है। जो शासकीय लेखा जोखा का हिसाब रखता था। कायस्थो का सर्वप्रथम उल्लेख याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है।

  गुप्तकाल में बालविवाह का प्रचलन था। उच्चवर्ग में पर्दाप्रथा प्रचलित थी। गुप्तकाल में सतीप्रथा का प्रचलन था। सतीप्रथा का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण 510 के भानुगुप्त के ऐरण अभिलेख से मिलता है। जिसमें भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की मृत्युपर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख मिलता है।
- गुप्तकाल में वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्री को गणिका कहा जाता था।
- गुप्तकाल में दासप्रथा का प्रचलन था। दासो की स्थिति अच्छी नहीं थी।

धार्मिक स्थिति :-

- गुप्तवंश के राजाओं का व्यक्तिगत धर्म वैष्णव धर्म था। गुप्तशासकों ने परमभागवत की उपाधि धारण की।
- गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म का अत्याधिक विकास हुआ।गुप्तकाल में वैष्णव धर्म शैवधर्म के मध्य समन्वय स्थापित हुआ।
- गुप्तकाल को ब्राह्मणधर्म का पुनरोत्थान का काल माना जाता है। इस काल में वैष्णव धर्म को राजाश्रय प्राप्त था
- इस काल में पहली बार मन्दिरों का निर्माण किया गया। इस काल में वैष्णव धर्म से सम्बंधित प्रमुख मंदिर देवगढ का दशावतार मन्दिर है।
- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का दक्षिणपूर्व एशिया कम्वोडिया, मलाया, इण्डोनेशिया में प्रचार प्रसार हुआ।

  अर्द्धनारीश्वर एवं शिव और पार्वती की संयुक्त मूर्तियाँ इसी काल में बनी। त्रिमूर्ति पूजा के अन्तर्गत उस समय ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा आरम्भ हुई। गुप्तकाल में सूर्य उपासक लोगों का एक सम्प्रदाय था। बौद्ध धर्म को गुप्तकाल में संरक्षण न मिलने पर भी इस धर्म का विकास हुआ।
- गुप्तकाल के प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक आर्यदेव, असंघ, वसुवन्धु, मैंत्रयनाथ और दिगनाग प्रमुख थे।

  गुप्तकाल में जैन धर्म का विकास हुआ। गुप्तशासन काल मे ही मथुरा और बल्लभी मे जैन सभाएँ आयोजित की गई।
- कदम्ब और गांगेयराजाओं ने इस धर्म को संरक्षण प्रदान किया जो गुप्तों के समाकालीन थे।

कला और साहित्य :-

- मन्दिर निर्माण कला की शुरूआत गुप्तकाल से ही हुई। इस समय शिखरयुक्त मन्दिरों का निर्माण किया गया।
- इस समय सबसे ज्यादा मन्दिर विष्णु भगवान के बनवाये गए।

प्रमुख मन्दिर :-

1. तिगवाँ का विष्णु मन्दिर (जबलपुर (म.प्र.)
2. भूमरा का शिव मन्दिर (म.प्र. नागोद)
3. नचनाकुठार का पार्वती (म.प्र. नागोद)
4. देवगढ का दशावतार मन्दिर (u.p झांसी)
5. भीतरगांव का लक्ष्मण मंदिर (ईटो) (u.p. कानपुर)

देवगढ का दशावतार मन्दिर उत्तरभारत का पहला ऐसा मन्दिर हैं जिसमें शिखर का निर्माण किया गया। इसमें विष्णुभगवान को **नागशैया** पर लेटा दिखाया गया है। सारनाथ के धामेख स्तूप का निर्माण गुप्तकाल में किया गया है।

गुप्तकालीन बुद्ध की मूर्तियों में सारनाथ की वैठे हुये बुद्ध की मूर्ति, मथुरा में खड़े हुये बुद्ध की मूर्ति और सुल्तानगंज से तांवे की बनी बुद्ध की मूर्ति मिली है। इस काल की बौद्ध प्रतिमाओं में बुद्ध के घुँघराले बाल अलंकृत प्रभामंडल दिखाया गया है।

गुप्तकाल में चित्रकला उच्च शिखर पर पहुंच गई थी। महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित अजन्ताओं की गुफाओं में गुफा संख्या 16,17 गुप्तकालीन है। गुफा सं. 16 में मरणासन्न राजकुमारी का, चित्र 17 में माँ और शिशु का चित्र दिखाया गया है। अजन्ता की गुफाए बौद्ध धर्म की महायान शाखा से सम्बंधित है।

बाघ की गुफाएँ भी गुप्तकाल की है। बाघ की गुफाओं में आम जनजीवन को चित्रित किया गाया है।

साहित्य :-

- गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण काल माना जाता है। इस समय संस्कृत भाषा का महान कवि कालिदास था।
- विष्णुशर्मा ने **पंचतन्त्र** पुस्तक लिखी। भट्टी ने रावणवध या भट्टीकाव्य पुस्तक लिखी। शुद्रक ने **मृच्छकटिकम** पुस्तक लिखी।
- विशाखदत्त ने **मुद्राराक्षस** और **देवीचन्द्रगुप्तम** नाटक लिखे।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- भास ने **स्वप्नवासवदत्तम** और **चारूदत्तम** नाटक लिखे। कामन्दक ने नीतिसार पुस्तक लिखी। वात्स्यायन ने **कामसूत्र** पुस्तक लिखी।
- पुराणों के वर्तमान रूप की रचना इसी काल में हुई।
- रामायण और महाभारत को अंतिमरूप से इसी समय संकलित किया गया।
- गुप्तकाल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, और व्रहस्पति स्मृतियां लिखी गई।
- इसी समय आर्यभट्ट ने आर्यभट्टियम् ग्रन्थ लिखा। ब्राग्भट्ट ने आयुर्वेद पर आष्टांगद्दय पुस्तक लिखी।
- गुप्तकाल में साहित्य, विज्ञान, कला का अत्याधिक विकास होने के कारण उसे **प्राचीन काल का स्वर्ण काल कहा** जाता है।

  गुप्तकाल में दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों (इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, मलेशिया) में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ।

"पुष्यभूति वंश"

- पुष्यभूति वंश की स्थापना पुष्यभूति ने थानेश्वर में की थी। इस वंश का चौथा शासक प्रभाकर वर्धन था। प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद ज्येष्ठपुत्र राज्यवर्धन गद्दीपर बैठा। जिसकी हत्या बंगाल के शासक शशांक ने कर दी थी।
- 606 AD में 16 वर्ष की अवस्था में **हर्षवर्धन** थानेश्वर की गद्दी पर वैठा। हर्षवर्धन ने कन्नौज को जीतकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- हर्षवर्धन को शिलादित्य के नाम से भी जाना जाता है। हर्षवर्धन ने कामरूप (असम) के शासक भास्कर वर्मन की सहायता से बंगाल के शासक शशांक को जीतने का प्रयास किया। हर्षवर्धन शंशाक की मृत्यु के बाद बंगाल को अपने राज्य में शामिल कर सका। हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन को पराजित करके उसके साथ सन्धि की और अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया।
- हर्षवर्धन ने लगभग समस्त उत्तर भारत को जीतकर अपने राज्य में शामिल करके उत्तरापथपति की उपाधि धारण की। इसे भारत का अन्तिम चक्रवर्ती सम्राट माना जाता है।
- एहोल प्रशस्ति के अनुसार हर्षवर्धन वातापी के चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन-II से नर्मदा नदी के किनारे युद्ध में पराजित हुआ था।
- हर्षवर्धन के समय चीनी चात्री हवेनसांग ने भारत की यात्रा की थी और उसने अपनी यात्रा का विवरण **सी-यू-की** पुस्तक में दिया। हर्षवर्धन ने हवेनसांग की अध्यक्षता में कन्नौज में एक धर्म सभा का आयोजन किया जिसमें बौद्ध भिक्षुओं के अलावा व्राह्मणों को भी आमत्रित किया। हवेनसांग भारत में नालंदा वि.वि. में पढने एवं बौद्ध ग्रन्थों का संग्रह करने के उद्देश्य से आया था।
- हर्षवर्धन बौद्ध धर्म की महायान शाखा का सर्मथक होने के साथ-2 विष्णु और शिव की स्तुति करता था।
- हर्षवर्धन द्वारा प्रयाग में प्रति 5 वर्ष बाद एक धार्मिक मेले का आयोजन किया जाता था। जिसे **मोक्षपरिषद** कहा गया।
- हर्षवर्धन उच्च कोटि का कवि और नाटककार था। इसने रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागनन्द नाटकों की रचना की।
- वाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी कवि था। जिसने हर्षचरित और कादम्बरी के नाम से पुस्तकें लिखी।
- हर्षवर्धन की मृत्यू 647 AD में हुई।

"राजपूत काल"

- हर्षवर्धन के बाद 650 से 1200 के बीच भारत में कई राजवंशो का उदय हुआ। राजपूतों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विद्वानों के बीच मतभेद था।
- **कर्नल जेम्स टोड** ने राजपूतों का इतिहास लिखा है और उन्होंने राजपूतों की उत्पत्ति विदेशी जातियों से बताई है।
- भारतीय इतिहासकारों जैसे गोरीशंकर ओझा आदि नें राजपूतों की उत्पत्ति प्राचीन क्षत्रियों से बताई।
- चन्द्रवरदाई की पुस्तक **पृथ्वीराजरासो** में राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बताई है। इस सिद्धान्त के अनुसार गुरू वशिष्ठ के द्वारा राजस्थान के माउन्टआबू पर्वत पर एक यज्ञ का आयोजन किया गया था और इस यज्ञ के अग्निकुंड से निम्न क्षत्रिय पैदा हुये (1) प्रतिहार (2) परमार (3) चालुक्य (सोलंकी) (4) चौहान

बंगाल का पाल वंश :-

- बंगाल में पाल वंश की स्थापना गोपाल द्वारा की गई। राजधानी-मुगेंर। गोपाल को जनता द्वारा शासक बनाया गया था। गोपाल के बाद धर्मपाल शासक हुआ। जिसने **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** की स्थापना की।
- धर्मपाल राष्ट्रकूट वंश के राजा ध्रुव-II से पराजित हुआ था। परन्तु ध्रुव के वापस लौटने पर धर्मपाल ने कन्नौज पर पुनः अधिकार कर लिया था। प्रतिहार वंश के राजा नागभट्ट-II ने मुंगेर के पास धर्मपाल को पराजित किया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय को धर्मपाल ने उसके खर्च के लिए 200 गांव का अनुदान दिया था।
- धर्मपाल के बाद उसका पुत्र देवपाल गद्दी पर बैठा। इसने गुर्जर प्रतिहार वंश के राजा मिहिरभोज को पराजित किया। अरब यात्री सुलेमान ने इसे पाल वंश का महान शासक वताया।
- पाल वंश के शासक देवपाल से शेलेन्द्र वंश के राजा ने नालन्दा में एक वौद्ध मठ की स्थापना की अनुमति मांगी थी। और देवपाल ने इस मठ की सहायता के लिये पांच गांव का अनुदान दिया था।

बंगाल का सेन वंश :-

- सेन वंश की स्थापना सामन्त सेन द्वारा की गई। राजधनी-राढ।
- सामन्तसेन के बाद विजयसेन गद्दीपर वैठा। इसके बाद वल्लाल सेन और लक्ष्मण सेन गद्दी पर बैठे। लक्ष्मण सेन इस वंश का अंतिम शक्तिशाली राजा था। इसने गहड़वाल वंश के राजा जयचन्द को पराजित किया था। 1202 में इख्तियारूद्दीन मुहम्मद बिन बाख्तियार खिलजी ने लक्ष्मण सेन की राजधानी लखनोती पर आक्रमण किया था।
- लक्ष्मण सेन इसे छोडकर भाग गया था। यह बंगाल का अंतिम हिन्दू शासक था।

- लक्ष्मण सेन के दरबार में गीतगोविन्द के लेखक जयदेव थे।

गुर्जर-प्रतिहार वंश :-

- इस वंश की स्थापना हरिश्चंद्र ने की थी। इसके बाद नागभट्ट-I गद्दीपर बैठा। इसे प्रतिहार वंश का प्रथम स्वतन्त्र शासक माना जाता है।
- वत्सराज ने त्रिपक्षी युद्ध की शुरूआत की थी। इसने पाल वंश के राजा धर्मपाल को पराजित किया था।
- नागभट्ट-II ने धर्मपाल को पराजित किया और राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द-II से पराजित हुआ। इसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।
- मिहिरभोज इस वंश का सर्वधिक प्रतापी और महान शासक था। मिहिरभोज ने आदिवराह की उपाधि धारण की।
- प्रतिहार वंश के राजा महेन्द्रपाल-I के दरवार में संस्कृत भाषा के विद्वान राजशेखर रहते थे। इन्होंने कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा लिखी।
- प्रतिहार वंश के शासक महीपाल के समय बगदाद निवासी अलमसूदीयात्री भारत आया।
- प्रतिहार वंश का अन्तिम शासक राजपाल के समय महमूद गजनवी ने 1018 में कन्नौज पर आक्रमण किया था।

बुन्देलखंड का चन्देल वंश :-

- इस वंश की स्थापना नन्नुक ने की थी। चन्देल पहले गुर्जरप्रतिहारों के सामन्त थे।
- इस वंश के शासक यशोवर्धन ने खजुराहो में एक विशाल विष्णु मन्दिर का निर्माण करवाया था। जिसे **चर्तुभुज मन्दिर** के नाम से जाना जाता है।
- इसके बाद धंग और गंड प्रमुख शासक हुये।
- चन्देल शासक विद्याधर के समय 1022 में महमूद गजनवी ने चन्देल राज्य पर आक्रमण किया।
- इस वंश का अंतिम महान शासक परमर्दीदेव/परमाल थे। 1203 में कुतुबुद्दीन ऐवक ने इसे पराजित करके कालिन्जर पर अधिकार कर लिया था।
- चन्देल वंश के राजाओं ने 950 से 1050 के बीच खजुराहो में कई मन्दिरों का निर्माण करवाया था।

मालवा का परमार वंश :-

- परमार वंश का संस्थापक कृष्णराज उपेन्द्र था। प्रथम स्वतन्त्र शासक सीयक था।
- परमार वंश के राजाओं की प्रारम्भिक राजधानी उज्जैन थी। लेकिन राजा भोज ने अपनी राजधानी धार में बनाई थी।
- सबसे योग्य एवं प्रतापी राजा भोज था। इसने भोजपुर नगर की स्थापना की और यहां पर भोजताल का निर्माण करवाया। राजा भोज ने धार में एक भोजशाला के नाम से **"सरस्वती मन्दिर"** का निर्माण करवाया था।
- राजा भोज स्वंय एक विद्वान था। जिसने कई ग्रन्थों की रचना की। समरांगण सूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण आदि प्रमुख है।
- राजा भोज ने धार को अपनी राजधानी बनाया था।

"गुजरात का चालुक्य वंश" (सोलंकी) :-

इस वंश की स्थापना मूलराज-I ने की थी। इसी वंश के राजा भीम-I के समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करके उसे लूटा था।

इस वंश के राजा जयसिंह ने सिद्धराज की उपाधि धारण की। यह इस वंश का सबसे योग्य और प्रतापी राजा था। जयसिंह के दरवार में हेमचन्द्र जैन आचार्य रहता था। हेमचन्द्र ने **परिशिष्टपर्व** पुस्तक लिखी।

मूलराज-II ने 1178 में **माऊन्ट आवू पर्वत के पास मुहम्मद गोरी** को पराजित किया था।

"कल्चुरी वंश"

इस वंश की स्थापना कोकल्ल-1 ने की थी। त्रिपुरी इस वंश के राजाओं की राजधानी थी।

"गहडवाल वंश"

इस वंश की स्थापना चन्द्रदेव ने की थी। इनकी राजधानी कन्नौज थी। इसके बाद गोविन्द चन्द गद्दीपर बैठा। गोविन्द चन्द्र के दरवारी कवि लक्ष्मीधर ने कल्पद्रुम पुस्तक लिखी।

इस वंश का अन्तिम शक्तिशाली राजा जयचन्द्र था। 1194 में यह मुहम्मद गोरी से युद्ध में पराजित हुआ था। (चन्दावर के युद्ध में)

जयचन्द्र के दरवार में श्रीहर्ष कवि रहता था। जिसने नैषधचरित्र के नाम से पुस्तक लिखी।

"चौहान वंश"

- 9वीं शताब्दी में वासुदेव ने चौहान वंश की स्थापना की। इस वंश के राजा अजयराज ने अजमेर नगर की स्थापना की।
- इस वंश के राजा अर्णोराज ने अजमेर के निकट महमूद गजनवी की सेना से युद्ध किया था।
- इस वंश का राजा विग्रहराज-बीसलदेव महान कवि था। जिसने 'हरिकेलि' नाटक की रचना की।
- इस वंश का सबसे महान राजा पृथ्वीराज-III था। जो 1178 में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इसने चन्देल वंश के शासक परमर्दीदेव और गहडवाल वंश के शासक जयचन्द्र को हराया था।
- पृथ्वीराज-III को रायपिथौरा के नाम से जाना जाता। 1191 में तराईन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी को हराया। लेकिन 1192 के तराइन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गौरी से पराजित हुआ था।
- चन्द्रबरदाई पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि था जिसने पृथ्वीराजरासो पुस्तक लिखी।

"कश्मीर के राजवंश"

'1.'कार्कोट वंश"

- इस वंश की स्थापना दुर्लभवर्धन ने की थी। इसी वंश के शासक ललितादित्य मुक्तापीड ने चीन में दूत भेजा था।
- मार्तण्ड सूर्य मन्दिर का निर्माण भी ललितादित्य मुक्तापीड के शासन काल में हुआ।

2."उत्पल वंश"

- इस वंश की स्थापना अवन्ति वर्मन ने की। इस वंश के शासक क्षेमेन्द्र गुप्त का विवाह लोहार वंश की राजकुमारी दिद्दा के साथ

समीक्षा इंस्टीट्यूट

हुआ था। जिसने क्षेमेन्द्र की मृत्यु के बाद 50वर्षों तक कश्मीर पर शासन किया।

- इस वंश का संस्थापक संग्रामराज था।
- इसी वंश का राजा हर्ष कवि और कई भाषाओं का ज्ञाता था। राजतरंगणी का लेखक कल्हण इसी का दरवारी कवि था। राजतरंगणी भारत की प्रथम पूर्णता ऐतिहासिक पुस्तक है जिसमें कश्मीर का इतिहास मिलता है। इस पुस्तक की रचना कल्हण ने लोहार वंश के अन्तिम शासक जय सिंह के समय की।

त्रिपक्षीय संघर्ष :-

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पाटलीपुत्र के स्थान पर कन्नौज शक्ति का केन्द्र बन गया था। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर अधिकार करने के लिये बंगाल के पाल, मालवा के गुर्जरप्रतिहार और दक्षिण के राष्ट्रकूटो के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।

''दक्षिण भारत के राजवंश''

''राष्ट्रकूट वंश''

- इस वंश का संस्थापक दन्तिदुर्ग था। इस वंश के राजा कृष्ण-I ने ऐलोरा में कैलाश मन्दिर का निर्माण करवाया। इस वंश का सबसे योग्य एवं शक्तिशाली राजा गोविन्द-III था। जिसने प्रतिहार वंश के शासक नागभट्ट-II को पराजित किया था।
- इस वंश के शासक अमोघवर्ष-I ने कन्नड भाषा की प्रसिद्ध पुस्तक **''कविराजमार्ग''** लिखी। अमोघवर्ष के दरबार में आदिपुराण के रचनाकार जिनसेन और गणितसार संग्रह के रचनाकार महावीराचार्य थे।
- कृष्ण-III राष्ट्रकूट वंश का अन्तिम महान शासक था। इसने कन्नड भाषा के विद्वान शान्तिपुराण के रचनाकार सेम को संरक्षण दिया।
- राष्ट्रकूट वंश के राजाओं की **राजधानी मान्यखेत** थी।
- राष्ट्रकूटो की राजभाषा कन्नड़ थी।

''पल्लव वंश''

- पल्लव वंश का संस्थापक ''सिंहविष्णु'' था। संस्कृत भाषा का कवि भारवि सिंहविष्णु का दरबारी कवि था। इसके शासन काल में मामलपुरम के आदिवराह गुफा मंदिर का निर्माण हुआ। भारवि ने किरातार्जुनीयम पुस्तक लिखी।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम ने **''मत्तविलास प्रहसन''** नामक नाटक की रचना की। इसी के समय पल्लव चालुक्य संघर्ष प्रांरम्भ हुआ। महेन्द्रवर्मन-I चालुक्य वंश के शासक पुलिकेशन-II से हारा था।
- महेन्द्रवर्मन-I के पुत्र नरसिंहवर्मन-I ने चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन-II को पराजित करके 'वातापीकोंड' की उपाधि धारण की।उसने महावलीपुरम में पांच रथ मंदिरों का निर्माण कराया।
- पल्लवी वंश के शासक नरसिंह वर्मन-II ने काँची में कैलाश मन्दिर का निर्माण करवाया। संस्कृत भाषा का विद्वान कवि दंडी नरसिंह वर्मन-II के समकालीन था। दंडी ने **काव्यादर्श** पुस्तक लिखी।
- पल्लव वंश के राजाओं की राजधानी कांचीपुरम थी।
- पल्लव वंश के राजाओं के समय दक्षिण भारत में संस्कृत भाषा और ब्राह्मण संस्कृति का काफी प्रचार प्रसार हुआ।

''चालुक्य वंश''

चालुक्य वंश की तीन शाखाऐं थी। (1) वातापी या वादामी के चालुक्य (2) वैंगी के चालुक्य (3) कल्याणी के चालुक्य

I. 'वातापी या बादामी चालुक्य''

जयसिंह चालुक्य वंश का प्रथम शासक था।

इस वंश के शासक पुलिकेशन-II ने कन्नौज के शासक हर्ष वर्धन और पल्लव वंश के राजा महेन्द्र वर्मन-I को युद्ध में हराया।

II. कल्याणी के चालुक्य

इस वंश की स्थापना तैलप-II ने की थी।

सबसे महान शासक विक्रमादित्य-VI था। इसके दरबार में विक्रमान्कदेव चरित का लेखक **विल्हण** रहता था।

इसके शासन काल में हिन्दू विधि की पुस्तक मिताक्षरा की रचना विज्ञानेश्वर ने की।

III. वेंगी के चालुक्य

इस वंश की स्थापना पुलिकेशन-II के भाई विष्णुवर्धन ने की थी।

परांतक-I ने पांडय नरेश राजसिंह-II को पराजित कर मदुरैकोंड की उपाधि धारण की।

परांतक-I ने श्रीलंका पर भी आक्रमण किया।

अशोक के दूसरे और तीसरे अभिलेखों में चोल साम्राज्य का उल्लेख मिलता है।

''चोल वंश''

- चोलवंश का अदिकालीन **शासक करिकाल** था। जिसने कावेरी नदी के किनारे कावेरीपत्तन नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- 9वीं शताब्दी में चोल वंश का संस्थापक विजयालय था। जिसने पल्लवों से सत्ता प्राप्त की।
- विजयालय ने तंजौर को अपनी राजधानी बनाया और नरकेसरी की उपाधि धारण की।
- आदित्य-I ने 'कोहराम' की उपाधि धारण की।
- इस वंश के राजा राजाराज-I ने श्रीलंका पर आक्रमण करके उसके उत्तरी भाग पर अधिकार किया। इसने तंजोर में **राजराजेश्वर या वृहदेश्वर मंदिर** का निर्माण करवाया।
- राजराज-I ने मालदीव को भी पराजित किया।
- **राजेन्द्र प्रथम** ने पूरी श्रीलंका को जीतकर वहाँके शासक महेन्द्र पंचम को बन्दी बनाया।
- राजेन्द्र प्रथम ने पाल वंश के शासक महीपाल को पराजित करके गंगईकोण्ड चोल की उपाधि धारण की और गंगईकोंड चोलपुरम नगर बसाया।
- तक्कोलम के युद्ध में राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण-III ने परांतक-I को पराजित किया।
- राजाधिराज-I चालुक्य नरेश सोमेश्वर के साथ कोप्पम के युद्ध में शहीद हुआ और उसके छोटे भाई राजेन्द्र-II का राज्याभिषेक युद्ध भूमि में ही किया गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- चोल वंश के राजा कुलोतुंग-II के दरबार में तमिल ''रामायण'' का लेखक **कम्बन** रहता था।
- चोलो के पास एक विशाल नौसेना थी। चोलो के प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता स्थानीय स्वायतता थी। यहाँ पर ग्राम स्तर पर विकास और प्रशासन के कार्य किये जाते थे।
- चोल शासन काल में शैव और वैष्णव दोनों धर्मो का प्रचार हुआ। इस समय शैव सन्तों को नयनार और वैष्णव सन्तों को अलवार कहा जाता था।
- **चोल शासनकाल में शैव और वैष्णव दोनों धर्मों का प्रचार** हुआ। अधिकांश चोल शासक शैव मतानुयायी थे।

अष्टाध्यायी	-	पाणिनी
अर्थशास्त्र	-	कौटिल्य
इंडिका	-	मेगस्थनीज
महाभाष्य	-	पतांजली
मिलिन्दपन्हो	-	नागसेन
गाथासप्तशती	-	राजाहाल
बुद्धचरित	-	अश्वघोष
मुद्राराक्षस	-	विशाखदत्त
उत्तर रामचरित	-	भवभूति
मालतीमाधव	-	"
हर्षचरित/कादम्बरी	-	वाणभट्ट
पृथ्वीराज विजय	-	जयानक
मृच्छकटिकम	-	शूद्रक
पद्मगुप्त	-	नवसहसांकचरित
हेमचन्द्र	-	कुमारपालचरित
क्षेमेन्द्र	-	वृहत्कथामंजरी

समीक्षा इंस्टीट्यूट

मध्यकाल का इतिहास

इस्लाम धर्म :-

- संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद सहाब
- इनका जन्म 570 में मक्का (सऊदी अरब)
- ज्ञान प्राप्ति 610 में मक्का के पास हीरा गुफा में
- 24 सितम्बर 622 को मक्का से मदीना की यात्रा की ।
- उसी समय से हिजरी संवत् की शुरूआत हुई।
- मृत्यू-632 में मदीना में ।

अरबों का आक्रमण :-

- भारत में मध्यकाल में सबसे पहले अरबों ने आक्रमण किया।
- भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम था।
- मुहम्मद बिन कासिम ने 711-12 में सिन्ध पर आक्रमण किया।
- मुहम्मद बिन कासिम ने वहां के शासक ''दाहिर'' को युद्ध में हराया।
- अरबों के भारत पर आक्रमण से भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ।
- मुहम्मद बिन कासिम प्रथम शासक था जिसने भारत में जजियाकर लगाया।
- इस आक्रमण के बाद अरबों के सिन्ध के साथ आर्थिक सम्बन्ध स्थापित हुये।

तुर्कों का आक्रमण :-

- अरबों के बाद भारत पर तुर्कों ने आक्रमण किया। तुर्कों के आक्रमण में महत्वपूर्ण आक्रमण महमूद गजनवी का था। यह गजनी का शासक था।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम तुर्क शासक था।
- महमूद गजनवी ने भारत पर लगभग 17 बार आक्रमण किया।
- महमूद गजनवी ने भारतीय आक्रमणों के समय ''जिहाद'' का नारा दिया।
- महमूद गजनवी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1000 A.D में भारत की उत्तरी पश्चिम सीमा पर किया।
- उसके प्रारम्भिक आक्रमणों का मुकावला हिन्दूशाही वंश के राजा जयपाल ने किया था। जयपाल के उससे बार-2 पराजित होने के कारण उसने आत्मदाह किया।
- महमूद गजनवी का भारत पर सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण 1025 AD में सोमनाथ के मन्दिर पर किया गया आक्रमण था। इस समय सौराष्ट्र का शासक भीम-I था। जो महमूद गजनबी के आक्रमण से भयभीत होकर भाग गया था।
- 1030 में गजनी में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई।
- महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य धन प्राप्त करना था।
- महमूद गजनवी के भारत आक्रमण के समय उसके साथ प्रसिद्ध इतिहासकार, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, अरबी, फारसी और संस्कृत भाषा का विद्वान अलबरूनी भारत आया। जिसने अपनी पुस्तक ''किताब-उल-हिन्द'' या तहकीक-ए-हिन्द में भारत का वर्णन किया है।
- उसके दरबारी कवि फिरदौसी ने ''शाहनामा'' पुस्तक लिखी।

मुहम्मद गोरी :-

- मुहम्मद गोरी ने गजनी और हिरात के बीच गोर साम्राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद गोरी शंसवनी वंश का था।
- मुहम्मद गौरी ने भारत में तुर्क राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद गौरी का प्रथम आक्रमण 1175 में मुल्तान पर हुआ था।
- 1178 में मुहम्मद गौरी सौराष्ट्र के चालुक्य वंश के शासक मूलराज-II की मां नायका देवी से माउंट आबू के पास पराजित हुआ।
- मुहम्मद गौरी की भारत में पहली पराजय थी।
- 1191 में तराईन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान से पराजित हुआ। यह भारत में दूसरी पराजय थी। लेकिन 1192 में मुहम्मद गौरी ने तराईन के II युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके बन्दी बनाकर गजनी ले गया था। वहां उसने उनकी हत्या कर दी थी।
- 1194 में मुहम्मद गोरी ने कन्नौज के शासक जयचन्द्र को चन्द्रावर के युद्ध में पराजित करके उसकी हत्या कर दी थी।
- मुहम्मद गोरी ने अपने भारत में जीते हुये प्रदेशों की जिम्मेदारी अपने गुलाम कुतबुद्दीन ऐवक को सौपी थी।
- कुतबुद्दीन ऐवक ने 1202-03 में बुन्देलखंड के शासक परमर्दीदेव (परमाल) को पराजित करके उसके राज्य को अपने राज्य में मिलाया था।
- 1206 में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद कुतबुद्दीन ऐवक ने गुलाम वंश की स्थापना की।
- मुहम्मद गौरी ने अपने भारत के साम्राज्य की राजधानी दिल्ली बनायी थी।

दिल्ली सल्तनत :-

- कुतबुद्दीन ऐवक ने 1206 में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।
- दिल्ली सल्तनत पर गुलामवंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश और लोदी वंश के शासको ने क्रमशः शासन किया।

गुलाम वंश

- गुलाम वंश को इस नाम से इसलिए पुकारा जाता है क्योकि इस वंश के शासक अपने शासकों के गुलाम थे।

कुतबुद्दीन ऐबक :- (1206-1210)

- कुतबुद्दीन ऐवक मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद शासक बना।
- 1206 में लाहोर में कुतबुद्दीन ऐवक का राज्याभिषेक हुआ।
- कुतवुद्दीन ऐवक ने गद्दी पर वैठने के बाद सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की उपाधि धारण की।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐवक ने गजनी के शासक ''ताजुद्दीन एल्दोज की पुत्री के साथ अपना विवाह किया।
- कुतबुद्दीन ऐवक ने साम्राज्य विस्तार के स्थान पर इसको संगठित करने का प्रयास किया।
- कुतबुद्दीन ऐवक को उसकी उदारता और दानशील स्वभाव के कारण ' लाखबख्श ' कहा जाता था। उसकी दानशीलता के कारण उसे हातिम-II भी कहा जाता था।
- कुतबुद्दीन ऐवक के दरबार में हसन निजामी को संरक्षण प्राप्त था। हसन निजामी ने ताजुल मासिर नाम से पुस्तक लिखी।
- कुतवुद्दीन ऐवक ने दिल्ली में कुब्बात-उल-इस्लाम और अजमेर में अढाई दिन का झोपडा के नाम से मस्जिदों का निर्माण करवाया।
- कुतबुद्दीन ऐवक ने ''शेख ख्वाजा कुतवुद्दीन वख्तियार काकी'' की स्मृति में दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण करवाया। लेकिन इसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया ।
- 1210 में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय इसकी मृत्यु हो गई। कुतबुद्दीन ऐबक का मकबरा लाहौर में है।

इल्तुतमिश :- (1211-1236)

- यह कुतबुद्दीन ऐवक का गुलाम एवं दामाद था। जिसे मुहम्मद गोरी के कहने पर कुतबुद्दीन ऐवक ने मुहम्मद गोरी के समय गुलामी से मुक्त किया।
- इल्तुतमिश ने कुतबुद्धीन ऐबक के पुत्र आरामशाह को पराजित करके गद्दी पर बैठा। (1211 में)
- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है क्योंकि उसने दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र हुये राज्यों को पुनर्विजित करके अपने साम्राज्य में मिलाया था।
- इल्तुतमिश ने अपने विश्वास पात्र 40 गुलाम सरदारों का एक संगठन बनाया था जिसे **अमीर-ए-चहलगनी या तुर्कान-ए-चहलगनी** कहा जाता है।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उल-सिराज और मलिक ताजुद्दीन रहते थे।
- इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार का काम पूरा करवाया।
- इल्तुतमिश की मृत्यु 1236 में हुई।

रजिया (1236-40) :-

- रजिया बेगम दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाली पहली महिला शासिका थी।
- रजिया बेगम ने सिहांसन पर बैठने के बाद प्रतिष्ठा में वृद्धि करके पर्दाप्रथा को त्यागकर पुरूषो की तरह कपड़े पहनकर दरवार में आने लगी जिससे कुछ सरदार उससे असंतुष्ट हो गये।
- 1240 में भंटिंडा के सूबेदार अल्तूनिया के द्वारा विद्रोह कर दिया गया इस विद्रोह को दबाने के लिये रजिया को स्वयं जाना पड़ा। इसी बीच तुर्क अमीरो ने एक अबीसिनिया सरदार मलिक याकूत, जो रजिया का प्रेमी माना जाता था, उसकी हत्या कर दी और दिल्ली के सिहांसन पर रजिया के भाई बहरामशाह को गद्दी पर बैठा दिया गया तब रजिया बेगम ने दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने के लिये अल्तूनिया से विवाह करके दिल्ली पर चढ़ाई की। लेकिन रास्ते में ही कैथल नामक स्थान पर डाकूओं द्वारा दोनों की हत्या कर दी गई।
- मलिक-याकूत रजिया बेगम के समय अमीर-ए-आखूर के पद पर था।

बलबन (1266-1287) :-

- बलबन इल्तुतमिश का गुलाम था। बलवन इलबारी तुर्क था। बलवन 1266 में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- बलवन ने इल्तुतमिश द्वारा स्थापित अमीर-ए-चहलगनी को समाप्त कर दिया था।
- बलवन ने गद्दी पर बैठने के बाद सुल्तान पद की प्रतिष्ठा को बढाने का प्रयास किया।
- बलवन ने ईरानी पौराणिक कथाओं में वर्णित तुर्की योद्धा अफरासियाव वंश का वंशज बताया।
- बलवन ने उच्चकुल और निम्नकुल के बीच अंतर स्थापित करने को महत्व दिया।
- बलवन ने अपने दरवार में दो ईरानी प्रथायें सिजदा और पावोस को प्रारम्भ करवाया।
- बलवन ने कहा कि सुल्तान पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि (नियावते खुदाई) होता है।
- बलवन ने खलीफा के महत्व को स्वीकार करते हुये अपने द्वारा जारी किये गये सिक्को पर खलीफा के नाम को अंकित करवाया।
- बलवन ने निष्पक्ष न्यायव्यवस्था को लागू किया।
- बलवन ने साम्राज्य विस्तार के स्थान पर साम्राज्य को संगठित करने का प्रयास किया। इसके लिये उसने 'लौह और रक्त' की नीति अपनाई। उसने गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की।
- उसने मंगोलो के आक्रमणों का विरोध करने के लिये अपने पुत्र मुहम्मद के नेतृत्व में एक सेना को उत्तर-पश्चिम सीमा पर स्थायी रूप से रखा और कई किलों का निर्माण करवाया।
- उसने बंगाल के सूवेदार तुगरिल खाँ के विद्रोह को निर्दयतापूर्वक दबाया और वहाँ पर अपने पुत्र बुगराखाँ को सुबेदार नियुक्त किया।
- बलवन ने अपने सैनिकों को वेतन का भुगतान नगद रूप में किया उसने ईरानी त्यौहार नौरोज को मनाना प्रारम्भ करवाया।
- उसने अपने दरबार में अनेक कलाकारो और साहित्यकारो को संरक्षण दिया था। इसके दरवार में अमीर खुसरो और अमीर हसन थे।
- बलवन की मृत्यु के बाद बुगारा खाँ का पुत्र कैकूबाद गद्दी पर बैठा। कैकूबाद ने जलालुद्दीन खिलजी को अपना सेनापति बनाया।
- कैकूबाद ने जलालुद्दीन को शाइस्ताखाँ की उपाधि दी।
- कैकूबाद को लकवा मार जाने के कारण जलालुद्दीन ने कैकूबाद के पुत्र शम्सुद्दीन क्यूमर्स को सुल्तान घोषित किया और स्वंय उसका संरक्षक बना।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- 1290 में जलालुद्दीन खिलजी ने क्यूमर्स की हत्या करके गद्दी पर अधिकार कर लिया और खिलजी वंश की स्थापनाकी।
- बलवन ने दिल्ली में लालमहल का निर्माण करवाया।

खिलजी वंश

- खिलजी वंश का संस्थापक जलाउद्दीन खिलजी था। 1290 में गद्दी पर बैठा। उसने दिल्ली के पास किलोखरी में अपना राज्याभिषेक करवाया था और किलोखरी को ही अपनी राजधानी बनाया था।
- जलालुद्दीन खिलजी ने साम्राज्य को संगठित करने का प्रयास किया।
- जलालुद्दीन खिलजी के भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 में उसकी हत्या कर दी थी।

अलाउद्धीन खिलजी :-

- जलालुउद्दीन खिलजी का भतीजा और दामाद था। इसका बचपन का नाम अली और गुरशास्प था। यह जलालुउदीन खिलजी के समय कड़ा और मानिकपुर का सूबेदार था।
- जलालुउदीन की हत्या करने के बाद अलाउदीन खिलजी ने 1296 में बलवन के लालमहल में अपना राज्याभिषेक करवाया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने विश्व विजेता बनने और एक नया धर्म चलाने की एक योजना बनाई लेकिन उसने अपने मित्र एवं दिल्ली के कोतवाल अला-उल-मुल्क के समझाने पर यह योजना त्याग दी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने साम्राज्य विस्तार के लिये एक विशाल सेना स्थाई रूप से दिल्ली में रखना प्रारम्भ किया और उसने सैनिको को नगद वेतन देने की प्रथा प्रारम्भ की। उसने प्रत्येक सैनिक का नाम और हुलिया लिखवाना प्रारम्भ किया। उसने घोड़ो को दागने की प्रथा भी प्रारम्भ करवायी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सैनिको को एक निश्चित वेतन पर जीवित रखने के उद्देश्य से बाजार नियंत्रण के तहत सभी वस्तुओं के मूल्य निश्चित कर दिये गये है।
- अलाउद्दीन खिलजी प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने दक्षिण भारत के राज्यों पर आक्रमण किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1299 में गुजरात के शासक रायकर्ण वघेल को पराजित किया था। यहीं से मलिक काफूर नाम के एक हिजड़े को 1000 दीनार में खरीदा था इसलिये मलिक काफूर को 1000 दीनारी भी कहा जाता था।
- इसके बाद 1301 में रणथम्भौर के शासक हम्मीरदेव को पराजित करके अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- 1303 में सुल्तान ने चित्तौड के शासक राणा रतनसिंह पर आक्रमण किया। राणा रतनसिंह युद्ध में मारे गये और उसकी पत्नी रानी पद्मनी ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर कर लिया। अलाउद्धीन खिलजी ने चित्तौडगढ में अपने पुत्र खिज्रखाँ को सूबेदार बनाया और उसके नाम पर चित्तौडगढ का नाम खिज्राबाद कर दिया।
- उसने 1305 में मालवा के शासक महलकदेव और सिवाना के शासक शीतलदेव और 1311 में जालौर के शासक कान्हणदेव को पराजित किया।
- उसने देवगिरि राज्य पर 1307 में आक्रमण करके वहाँ के शासक रामचंद्र देव को पराजित किया और बाद में उससे मित्रता करके उसे 'राय रायन' की उपाधि दी।
- 1310 में बारगंल के शासक प्रताप रूद्रदेव को पराजित किया। यही पर प्रताप रूद्रदेव ने कोहनूर हीरा भेंट किया था।
- 1311 में होयसल के शासक वीरवल्लाल पर आक्रमण करके उससे अधीनता स्वीकार करवायी।
- 1311-12 में मदुरै के पांडयराज्य पर आक्रमण कर काफी धन प्राप्त किया।
- अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण भारत के आक्रमणों का नेतृत्व उसके सेनापति मलिक-काफूर ने किया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने ''सिकंदर सानी'' की उपाधि ग्रहण की और इसे अपने सिक्के पर अंकित करवाया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में सीरी के किलें का निर्माण करवाया।
- **कुतबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी** :- उसने स्वयं को खलीफज्ञ घोषित कर दिया था।

तुगलक वंश

ग्यासुद्दीन तुगलक -

- तुगलक वंश की स्थापना अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति गाजी मलिक ने की थी। यह ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- ग्यासुद्दीन तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने सिंचाई के लिये नहरों का निर्माण करवाया था। उसने यातायात व्यवस्था को अच्छा किया था।
- उसने डाक व्यवस्था को तीव्रगामी बनाया था।
- इसका दिल्ली के शेख निजामुद्दीन औलिया के साथ विवाद हो गया था।
- ग्यासुद्दीन तुगलक से निजामुन औलिया ने कहा था- 'हुजूर दिल्ली दूरस्त'
- निजामुद्दीन औलिया ने ग्यासुद्दीन तुगलक के पुत्र जूना खाँ के साथ मिलकर दिल्ली के पास अफगानपुर गाँव में उसकी हत्या का षडयन्त्र करके उसे मरवा दिया।
- गियासुद्दीन ने दिल्ली में तुगलकाबाद नगर बसाया था।

मोहम्मद बिन तुगलकः-

- ग्यासुद्दीन तुगलक का पुत्र जूना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा।
- बिन तुगलक ने प्रारम्भ में उलेमा वर्ग को राजनीति से अलग रखने का प्रयास किया।
- इसके समय 1333 में मोरक्को से इब्नबतूता यात्री भारत आया था। इसको मो. विन तुगलक ने दिल्ली का प्रमुख काजी नियुक्त किया था। 1342 में मो. बिन तुगलक ने उसे अपना राजदूत

समीक्षा इंस्टीट्यूट

बनाकर चीन भेजा था और इब्नवतूता ने अपनी पुस्तक **''किताब-उल-रेहला''** में भारत का वर्णन किया।

- मो. बिन तुगलक ने अपने जीवन काल में पांच महत्वपूर्ण योजनाएं बनाई जो असफल रही।
- मो. बिन तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरी कर दी और देवगिरी का नाम बदलकर दौलताबाद (1326-27) कर दिया और पुनः दौलताबाद से दिल्ली कर दी। उसका राजधानी परिवर्तन का कारण देवगिरी का साम्राज्य के मध्य में स्थित होना प्रमुख कारण माना जाता है। सुल्तान की यह योजना इसलिये असफल रही क्योंकि इसे सही प्रकार से नही क्रियान्वित किया गया था। 1335 में सुल्तान ने राजधानी को पुनः दौलताबाद से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।
- मो. बिन तुगलक की दूसरी महत्वपूर्ण योजना 1329-30 में सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन था। इसके राज्य में चांदी की कमी हो जाने के कारण उसने चांदी के बदले तांबे या पीतल के सिक्कें चलाऐ। जिनका मूल्य चांदी के सिक्कों के बराबर रखा गया। परन्तु उसकी यह योजना भी असफल रही।
- सुल्तान की तीसरी योजना खुरासान विजय की योजना थी। इसके लिये उसने 3,70,000 सैनिकों की एक विशाल सेना को संगठित किया लेकिन मध्य ऐशिया में राजनीतिक परिवर्तन के कारण यह योजना पूरी न हो सकी।
- मो. बिन तुगलक ने कृषि के विकास के लिये ''दीवाने-कोही'' के नाम से एक नये विभाग की स्थापना की।
- 1336 में हरिहार अैर बुक्का ने ''विजयनगर'' साम्राज्य की स्थापना की। 1347 में इसी समय महाराष्ट्र में अलाउद्दीन बहमन शाह ने ''**बहमनी**'' राज्य की स्थापना की। इसी के समय 1340-41 में शमसुद्दीन के नेतृत्व में बंगाल दिल्ली सल्तनत से अलग हो गया।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने जैन सन्त 'जिनचन्द्र सूरी' का सम्मान किया था।
- सुल्तान ने अपने सिक्को पर अपने नाम के साथ खलीफा का नाम अकिंत करवाया ।
- सिन्ध विद्रोह को कुचलने के समय थट्टा नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हुई और सुल्तान की मृत्यु पर इतिहासकार बदाँयूनी ने लिखा है कि ''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिली''।
- मोहम्मद-बिन-तुगलक ने दिल्ली के पास जहाँपनाह नगर की स्थापना की। और उसने तुगलकाबाद नगर के पास आदिलाबाद का किला बनवाया।
- इतिहासकार एलफिंस्टन ने उसको **पागल सुल्तान** कहा है।

''फिरोजशाह तुगलक''

- यह मो. विन तुगलक का चचेरा भाई था। यह मो. तुगलक की मृत्यु के बाद 1351 में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। फिरोजशाह तुगलक हिन्दू मां का पुत्र था।
- फिरोजशाह तुगलक ने अपनी शासन काल में 24 कष्टदायक करो को समाप्त करके केबल चार करो को वसूल किया।

  1.खराज - भूमि
  2.खम्स - लूट का माल
  3.जजिया - गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर
  4.जकात - अमीर मुसलमानों से उनकी आय का 2.5% कर लेकर मुसलमानों के कल्याण के लिये खर्च किया जाता था।
- यह सल्तनत काल का सर्वाधिक धार्मिक असहिष्णु सुल्तान था।
- फिरोजशाह तुगलक ने पहली बार ब्राह्मणों से जजिया कर वसूल किया।
- फिरोजशाह तुगलक ने सरदारों एवं राज्य के अन्य अधिकारियों को खुश करने के उद्देश्य से जागीरदारी प्रणाली शुरू की और सेना में वंशानुगत अधिकार की मान्यता दी गई। सैनिकों को नगद वेतन के रूप में भूमि दी जाने लगी।
- फिरोजशाह तुगलक ने सिचाई के लिये पाँच बड़ी नहरों का निर्माण करवाया। इसने सिचाई कर के रूप में फसल का 1/10 भाग वसूल किया। सिचाई कर को 'हब-ए-शर्व' कहा जाता था।
- इसने लगभग 1200 फलों के बाग लगवाये।
- उसने अपने शासनकाल मे कई नगरो की स्थापना की। उसने हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजशाह कोटला, फिरोजपुर और जौनपुर नगर बसायें। उसने जौनपुर नगर की स्थापना अपने भाई जूना खां के नाम पर करवाई थी।
- फिरोजशाह तुगलक ने अशोक के दो स्तम्भो लेखों को टोपरा और मेरठ से मंगाकर दिल्ली में स्थापित करवाया।
- फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कुतुबमीनार की मरम्मत और पांचवी मंजिल बनवायी।
- उसने मुस्लिम, अनाथ लडकियों, विधवाओं और असहाय महिलाओं की सहायता के लिये ''दीवाने-खैरात विभाग'' की स्थापना की।
- फिरोजशाह के शासनकाल में गुलामों की संख्या 1,80,000 तक पहुच गई थी। उनकी देख-रेख के लिये सुल्तान ने **दीवाने-बन्दगन** विभाग की स्थापना की।
- खान-ए-जहाँ मकबूल फिरोजशाह का वजीर था।
- फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में **''दारूलशफा''** के नाम से एक Hospital खुलबाया।
- फिरोजशाह कट्टर सुन्नी सर्मथक मुसलमान था। उसने हिन्दुओं को जिम्मी कहा।
- उसने शिक्षा के प्रसार प्रचार के लिये अनेक मदरसों की स्थापना करवाई।
- फिरोजशाह तुगलक ने जियाउद्दीन बरनी और शम्स ए शिराज अफीक को संरक्षण दिया। जियाउद्दीन बरनी ने 'फतवा ए जहाँदारी' और 'तारीख-ए-फिरोजशाही' पुस्तकों की रचना फारसी भाषा में की।
- फिरोजशाह ने स्वंय फारसी भाषा में आत्मकथा **फतूहात-ए-फिरोजशाही** के नाम से की।
- फिरोजशाह ने अद्दा और भिख नाम से क्रमशः चांदी और तांवे के सिक्के जारी किये।
- उसने संशगानी नाम से एक नया प्रकार का सिक्का चलाया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- फिरोजशाह तुगलक के शासन काल में मंगोलो का आक्रमण नहीं हुआ।
- उसने 1360 में जाजनगर (उडीसा) के शासक भानुदेव-III पर आक्रमण कर उसे पराजित किया और जगन्नाथ पुरी के मन्दिर को नुकसान पहुँचाया।
- फिरोजशाह की मृत्यू 1388 में हुई।
- इतिहासकार एलफिस्टन ने फिरोजशाह को सल्तनतकालीन अकबर कहा।

''नसरूद्दीन महम्मूद शाह''

- यह तुगलक वंश का अंतिम शासक था। इसके समय मलिक सरवर नाम के एक हिजडे ने स्वतंत्र जौनपुर राज्य की स्थापना की। इसके शासन काल में दिल्ली सल्तनत का साम्राज्य दिल्ली से पालम तक ही रह गया था।
- इसके समय मंगोल सेनानायक तैमूर लंग ने 1398 में दिल्ली पर आक्रमण किया। इस समय नसरूद्दीन महमूद राजधानी से भाग गया था।

लोदी वंश

बहलोल लोदी :-

- बहलोल लोदी दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक था। बहलोल लोदी ने अफगान सिद्धान्त के तहत स्वंय को अमीरों का शासक मानने की अपेक्षा अमीरों में से एक अमीर मानता था।
- उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की थी। इसने 'रियाते आला' की उपाधि धारण की। उसने जौनपुर के शासक को पराजित करके जौनपुर राज्य को पुनः दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया था।
- इसका अन्तिम सैनिक अभियान ग्वालियर के शासक मानसिंह के विरूद्ध था।
- उसने बहलोली सिक्के चलाया।
- बहलोल लोदी ने दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक 38 वर्षों तक शासन किया।

सिकन्दर लोदी :-

- यह बहलोल लोदी का पुत्र था। इसका वास्तविक नाम निजाम खां था। सिकन्दर लोदी हिन्दू मां का पुत्र था। सिकन्दर लोदी ने 1504 में आगरा नगर की स्थापना की और उसे राजधानी बनया।
- सिकन्दर ने भूमि की पैमइश के लिये ''सिकन्दरी गज'' का प्रयोग किया।
- वह धार्मिक दृष्टि से असहिष्णु था। उसने हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर वहाँ पर मस्जिदों का निर्माण करवाया। उसने मुसलमानों द्वारा ताजिया निकालने और मुसलमान स्त्रियों के पीर और सूफियों की मजार पर जाने पर उसने रोक लगाई।

इब्राहिम लोदी :- (1517-1526)

- सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद इसका पुत्र गद्दी पर बैठा।
- इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर के शासक विक्रमाजीत सिंह को अपनी अधीन कर लिया था।
- इब्राहिम लोदी का मेवाड़ के शासक राणा सांगा के विरूद्ध अभियान असफल रहा।
- इससे असतुष्ट पंजाब का शासक दौलत खां लोदी और इब्राहिम के चचेरे भाई आलम खाँ ने बावर को भारत पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया।
- 21 अप्रैल-1526 को इब्राहिम लोदी **पानीपत के प्रथम युद्ध** में बाबर से युद्ध करते मारा गया।
- इसकी मृत्यु के बाद ही दिल्ली सल्तनत काल समाप्त हो गया और बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की।

दिल्ली सल्तनत का प्रशासनः-

- सल्तनत काल में भारत में एक नई प्रशासन व्यवस्था की शुरूआत हुई। जो मुख्य रूपसे अरबी, फारसी प्रणाली पर आधारित थी।
- सल्तनतकाल में प्रशासनिक व्यवस्था पूर्ण रूप से इस्लामिक कानूनों (शरीयत) पर आधारित थी।
- उलेमा वर्ग प्रशासन में प्रमुख रूप से भूमिका निभाता था। इस्लामिक राज्य में राज्य का प्रमुख अल्लाह माना जाता था और धरती पर विश्व के समस्त इस्लामिक राज्यों का प्रमुख ''खलीफा'' होता था।
- दिल्ली सल्तनत में शासन का प्रमुख सुल्तान होता था।
- राज्य के समस्त अधिकार और शक्तियाँ सुल्तान में केन्द्रित थी।
- सुल्तान सेना का सर्वोच्च सेनापति और न्यायालय का सर्वोच्च न्यायधीश होता था।
- सुल्तान की सहायता के लिये एक मंत्री परिषद होती थी जिसे ''मजलिस-ए-खलवत'' कहा जाता था। सुल्तान मंत्री परिषद की सलाह मानने के लिये बाध्य नहीं था।

प्रमुख मंत्री और अधिकारी :-

(1) **वजीर** :- यह राजस्व विभाग का प्रमुख होता था। इसे अन्य मंत्रियों की अपेक्षा अधिक अधिकार प्राप्त थे। सुल्तान की अनुपस्थिति में वजीर शासन का प्रवन्ध करता था।

(2) **दीवाने अर्ज** :- यह सैनिक विभाग था। इस विभाग के प्रमुख को आरिज-ए-मुमालिक कहा जाता था।

(3) **दीवाने इन्शा** :- यह शाहीपत्र व्यवहार का विभाग था। यह सुल्तान की घोषणओं एवं पत्रों का मसौदा तैयार करता था। इस विभाग के प्रमुख को दीवाने मुमालिक कहा गया।

(4) **दीवाने रसालतः**- यह विदेश विभाग था।

(5) **काजी-उल-कुजातः**- यह प्रमुख न्यायधीश होता था।

(6) **सद्र-उस-सुदूर** :- यह धर्म विभाग और दान विभाग का प्रमुख था।

(7) **दीवाने-ए-बरीद** :- यह गुप्तचर विभाग था।

(8) **दीवोन-ए-कोही** :- यह कृषि विभाग था। उसकी स्थापना मो.विन तुगलक ने की थी।

(9) **दीवाने-मुस्तखराज** :- यह राजस्व विभाग से सम्बधित था। इसकी स्थापना अलाउद्दीन खिल्जी ने की थी।

(10) **अमीरे-हाजिब** :- यह सुल्तान से मिलने वालों की जाँच पडताल करता था।

(11) **अमीर-ए-आखूर** :- अश्वशाला का प्रमुख था।

(12) **नायव** :- नायव का पद बहरामशाह के समय बनाया गया था। यह पद दुर्वल सुल्तानों के समय महत्वपूर्ण हो जाता था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

सल्तनतकालीन प्रांतीय राज्य

कश्मीर राज्य :-

- **''जैन-उल-अबादीन''** धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था। इसलिये इसे **''कश्मीर का अकबर''** कहा जाता था।
- इसके समय महाभारत और राजतरंगणी का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया।
- 1588 में अकबर ने कश्मीर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- 1572-73 में मुगलसम्राट अकबर द्वारा गुजरात राज्य को मुगल साम्राज्य में मिलया गया।

मेवाड राज्य :-

- मुहम्मद तुगलक के समय सिसोदिया वंश के हमीरदेव ने स्वतंत्र मेवाड़ राज्य की स्थापना की।
- इस राज्य का सबसे प्रमुख शासक **राणाकुम्भा** था। राणा कुम्भा ने मालवा विजय की स्मृति में 1448 में चित्तौड में एक विजय स्तम्भ की स्थापना करवायी। राणाकुम्भा ने जयदेव की पुस्तक गीतगोविन्द पर रसिकप्रिया के नाम से टीका लिखी। राणाकुम्भा ने संगीत मीमांसा और संगीत राज्य जैसी पुस्तकों की रचना की।
- 1509 में राणा सांगा मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। राणा सांगा ने दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी, मालवा के महमूद खिल्जी और गुजरात के शासक मुजफर शाह-II को पराजित किया। 1527 में बाबर ने राणा सांगा (राणा संग्राम सिंह) को खानवा के युद्ध में पराजित किया।
- जहाँगीर के शासन काल में मुगल साम्राज्य में मेवाड राज्य को मिला लिया गया।
- अकबर के साथ मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप ने 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा।

बहमनी राज्य :-

- बहमनी राज्य की स्थापना 1347 में मुह्मद बिन तुगलक के शासन काल में अलाउद्दीन बहमनशाह ने की थी। बहमनशाह ने गुलवर्गा को अपनी राजधानी बनाया।
- मुहम्मद शाह-II शांतिप्रिय और विद्या का सरंक्षक शासक था।
- ताजुद्दीन फिरोज एक पराक्रमी शासक था। जिसने विजय नगर राज्य को दो बार पराजित किया।
- शिहाबुद्दीन अहमद को निष्ठुरता के कारण जालिम कहा जाता था।
- शमसुद्दीन मुहम्मद-III के शासनकाल में महमूद गवां का प्रभावशाली रूप से उदय हुआ। मुहम्मद गवाँ को ख्वाजाजहाँ की उपाधि देकर राज्य का प्रधानमंत्री बनाया गया। बहमनी राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ। महमूद गवाँ ने बीदर में एक महाविद्यालय की स्थापना की थी।
- बहमनी राज्य का अंतिम शासक कलीमुल्लाहशाह था। उसकी मृत्यु के बाद 1538 में बहमनी 5 राज्यों में बट गया।

1. **बीजापुर राज्य :-** इस राज्य की स्थापना आदिलशाही वंश के शासक यूसुफ आदिलशाह ने की।
2. **अहमद नगर राज्य :-** इसकी स्थापना निजामशाही वंश के राजा मलिक अहमद ने की।
3. **बरार राज्य :-** इसकी स्थापना इमादशाही वंश के राजा फतेहउल्लाह इमादशाह ने की थी।
4. **गोलकुण्डा राज्य :-** इसकी स्थापना कुतुबशाही वंश के शासक कुली कुतुबशाह के द्वारा की गई।
5. **बीदर राज्य :-** इस राज्य के राजा बरीद शाही वंश के शासक अमीर अली बरीद द्वारा की गई।

विजय नगर साम्राज्य :-

- विजय नगर साम्राज्य की स्थापना 1336 में मुहम्मद बिन तुगलक के समय हरिहर और बुक्का दो भाईयों ने माधव विद्यारण्य की प्रेरणा से स्थापना की थी। हरिहर और बुक्का ने अपने पिता के नाम पर संगम वंश की स्थापना की।

संगम वंश :-

- इसका प्रथम शासक हरिहर-I था।
- बुक्का-I के शासनकाल में 1374 में चीन में एक दूत मण्डल भेजा गया।
- देवराय-I के शासनकाल में इटली के यात्री **निकोलो कोंटी** ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की थी।
- देवराय-I ने सिंचाई के लिये तुगंभद्रा नदी पर बांध बनवाकर नहरे निकलवायी।
- देवराय-II इस वंश का महानतम शासक था। इसके शासनकाल में मुसलमानों को सेना में भर्ती किया गया और उन्हें जागीरे भी दी गई।
- उसके शासन काल में फारस के राजदूत **अब्दुल रज्जाक** ने विजयनगर की यात्रा की।
- इस वंश का अंतिम शासक विरूपाक्ष-II था। इसके समय पुर्तगाली यात्री नूनिज ने यात्रा की थी।

तुलुव वंश :-

- इस वंश की स्थापना वीरनरसिंह ने की। इस वंश का शासक कृष्णदेवराय विजयनगर साम्राज्य का महान शासक था। इसने 1504 से 1529 तक शासन किया। इसके समय विजय नगर साम्राज्य का सबसे अधिक विस्तार हुआ।
- इसके समय पुर्तगाली यात्री **डोमीगोस पोइस** और पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने विजय नगर की यात्रा की।
- कृष्णदेवराय ने तेलगू भाषा में **अमुक्त माल्यद** पुस्तक लिखी और उसने संस्कृत भाषा में जामवन्ती कल्याणम नाटक लिखा। कृष्णदेवराय ने आंध्रभोज की उपाधि धारण की।
- कृष्णदेवराय के दरवार में तेलगू भाषा के 8 सर्वश्रेष्ठ विद्वान रहते थे। जिन्हें **'अष्टदिग्गज'** कहा जाता है। अष्टदिग्गज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वेदन्ता था जिसे तेलगू भाषा का पितामाह कहा जाता है। कृष्ण देवराय के दरवारी कवि तेनाली राम थे।
- कृष्णदेवराय ने हजारा और विठ्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया।
- **अच्युत देवराय** :- कृष्णदेवराय ने अपने भाई अच्युत देवराय को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- **सदाशिव** :- इसके समय 23 जनवरी 1565 को **तालीकोटा का युद्ध** या राक्षसी तगड़ी कायुद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में वीजापुर अहमद नगर गोलकुण्डा और बीदर की सयुंक्त सेना ने विजय नगर साम्राज्य के सेनापति रामराय को पराजित किया। इस युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया।

अरविंडु वंश :-

- इस वंश की स्थापना त्रिरूमल ने की थी। इस वंश के शासक वेंकट-II ने स्पेन के राजा फिलिप-III के साथ राजनीतिक संबंध बनाये।
- रंग-III विजयनगर साम्राज्य का अंतिम शासक था।

भक्ति आंदोलन :-

- भक्ति कालीन आंदोलन की शुरूआत 7वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के अलवार भक्तों द्वारा की गई थी। दक्षिण भारत से उत्तर भारत में ये आंदोलन बारहवीं शताब्दी में रामानन्द द्वारा लाया गया था।
- भक्ति आन्दोलन का महत्वपूर्ण उद्देश्य हिन्दू धर्म और समाज में सुधार करना और इस्लाम और हिन्दू धर्म में समन्वय करना।
- भक्ति कालीन सन्तों ने भक्ति मार्ग को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानते हुये ज्ञान और भक्ति में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।
- भक्तिकालीन सन्तों ने जाति व्यवस्था और छुआछूत का विरोध किया।
- ये अधिकांश सन्त एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। भक्ति आन्दोलन का सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में विकास हुआ।
- इन सन्तों ने हिन्दू और मुस्लिम जनता के आपस में सामाजिक और सांस्कृतिक सम्पर्क से दोनों के मध्य सदभाव, सहानुभूति और सहयोग की भावना का धार्मिक कर्मकांडों की निन्दा की और इन्होंने जनसाधारण की भाषा में अपने उपदेश दिये।

शंकराचार्य :-

- ये अद्वैतवाद की अवधारणा के प्रर्वतक है। शंकराचार्य द्वारा देश के चारों भागों में चार मठ स्थापित किये गये।
  1. उत्तरांचल के वद्रीनाथ में ज्योतिष पीठ।
  2. उडीसा के पुरी में गोर्वधन पीठ।
  3. गुजरात के द्वारिका में शारदा पीठ।
  4. कर्नाटक के मैसूर में श्रंगेरी पीठ।
- जन्म :- केरल में कुलपी स्थान पर 788 AD

रामानुजाचार्य :-

- इनको भक्ति आन्दोलन का प्रर्वतक माना जाता है। इन्होने ''विशिष्ट अद्वैतवाद दर्शन'' का प्रचार किया।
- इन्होंने ''श्री सम्प्रदाय'' की स्थापना की।
- रामानुजाचार्य ने राम को विष्णु का अवतार माना।
- इन्होंने वादरायण के भाष्य और वेदान्तसूत्र पर भाष्य लिखा था।

निम्वकाचार्य :-

- इन्होंने ''द्वैताद्वैतवाद'' दर्शन का व्याख्या की। इन्होंने कृष्ण को अपना आराध्य देव माना। निम्वकाचार्य के सम्प्रदाय को सनक अथवा सनकादि सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है।

माधवाचार्य :-

- इनको आनंदतीर्थ के नाम से जाना जाता है। इन्होंने ''द्वैतवाद दर्शन'' की व्याख्या की। इन्होंने विष्णु की आराधना की।

रामानंद :-

- इनका जन्म प्रयाग के कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- रामानंद को भक्ति आन्दोलन को दक्षिण से उत्तर में लाने का श्रेय दिया जाता है। इन्होंने एकेश्वरवाद पर बल देते हुये राम की उपासना की।
- हिन्दी भाषा में उपदेश देने वाले रामानन्द पहले वैष्णव सन्त थे।
- रामानन्द ने सभी जाति और धर्म के लोगो को अपना शिष्य बनाया। इसके प्रमुख शिष्यों में धन्ना (जाट), पीपा (राजपूत), सेना (नाई), रैदास (चमार), कबीर (जुलाहा), और परमानन्द (ब्राह्मण) प्रमुख थे।

कबीर :-

- कबीर निर्गुण ब्रहम के उपासक थे। वे गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुये ईश्वर भक्ति करते रहे। इन्होंने जाति प्रथा, धार्मिक कर्मकांड, बाह्य आडम्बर, मूर्तिपूजा और अवतारवाद का विरोध किया।
- रचना - **बीजक**, साखी, सबद, रमैनी।

गुरूनानक :-

- गुरूनानक का जन्म 1469 में तलवन्डी (पाकिस्तान) में हुआ। इन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता और ईश्वर भक्ति पर विशेष बल दिया। गुरूनानक सूफीसन्त बाबा फरीद से प्रभावित थे।
- इनके अनुयायियों को ''सिख'' कहा गया।

चैतन्य :-

- इनका जन्म बंगाल के नदिया गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने कृष्ण को अपना ईष्ट देव माना। इन्होंने भजन कीर्तन के द्वारा कृष्ण भक्ति की।
- इन्होंने गोसाई संघ की स्थापना की। इनका दर्शन अचिंत्य भेदाभेद भाव के नाम से जाना जाता है।

नामदेव :-

- नामदेव महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त थे। इन्होने अपने उपदेश हिन्दी और मराठी भाषा में दिये।

तुकाराम :-

- ये भी महाराष्ट्र के प्रमुख सन्त थे। ये शिवाजी के समकालीन थे। इन्होंने बरकारी सम्प्रदाय की स्थापना की।

सन्त ज्ञानेश्वर :-

- इनको महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन का प्रर्वतक माना जाता है। रचना - अभंग नाम से जानी जाती है। ये सन्त बनने से पूर्व डकैत थे।

सन्त रैयदास :-

- ये निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। ये रामानन्द के शिष्य थे। इन्होंने रामदासी सम्प्रदाय की स्थापना की।

समीक्षा इन्स्टीट्यूट

दादू दयाल :-

- इनका जन्म अहमदाबाद में हुआ था। इन्होंने निर्गुण ब्रह्म भक्ति पर बल दिया। इन्होने सद्गुरू की महिमा और हिन्दू मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया।
- दादूपन्थियों ने गुजरात में ''निपख आन्दोलन'' चलाया।

मीरा बाई :-

- मीराबाई मेडता के रत्नसिंह राठौर की पुत्री और मेवाड के शासक राणा सांगा के पुत्र भोजराय की पत्नि थी। इन्होंने कृष्ण को अपना ईष्ट देव मानते हुये इनकी भक्ति पति के रूप में की।
- मीरा की तुलना स्त्री सूफी सन्त रविया से की जाती है।

बल्लभाचार्य :-

- ये कृष्ण के उपासक थे। विजयनगर के शासको ने बल्लभाचार्य को जगत गुरू की उपाधि दी।
- इन्हें विजयनगर के शासक कृष्ण देवराय का संरक्षण प्राप्त था।
- इन्होंने **'पुष्टिमार्गी दर्शन'** की व्याख्या की। इन्होंने श्रीमदभागवत पर टीका लिखा।
- इन्होंने शुद्ध अद्वैतवाद दर्शन की व्याख्या की वल्लभाचार्य ने ''रूद्र सम्प्रदाय'' की स्थापना की।

सूरदास :-

- राधा कृष्ण के भक्त थे। इन्होंने ब्रजभाषा में उपदेश दिये।
- प्रमूख पुस्तकें - सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी है।

तुलसीदास :-

- इन्होंने राम को ईष्ट देव मानकर उनकी भक्ति की। ये अकबर के समकालीन थे। इन्होंने रामचरितमानस, विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली पुस्तके लिखी।

नरसिहं मेहता :-

- गुजरात के प्रसिद्ध सन्त नरसिंह मेहता ने राजा कृष्ण के प्रेम का चित्रण गुजराती गीतो के माध्यम से क्रिया है।
- गान्धी के प्रिय भजन **''वैष्णव जन तो तैनौ कहिये''** के रचियता भी ये ही है।

''सूफी आन्दोलन''

- सूफी आन्दोलन एक इस्लाम धर्म का रहस्यवादी आन्दोलन थ। जिसमें सूफी सन्तों ने प्रेम, उदारता, और भक्ति को अपना आदर्श मानते हुये आध्यात्मिकता पर बल दिया।
- सूफी सन्त ईश्वर को प्रेमिका और स्वंय के प्रेमी मानते थे। वे मानते थे कि ईश्वर की प्राप्ति प्रेम, संगीत से प्राप्त की जाती है।
- सूफी सन्तों ने गुरू को अधिक महत्व दिया है।
- भारत में सूफी आन्दोलन का प्रारम्भ दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूर्व ही हो चुका था।
- अबुलफजल ने अपनी पुस्तक ''आइने अकबरी'' में 14 सिलसिले का उल्लेख किया।

प्रमुख सम्प्रदाय

1. चिश्ती सिलसिला

- इस सम्प्रदाय की स्थापना ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने की थी। ये 1192 में मुहम्मद गौरी के साथ भारत आये थे। इनकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र अजमेर था।
- ख्वाजा मुईनुद्दीन के प्रमुख शिष्य कुतवुद्दीन बख्तियार काकी थे।
- बख्तियार काकी ने बाबा फरीद को अपना शिष्य बनाया।
- बलवन बाबा फरीद को सम्मान देता था। निजामुद्दीन ओलिया बाबा फरीद के शिष्य थे। इन्होंने दिल्ली सल्तनत के 7 सुल्तानों का काल देखा।
- शेख सलीम चिश्ती निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था। यह फतेहपुर सीकरी में रहते थे।
- अकबर शेख सलीम चिश्ती का शिष्य था। दक्षिण भारत में चिश्ती संप्रदाय की शुरूआत शेख बुराहनुद्दीन गरीब ने की। इन्होंने हिन्दू मुस्लिम दोनों समुदायों में समन्वय करने का प्रयास किया।

2. सुहरावर्दी सिलसिलाः-

- इसकी स्थापना शेख शिहाबुदीन उमर सुहरावर्दी ने की लेकिन भारत में इसका संचालन शेख बहाउद्धीन जकारिया ने किया। इन्होने मुल्तान में एक मठ की स्थापना की।
- प्रमुख सन्त जलालुद्दीन तवरीजी, सैय्यद सुर्ख जोश प्रमुख थे।

3. कादरी शिलशिला :-

- इसकी स्थापना सैय्यद मुहीद्दीन कादिर जिलानी ने की थी।
- इस सिलसिले के प्रचार-प्रसार में नियामतउल्ला, मखदूम जिलानी और मोहम्मद गौस प्रमुख है। मियाँमीर जहांगीर और शाहजहां का समकालीन था।

4. नक्सबन्दी सिलसिला :-

- इसकी स्थापना ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द ने की और भारत में इस सिलसिले की स्थापना ख्वाजा बाकी विल्लाह ने की।

मुगल साम्राज्य

बाबर :-

- बाबर मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। बाबर फरगना का (मध्य ऐशिया) शासक था।
- बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को फरगना में हुआ था। बाबर तुर्क जाति के चगताई वंश से सम्बंधित था। बाबर पितृपक्ष से तैमूर लंग का 6वां वंशज और मातृपक्ष से मंगोल शासक चंगेज खां का चौदहवां वंशज था।
- बाबर अपने पिता उमर शेख मिर्जा की मृत्यु के बाद 1494 में फरगना का शासक 11 वर्ष की उम्र में बना।1507 में बाबर ने परम्परागत मिर्जा की उपाधि त्याग कर बादशाह की धारण की।
- मध्य एशिया में अपनी अनिश्चित स्थिति के कारण बाबर ने सिन्ध नदी को पार करके भारत पर पांच बार आक्रमण किया। बाबर का प्रथम भारतीय अभियान 1518-19 में युसुफजाई जाति के विरूद्ध था। इस आक्रमण के दौरान उसने भारत में सर्वप्रथम तोपखाने का प्रयोग किया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- 1524 के बाबर के चौथे आक्रमण के समय पंजाब के सूवेदार दोलत खां लोदी ने अपने पुत्र दिलावर खां और आलम खां को भारत पर आक्रमण करने के लिये आमत्रण भेजा।
- 21 अप्रैल 1526 को बाबर ने **पानीपत के प्रथम युद्ध** में दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया। और दिल्ली और आगरा बाबर के अधीन हो गये। इस युद्ध में पहली बार प्रसिद्ध 'तुलगमा युद्ध' पद्धति का प्रयोग किया। इस युद्ध के बाद बाबर ने अपने सैनिकों एवं अपने संबंधियों को चांदी के सिक्के उपहार में दिये। इसी उदारता के कारण बावर को 'कलन्दर' के नाम से जाना जाता है।
- **खानवा का युद्ध (1527)** :- खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 को मेवाड के शासक राणासांगा और बाबर के बीच हुआ था। इस युद्ध में बाबर की विजय हुई। इस युद्ध से पूर्व बाबर ने जिहाद का नारा दिया और खानवा के युद्ध में विजय के बाद वाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।
- **चन्देरी का युद्ध** :- बाबर ने 29 जनवरी 1528 को चन्देरी के युद्ध में चन्देरी केशासक मेदिनीराय को पराजित किया था।
- इस युद्ध के समय लगभग 800 राजपूत रानियों ने जौहर किया था।
- **घाघरा का युद्ध** :- 6 मई 1529 को बावर ने घाघरा के युद्ध में महमूदलोदी को पराजित किया।
- 26 दिसम्बर 1530 में आगरा में बावर की मृत्यु हुई।
- प्रारम्भ में बावर को आगरा के आराम बाग में दफनाया गया इसके बाद उसे कावुल में दफनाया गया। बावर का मकबरा कावुल में ही हैं।
- बावर अरबी और फारसी भाषा का अच्छा ज्ञाता था। बावर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा **"तुजकेबावरी"** लिखी। जिसका बाद में फारसी भाषा में अब्दुल रहीम खानखाना और पैयन्द खां ने इसका अनुवाद किया।
- बावर को मुंबईयान पद्य शैली का जन्मदाता माना जाता है।
- बावर ने भारत में तीन मस्जिदों का निर्माण करवाया।

1. पानीपत में कावुली वाग मस्जिद
2. सम्भल में जामा मस्जिद
3. अयोध्या में बावरी मस्जिद

- उस बाबरी मस्जिद का निर्माण बाबर के सेनापति मीर बाकी की देखरेख में 1520 में हुआ था।
- जहरूद्दीन मुहम्मद बाबर का पूरा नाम है।

हुमायूँ :-

- नसिरूद्दीन मुहम्मद हुमायूं इसका पूरा नाम था। इसका जन्म 6 मार्च 1508 को कावुल में हुआ था। इसकी मां माहम अनगा थी।
- वावर ने हुमायू को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। बावर की मृत्यु के बाद 1530 में 23 वर्ष की आयु में आगरा की गद्दी पर बैठा।
- हुमायूं वावर के समय वदख्शा का सूवेदार था।
- गद्दी पर बैठने के बाद हुमायूं ने अपने पिता की इच्छा अनुसार अपनी छोटे भाईयों के बीच साम्राज्य का विभाजन कर दिया था। कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल और हिंदाल को अलवर व मेवता दिया।
- गुजरात के शासक बाहादुर शाह ने 1534 में चित्तौड पर आक्रमण किया था। उस समय राणासांगा की विधवा रानी कर्णावती/कर्मावती ने हुमायू से वहादुर शाह के खिलाफ मदद मांगने के लिये राखी भेजी थी।
- 1535-36 में हुमायूँ ने बहादुरशाह को परास्त किया।

चौसा का युद्ध :- 1539 में हुमायूं बिहार के शासक शेरखां से पराजित हुआ था। शेरखां ने शेरशाह की उपाधि धारण की।

बिलग्राम/कन्नौज का युद्ध :-

- 1540 में हुमायू पराजय हुआ औरइस युद्ध के बाद शेरखां ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- इस प्रकार भारत में राजसत्ता पुनः अफगान शासको के हाथ में आ गई।
- शेरखां से पराजित होकर 1540-55 तक निर्वासित जीवन व्यतीत किया।
- हुमायूं को अमरकोट के राजा वीरसाल ने संरक्षण दिया था।
- 1545 में हुमायूं ने काबुल और कन्धार पर अधिकार कर लिया था।
- हुमायूं ने भारत से जाकर ईरान के शासक के दरबार में शरण ली थी।
- 1555 में सरहिन्द एवं मच्छीवाडा के युद्ध में हुमायूं ने सिकन्दरसूर को पराजित करके पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- लेकिन 1556 में दिल्ली में दीन-ए-पनाह किले में स्थित पुस्तकालय की सीढियों से गिरकर मृत्यु हो गई।
- हुमायूं के बारे में इतिहासकार **लेनपूल** ने लिखा "हुमांयू जीवन भर लडखडाता रहा और लडखडाकर ही उसकी मृत्यु हो गई।"
- हुमायूं ने 1533 में दिल्ली में दीनपनाह किले का निर्माण करवाया।
- हुमायूं ज्योतिष में विश्वास करता था। इसलिये सप्ताह में अलग-2 रंग के कपडें पहनता था।
- इसका मकबरा दिल्ली में हैं। इसका निर्माण अकबर के समय उसकी विधवा हाजी बेगम ने करवाया था।
- हुमायूँनामा की रचना गुलवदन बेगम ने की थी।

शेरशाह सूरी :-

- इसका वास्तविक नाम फरीद खां था। इसके पिता हसन खां जौनपुर के छोटे जमीदार थे।
- उसने बिहार के शासक मोहम्मद बहार खाँ लोहानी के यहां नौकरी करते समय एक शेर को अकेले मार दिया था। इसलिये उसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर मुहम्मद शाह ने उसे शेर खाँ की उपाधि थी।
- 1539 में चौसा के युद्ध में और 1540 में विलग्राम या कन्नौज के युद्ध में हुमायूं को पराजित करने के बाद शेरखां ने दिल्ली की गद्दी पर अधिकार किया और उसने राज्याभिषेक के बाद शेरशाह की उपाधि धारण की।
- इसने अपनी उत्तर पश्चिम सीमा को सुरक्षित रखने के लिये शक्तिशाली रोहतासगढ के किले का निर्माण करवाया।

समीक्षा इन्स्टीट्यूट

- 1544 में शेरशाह ने रायसेन के राजा पूरणमल को पराजित किया था।
- सूरी ने मारवाड के राजा मालदेव को 1544 में सेमल के युद्ध में हराया था। इस युद्ध को जीतने के बाद शेरशाह ने ''कि मैने मुठ्ठी भर बाजरे के लिये पूरे हिन्दुस्तान के साम्राज्य को खो चुका था।''
- 1545 में शेरशाह सूरी का कालिन्जर के खिलाफ अन्तिम सैनिक अभियान था। इस समय बारूदी विस्फोट के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गई।
- इसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र इस्लाम शाह गद्दी पर बैठा।
- इसने भूमि सुधार के लिये टोडरमल की सहायता से महत्वपूर्ण कार्य किये। उसने भूमि की पैमाईश करवाकर भूराजस्व निश्चित किया। रैयतवाडी व्यवस्था के तहत किसानों से भूराजस्व कर वसूल किया।
- उसने किसानों से जरीवाना, महासीलाना कर वसूल किया।
- इसके समय में नगद रूप में या अनाज के रूप में राजस्व दिया जाता था।
- शेरशाह सूरी ने भूमि की पैमाइश के लिये 32 अंक वाले सिकन्दरी गज और सन् की डंडी का प्रयोग किया।
- इसने 178 ग्रेन का चाँदी का सिक्का रूपिया और 380 ग्रेन का तांबे का सिक्का ''दाम'' चलाया।
- शेरशाह सूरी ने लगभग 1700 सरायों का निर्माण करवाया।
- इसने वंगाल के सोनार गांव से सिन्ध तक ग्रान्ड ट्रन्क रोड (G.T. Road) का निर्माण करवाया। **सड़क-ए-आजम** पहले कहा जाता था।
- शेरशाह सूरी ने सहसाराम में झील के अन्दर अपना मकबरा बनवाया।
- इनसे दिल्ली में पुराने किले का निर्माण करवाया और उस किले के अन्दर ''किला-ए-कुहिना'' मस्जिद का निर्माण करवाया।
- इसके शासन काल में मलिक मुहम्मद जायसी ने ''पदमावत'' की रचना की।

अकबर :-

- इसका पूरा नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर था।
- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हमीदा वानों बेगम के गर्भ से हुआ था।
- 1556 में हुमायूं की मृत्यु के बाद अकबर के संरक्षक बेरम खां ने पंजाब में गुरदासपुर के पास कलानौर नामक स्थान पर 13 वर्ष 4 माह की अवस्था में उसका राज्याभिषेक किया।
- आदिलशाह के सेनापति हेमू ने हुमायूं की मृत्यु के बाद दिल्ली की गद्दी पर अधिकार करके **''विक्रमादित्य''** की उपाधि धारण की। हेमू दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला अन्तिम हिन्दू शासक था।
- 5 नबम्बर 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर के सेनापति बैरम खां ने हेमू को पराजित करके उसकी हत्या की।
- अकबर ने बादशाह बनने के बाद बैरमखां को ''वकील'' नियुक्त किया'' और खान ए खान की उपाधि प्रदान की ।
- 1556-60 तक बैरम खां का अकबर पर विशेष प्रभाव था। लेकिन 1560 में हज यात्रा के समय बैरम खां की हत्या कर दी गई और अकबर ने बैरम खां की विधवा सलीमा बेगम से विवाह किया। और बैरम खां के पुत्र अब्दुल रहीम को बाद में खानाखाना की उपाधि दी। 1560 से 1562 तक अकबर हरम की महिलाओं के प्रभाव में रहा उसे पेटीकोट शासन काल कहा जाता है।
- अकबर ने 1562 में युद्ध बन्दियों को गुलाम बनाये जाने की प्रथा पर रोक लगा दी।
- 1564 में अकबर ने जजिया कर समाप्त कर दिया। जो हिन्दुओ से लिया जाने वाला धार्मिक कर था।

अकबर की महत्वपूर्ण विजये :-

- अकबर की पहली विजय 1561 में आधम खां के नेतृत्व में मालवा विजय थी। अकबर ने मालवा के शासक बाजवहादुर को पराजित किया।
- 1564 में आसफ खां के नेतृत्व गोडवाना की शासिका रानी दुर्गावती को पराजित किया। रानी वीरनारायण की संरक्षिका थी।
- 1562 में अकबर की अजमेर की शेख मुईनुददीन चिश्ती की दरगाह की पद यात्रा के समय आमेर के शासक भारमल ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। और भारमल ने अपनी जोधाबाई का विवाह अकबर से कर दिया। जिससे जहांगीर पैदा हुआ।
- 1572-73 में अकबर ने गुजरात की विजय किया। गुजरात का अभियान अकबर का सबसे तीव्रगामी आक्रमण था। गुजरात विजय की स्मृति में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुंलद दरवाजा का निर्माण करवाया।
- 18 जून 1576 को हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर के सेनापति मानसिहं ने मेवाड के शासक महाराणा प्रताप को पराजित किया था। महाराणा प्रताप की मृत्यु 1599 को हुई।
- 1585-86 में अकबर की कश्मीर विजय के समय राजा वीरवल मारे गऐ। यह युसुफजाइयों के विरूद्ध आक्रमण था।
- 1593 में अकबर ने अहमद नगर पर आक्रमण किया। इस समय चांद बीबी ने मुगलो की सेना का मुकाबला किया।
- 1601 में अकबर ने असीरगढ के किले को जीता था। यह अकबर की अन्तिम विजय थी।
- इसकी मृत्यु 1605 में आगरा में हुई। इसका मकबरा सिकन्दरा में है।

अकबर के नौरत्न :-

वीरबल :- वीरबल अकबर के दरबार में एक कुशल वक्ता और कवि था। अकबर ने उसे कविराय की उपाधि दी थी। उसके बचपन का नाम महेशदास था। वीरबल एक मात्र हिन्दू राजा था जिसने अकबर के '' दीन ए-इलाही'' धर्म को ग्रहण किया था।

अबुलफजल :- यह अकबर का दरबादी कवि था। उसेन **''अकबर नामा''** और **''आइने-अकबरी''** पुस्तके लिखी। अबुलफजल अकबर के दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था। 1602 में जहॉगीर के निर्देश पर औरछा के बुन्देला सरदार वीर सिहं ने ग्वालियर के पास हत्या कर दी।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

टोडरमल :- टोडरमल ने अकबर के समय भूमि सुधार करने में विशेष योगदान दिया था। उसने 1580 में दहसाला बन्दोबस्त व्यवस्था लागू की।

फैजी :- यह अबुलफजल का बड़ा भाई था। और अकबर के दरबार में राजकवि के पद पर था। उसने भी अकबरनामा पुस्तक लिखी।

तानसेन :- संगीत-सम्राट तानसेन का जन्म ग्वालियर के पास बेहट में हुआ था। तानसेन ने ध्रुपद गायन शैली का विकास किया। इन्होनें मियाँ की तोड़ी, मियां की मलहार, मिया की सांरग आदि पुस्तकें लिखी।

बचपन का नाम -रामतनु पाण्डे

मानसिंह :- आमेर के राजा भारमल के पौंत्र मानसिंह अकबर के मुख्य सेनापति थे।

अब्दुल रहीम खानखाना :- बैरम खां का यह पुत्र उच्च कोटि का विद्वान और कवि था। अकबर ने उसे ''खान-खाना'' की उपाधि दी थी।

मुल्ला दो प्याजा :- यह हुमांयु के समय अरब से भारत आया था।

हकीम हुमाम :- यह अकबर का प्रमुख रसोईया था।

- 1571 में अकबर ने आगरा के स्थान पर फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया।
- 1575 में अकबर ने फतेहफर सीकरी में ''इबादतखाना'' बनवाया। इस ''इबादतखाने'' में धार्मिक विषयों पर वाद विवाद होता था। 1578 में इस इबादत खाने में हिन्दू, ईसाई, जैन, पारसी, सभी धर्म के विद्धानों को आमंत्रित किया गया।
- 1579 में अकबर ने **''मजहर की घोषण''** की । मजहर की घोषणा के बाद अकबर ने **''सुल्तान-ए-आदिल''** की उपाधि धारण की। अब अकबर धार्मिक मामलों में सबसे बड़ा अधिकारी बन गया।
- 1582 में इबादतखाने को वन्द कर दिया गया।
- 1582 में अकबर ने सभी धर्मों के सार के रूप में के नाम से नया धर्म चलाया। इस धर्म का प्रमुख पुरोहित अवुल फजल था।
- दीने इलाही धर्म की स्थापना के पीछे अकबर का उद्देश्य ''सुलह ऐ कुल'' अथवा सार्वभौमिक सहिष्णुता की भावना का प्रसार करना था।
- अकबर ने जैन आचार्य हरिविजय सूरी को ''जगत गुरू'' की उपाधि प्रदान की। अकबर ने जैन आचार्य जिन चन्द्रसूरी को 200 बीघा भूमि दान में दी थी।
- 1583 में अकबर ने **''इलाही सम्वत्''** प्रारम्भ किया।
- अकबर ने चिश्ती सम्प्रदाय को आश्रय प्रदान किया।
- अकबर ने आगरा में लाल किला का निर्माण करवाया। इसके अलावा इसने अजमेर, लाहौर और इलहाबाद में किले बनवायें।
- अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह, जोधावाई का महल, वीरवल का महल का निर्माण करवाया।
- ग्वालियर के राजा मानसिंह के महल की नकल पर आगरा में जहागीर महल का निर्माण करवाया।
- अकबरकालीन इमारते लाल-भूरे पत्थरों की बनी है।
- निजामुद्दीन अहमद ने तबकात-ए-अकबरी, अब्दुल कादिर बदायूंनी ने मंतखाव-उल-तवारीख, फारसी भाषा में लिखी।
- अकबर के समय अनुवाद विभाग की स्थापना की गई। इसका प्रमुख अब्दुल समद था।
- इसके समय ''महाभारत'' का फारसी भाषा में ''रज्मनामा'' के नाम से बदांयूंनी, नकीव खां और अब्दुल कादिर ने अनुबाद किया।
- ''रामायण'' का फारसी भाषा में हाजी इब्राहिम सरहिन्दी ने अनुवाद किया।
- ''अबुलफजल'' ने ''पंचतन्त्र'' का फारसी भाषा में ''अनवर-ऐ-सादात'' के नाम से अनुवाद किया।
- गणित की लीलावती पुस्तक का अनुवाद फैजी ने किया।
- ''तुजके बावरी'' का ''अब्दुल रहीम खानखाना'' ने फारसी भाषा में अनुवाद किया।
- अकबर ने मनसबदारी प्रणाली की शुरूआत की थी। इसके समय मनसबदारों की श्रेणियां 66 थे।
- अब्दुलसमद, दसवंत, बसावन आदि प्रमुख चित्रकार थे।

जहाँगीर :-

- इसका पूरा नाम नुरूद्दीन मुहम्मद जहाँगीर था। जहाँगीर अकबर का पुत्र था। जहांगीर का जन्म फतेहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती के आर्शीवाद से भारमल की पुत्री जोधावाई या मरियम उज्जमानी के गर्भ से हुआ था।
- अकबर ने शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में इसका नाम सलीम रखा था। अकबर इसे शेखू बाबा के नाम से पुकारता था।
- अकबर की मृत्यु के बाद 1605 में आगरा के किले में जहागीर के पुत्र खुसरो ने लाहौर में विद्रोह कर दिया। जिसे दवा दिया गया था।
- सिखों के पाँचवे गुरू अर्जुन देव को जहांगीर ने फाँसी दी।
- इसने 1613-14 में शहजादा खुर्रम के नेतृत्व में मेवाड पर आक्रमण करने के लिये मुगल सेना को भेजा। जिसके परिणाम स्वरूप 1615 में मेवाड के शासक राणा जगत सिंह ने जहाँगीर के साथ संधि कर ली थी।
- 1611 में जहांगीर ने मिर्जा ग्यासबेग की पुत्री मेहरूनिसा के साथ विवाह करके उसे नूरजहां की उपाधि दी। जहाँगीर से पूर्व नूरजहां का विवाह अलीकुली बेग या शेरअफगन से हो चुका था।
- नूरजहां के प्रभाव से जहाँगीर ने नूरजहां के पिता ग्यासवेग को एल्मुदौल्ला की उपाधि दी।
- 1623 में खुर्रम ने जहागीर के खिलाफ विद्रोह किया। इस विद्रोह को महावत खां ने दवाया था।
- 1626 में महावत खां ने जहांगीर के विरूद्ध विद्रोह किया था। इस विद्रोह को जहांगीर, नूरजहां ने दवाया।
- 1627 में जहांगीर की मृत्यु हुई थी।
- जहांगीर का मकबरा लाहौर के पास शाहदरा में है। जो नूरजहां ने बनवाया था।
- जहाँगीर ने न्याय के लिये आगरा के दुर्ग के शाहवुर्ज से लेकर यमुना के तट तक सोने की जंजीर लगवायी थी।
- नूरजहां ने अपनी मां असमतबेगम के साथ मिलकर गुलाब से इत्र निकालने की विधि को खोजा।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- जहांगीर के दरबार में विलियम हाकिन्स और सर टामस रो और एडवर्ड टेरी यात्री आये थे।
- जहाँगीर का शासन काल चित्रकला के लिये स्वर्ण काल माना जाता है। जहाँगीर स्वयं अच्छा चित्रकार था। उसके समय के प्रमुख चित्रकार विशनदास, मंसूर, मनोहर, और अब्दुल हसन प्रमुख थे।
- अस्ताद मंसूर का साइबेरियन सारस का चित्र काफी महत्वूर्ण माना जाता है।
- जहाँगीर के शासन काल में नूरजहां ने आगरा में अपने पिता ऐत्मोद्दोला का मकवरा बनवाया।
- श्रीनगर में निशांत बाग बनवाया था।
- जहांगीर ने फारसी भाषा में अपनी आत्मकथा ''तुजुके-जहांगीरी'' के शाहंजहाँ नाम से लिखी थी जिसे मोतबिद खां ने पूरा किया 1627 में जहांगीर की मृत्यु के बाद शाहजहां गद्दी पर 1628 को बैठा।

शाहजहाँ :-

- शाहजहां का वास्तविक नाम खुर्रम था।
- खुर्रम का जन्म लाहौर में मारवाड़ के शासक मोटाराजा उदय सिंह की पुत्री जगतगोसांई के गर्भ से हुआ।
- 1612 में खुर्रम का विवाह आसफ खां की पुत्री अर्जुमन्दबानो से हुआ। जिसे शाहजहां ने मुमताज महल की उपाधि दी। 1631 में प्रसव पीडा के कारण बुरहानपुर में मुमताज की मृत्यु हुई। जिसकी याद में शाहजहां ने आगरा में ताजमहल का निर्माण करवाया।
- 1617 में जहांगीर ने खुर्रम की शाहजहां की उपाधि दी थी।
- शाहजंहा ने नूरजहां को दोलाख रूपये को पेंशन देकर लाहौर भेजा और यही पर 1645 में उसकी मृत्यु हुई।
- शाजहां के शासन काल में बुन्देलखंड के शासक जुझार सिंह बुन्देला ने विद्रोह कर दिया था।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने के लिये 1632 में उनके व्यापारिक केन्द्र हुगली पर अधिकार कर लिया था।
- शाहजहां की मध्य एशिया की नीति असफल रही।
- शाहजहां के शासन काल में सिखो के 6वें गुरू हरगोविन्द से मुगलों का संघर्ष हुआ। जिसमें सिखों की हार हुई।
- मुगल बादशाहों में सबसे सफल दक्षिण नीति शाहजहां की रही।
- 1636-37 में बीजापुर और गोलकुंडा ने मुगल साम्राज्य क अधीनता स्वीकार की।
- शहजहां के समय दक्षिण भारत की सूवेदारी औरंगजेब को सौपी गयी थी।
- मीर जुमला गोलकुंडा राज्य का प्रधानमंत्री था। जिसने यहां पर कई सुधार किये थे।
- शाहजहां एक ऐसा मुगलबादशाह था जिसके जीवन काल में ही उसके चारों पुत्रों दाराशिकोह, मुराद, शाहशुजा और औरगंजेव में उत्तराधिकार के लिये संघर्ष हुआ।
- 1658 में उत्तराधिकार युद्ध के दौरान औरंगजेब ने ''धरमट और सामूगढ के युद्ध'' में दाराशिकोह को पराजित किया।
- औरगंजेव ने शाहजहाँ को 1658 में आगरा के किले में कैद कर दिया और यही पर 1666 में शाहजहां की मृत्यु हुई और शाहजहां को मुमताज के बगल में दफनाया गया।
- शाहजहां के शासन काल में फ्रांसीसी चिकित्सक वर्नियर और इटली के यात्री मनूची ने भारत की यात्रा की।
- शाहजहां का पुत्र दाराशिकोह कादरी सम्प्रदाय से सम्बंधित था।
- दाराशिकोह धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था।
- दाराशिकोह ने मज्म-उल-बहरीन पुस्तक लिखी।
- दाराशिकोह ने उपनिषदो का सिर्र-ए-अकबर के नाम से फारसी भाषा में अनुवाद किया।
- इसके समय इलाही सम्वत के स्थान पर हिजरी सम्वत प्रारम्भ किया गया।
- शाहजहां का शासन काल स्थापत्य कला के लिये मुगल काल का स्वर्ण काल माना जाता है।
- इसके समय कई महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण हुआ।
- शाहजहां ने आगरा में उस्ताद ईसा खां की देखरेख में ताज महल का निर्माण करवाया।
- ताजमहल का डिजाईन **''उस्ताद अहमद लाहौरी''** ने तैयार किया था।
- ताजमहल का निर्माण 1631 से 1653 तक किया गया।
- शाहजहां ने आगरा के लाल किले में ''दीवाने आम, दीवान-ऐ-खास, शीशमहल, अंगूरी बाग, नगीना मस्जिद मोती मस्जिद, का निर्माण करवाया।
- दिल्ली की जामा मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।
- शाहजहां ने दिल्ली के लाल किले का निर्माण करवाया।
- आगरा के लाल किले में शाहजहां की पुत्री जहांआरा ने जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।
- शाहजहां ने विश्वप्रसिद्ध तख्त-ऐ-ताउस या मयूर सिहांसन का निर्माण करवाया। जिसमें कोहनूर हीरा लगा था।
- शाहजहां के दरबार में जगन्नाथ पंडित को आश्रय मिला था। इन्होंने रस गंगाधर, और गंगा लहरी पुस्तकें लिखी।
- शाहजहां के समय में सुन्दकविराय ने **सुन्दर श्रंगार** और कवि सेनापति ने **कवित्त रत्नाकर** पुस्तके लिखी।
- आगरा में जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहां की पुत्री जहांआरा ने करवाया।
- शाहजहां स्वयं अच्छा गायक था। उसने लाल खां नामक गायक को संरक्षण दिया था।
- उसने रावी नहर का निर्माण करवाया था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

औरंगजेब :-

- इसका जन्म उज्जैन के पास दोहद में मुमताज के गर्भ से हुआ था।
- औरंगजेब ने उत्तराधिकार में युद्ध में सफलता के वाद दो बार राज्य अभिषेक करवाया। 1658 व 1659 में।
- यह एक कटट्र सुन्नी मुसलमान था।
- औरंगजेब को शाहजहां ने आलमगीर की उपाधि दी थी। जिसने सिक्को पर कलमा खुदवाना बंद करवा दिया। उसने फारसी त्यौहार नौरोज का आयोजन बंद करवाया।
- तुलादान और झरोखादर्शन को बंद करवा दिया। उसने संगीत पर प्रतिवन्ध लगा दिया।
- 1679 में औरंगजेब ने हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगा दिया।
- उसने 1679 में बनारस के विश्वनाथ मन्दिर और मथुरा के केशवराय मन्दिर को तुड़वा दिया।
- औरंगजेब को '**जिन्दा पीर**' कहा जाता था।
- इसने सिखो के नवे गुरू तेगवहादुर की हत्या करवादी थी।
- ओरगजेव की मृत्यु 1707 में हुई थी।
- औरंगजेब का मकबरा दौलतावाद में है।
- औरंगजेब का मुगल बादशाओं में सबसे बड़ा साम्राज्य था।
- औरंगजेब के समय कई विद्रोह हुये।
- 1669-70 में गोकुल के नेतृत्व में मथुरा के जाट किसानो ने विद्रोह किया।
- 1686 में जाटो ने राजाराम और उसके भतीजे चूडामन के नेतृत्व में विद्रोह किया।
- राजाराम ने अकबर के मकबरे की लूटपाट कर ली।
- 1672 में पंजाब में नरनोल के सतनामियों ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह किया था।
- बुन्देलखंड के चम्पत राय और छत्रशाल वुन्देला ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह किया था।
- औरंगजेब ने अकबर की राजपूतों के प्रति मैत्री की नीति का त्याग करके उनके साथ संघर्ष किया।
- 1679 में मारवाड के राजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अजीत सिंह और दुर्गादास राठौर ने औरंगजेब के खिलाफ संघर्ष किया। कर्नल टोड ने दुर्गादास को राजपूतों का यूलीसेस कहा जाता है। यूलीसेस एक यूनानी योद्धा था।
- औरंगजेब भारत को दारूल हर्ब को दारूलइस्लाम में वदलने की नीति का अनुसरण किया।
- औरंगजेब ने दिल्ली में मोती मस्जिद का निर्माण करवाया था। लाहौर में बादशाही मस्जिद बनायी।
- औरंगजेब ने ओरंगाबाद में अपनी पत्नी रबिया उद्दुर्रानी का मकबरा बनवाया था जिसे बीबी का मकबरा कहा जाता है। इसे द्वितीय ताजमहल भी कहा जाता है। यह काला संगमरमर का बना है। इसलिये इसे काला ताजमहल भी कहा जाता है।

सिख धर्म :-

- सिख सम्प्रदाय की स्थापना गुरूनानक ने की थी।
- सिखों के चौथे गुरू रामदास को भूमिदान की अकबर ने दी थी। जहां पर रामदास ने अमृतसर नगर की स्थापना की।
- सिखों के पांचवे गुरू अर्जुन देव ने सिख धर्म के पवित्र ग्रन्थ **''गुरूग्रन्थ साहिब''** या **''आदिग्रन्थ''** का संकलन किया। उन्होंने अमृतसर में स्वर्णमन्दिर गुरूद्वारा का निर्माण करवाया।
- सिखों के नवे गुरू तेगवहादुर की औरंगजेब ने दिल्ली में कैद कर इस्लाम धर्म स्वीकार न करने के कारण हत्या कर दी।
- सिखो के दसवे एवं अन्तिम गुरू गुरूगोविन्द सिंह ने औरंगजेब के खिलाफ संघर्ष किया।
- औरंगजेब की दक्षिण नीति उसके एवं मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण रही। वह 1682 से 1707 तक 25 वर्ष तक दक्षिण में रहा।

गुरू गोविन्द सिंह :-

- 1699 में ''खालसा पंथ'' की स्थापना की।
- 1708 में किसी अफगान सरदार द्वारा नादेंड नामक स्थान पर 1708 में गुरू गोन्दिसिंह की हत्या कर दी गई।

औरगंजेब के उत्तराधिकारी :-

1. बहादुर शाह-I (1707-12)

- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीनों पुत्रों मुअज्जम, आजम, और कामबख्श के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ। इसमें मुअज्जम की विजय हुई।
- मुअज्जम बहादुर शाह-I के नाम से गद्दी पर बैठा।
- इसने शम्भाजी के पुत्र शाहू को मुगल कैद से आजाद कर दिया था।
- इसने जजिया कर को पुनः समाप्त कर दिया था।
- इसको ''शाहे बेखबर'' के नाम से जाना जाता है।

2. जहाँदार शाह (1712-13)

- जहांदार शाह जुल्फिकार खाँ के सर्मथन से बादशाह बना। जहाँदार शाह दुर्बल और चरित्रहीन बादशाह था।
- इसने आमेर के राजा जयसिंह को ''मिर्जाराजा सवाई'' की उपाधि दी थी।
- वह एक वैश्या लालकुँअर के प्रभाव में था। जहांदार शाह को ''लम्पट मूर्ख'' कहा जाता है।

3. फर्रूखसियर

- यह सैयद बन्धुओं के सहयोग से जहाँगीर शाह और जुल्फिकार खां के बाद बादशाह बना।
- उसने सैयद वन्धुओं में सैयद अल्दुल्ला खां को ''वजीर'' और हुसैन अली खां को अपना ''मीर बक्शी'' बनाया।
- 1715 में फर्रूखसियर ने सिखो के नेता बन्दा बहादुर को कैद करके मरवा दिया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- 1717 में फर्रूखसियर ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को बंगाल में निशुल्क व्यापार का अधिकार दिया था।
- फरूखसियर के बाद सैयद बन्धुओं ने रफी-उद-दरजात और रफी-उद-दौला (शाहजहा-II) को बादशाह वनाया।
- इसलिये सैयद बन्धुओं को किंग मेकर (सम्राट निर्माता) कहा गया।

4.मुहम्मद शाह रंगीला (1719-48)

- सैयद बन्धुओं ने मुहम्मद शाह को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया।
- उसकी विलासतापूर्ण प्रवृति के कारण उसे ''रंगीला'' कहा जाता है।
- इसने सैयद बधुओं को मरवा दिया।
- मुहम्मद शाह ने निजाम-उल-मुल्क को अपना वजीर नियुक्त किया। जिसने बाद में स्वतन्त्र हैदराबाद राज्य की नीव रखी।
- मुहम्मद शाह के शासन काल में शहादत खां ने अवध में, मुर्शिकली खां ने बंगाल राज्य की नीवं रखी।
- उसके समय 1737 में ''मराठा पेशवा वाजीराव प्रथम'' ने दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयास किया।
- 1739 में नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण करके ''कत्लेआम'' किया। और दिल्ली में लूटपाट करने के बाद वह दिल्ली से मयूर सिहांसन और कोहिनूर हीरा लूट कर ले गया। करनाल के युद्ध में मुहम्मदशाह पराजित हुआ।

5. अहमद शाह :-

- यह मुहम्मद शाह का पुत्र था। इसने अवध के सूबेदार सफदर जंग को अपना वजीर बनाया।
- इसके शासन काल में 1748 में अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था।
- अहमद शाह अब्दाली ने 1748 से 1767 के बीच 7 बार भारत पर आक्रमण किया।

6. आलम गीर-II :-

- इसके समय वास्तविक शक्ति वजीर गाजीउद्दीन फिरोज जंग के हाथों में थी।
- इसने बादशाह को हटाकर उसकी हत्या करके पुत्र अलीगौहर को शाहआलम-II के नाम से बादशाह वनाया।

7. शाह आलम II (1759-1806) :-

- इसने 1764 में बंगाल के नवाव मीर कासिम और अवध के नवाव शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध बक्सर का युद्ध लड़ा।
- इस युद्ध में पराजित होने के बाद कई वर्षों तक शाह आलम-II इलाहाबाद में ईष्ट इडिया के संरक्षण में रहा।
- 1772 में वह मराठाओं के सहयोग से दिल्ली लौटा।
- इसके ही शासन काल में 1803 में मराठाओं ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- इसके ही शासन काल में 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध में अहमदशाह अब्दाली ने मराठाओं को पराजित किया।

8. अकबर-II (1806-1837) :-

- यह शाह आलम-II का पुत्र था। यह अंग्रेजों का पेन्शनर था।
- इसने ''राम मोहन राय'' को ''राजा'' की उपाधि दी थी।

9. बहादुर शाह-II :-

- इसे ''जफर'' की उपाधि मिली थी। यह अंतिम मुगल बादशाह था।
- 1857 के विद्रोह में भाग लेने के कारण इन्हें बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया गया। और वही पर 1862 में उनकी मृत्यु हो गई। यही पर इनकी कब्र है।
- 1857 में मुगल बादशाह का पद समाप्त कर दिया गया।

मुगल प्रशासन :-

- मुगल शासन काल बादशाह खलीफा के अधिकार को नहीं मानता था। उसे सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वादशाह के बाद वकील का पद प्रमुख था।
- अकबर के समय बैरम खां इस पद पर था।
- वजीर वित्तीय मामलों को देखता था।
- **मीर वख्शी :-** सेना की देख रेख करता था।
- **मीर समां :-** बादशाह के घरेलू मामलों का प्रमुख था।
- **सद्र-उस-सुदूर :-** यह धार्मिक मामलो का प्रमुख था।
- **मुहतसिब :-** ये जनसाधारण के नैतिक आचरण का निरीक्षण करता था। औरंगजेब ने इसे मन्दिरों को तुडवाने का निर्देश दिया था।
- **मीर आतिश :-** तोपखाना का प्रमुख।
- **दरोगा-ए-डाक चौकी :-** सूचना विभाग का प्रमुख।

प्रान्तीय प्रशासन :-

- प्रान्तों को सूबा कहा जाता था और सूबा के प्रमुख को सूबेदार कहा जाता था।
- गांव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- मुगल काल में सैनिक व्यवस्था मनसवदारी प्रथा पर आधारित थी। जिसे अकबर ने प्रारम्भ किया था।
- सबसे अधिक हिन्दू मनसबदार औरंगजेब के शासन काल में थे।
- भूमिकर मुगल साम्राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था।
- अकबर ने भूराजस्व व्यवस्था का निर्माण किया था।
- अकबर ने भूराजस्व के लिये ''दहशाला'' पद्धति को अपनाया।
- अकबर ने भूमि की पैमाईश के लिये इलाहीगज का प्रयोग किया था।
- मुगल काल में सोने, चांदी और तांवे के सिक्के चलाये गये।
- चांदी के सिक्के - रूपये
- सोने के सिक्के - मोहर
- तांबे के सिक्के - दाम
- अकबर ने जलाली नाम का चौकोर सिक्का चलाया।
- अकबर ने सोने का सिक्का इलाही सिक्का चलाया।
- सबसे बडा सोने का सिक्का शंसव अकबर द्वारा चलाया गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

मुगल कालीन कला और संस्कृति :-

- अकबर ने सती प्रथा और बाल विवाह को रोकने का प्रयास किया।
- जहांगीर ने कश्मीर में शालीमार बाग का निर्माण करवाया।
- दिल्ली में मोती मस्जिद का निर्माण ओरंगजेब ने करवाया।
- औरंगजेब ने अपनी पत्नी रबिया दुर्रानी का का मकबरा ओरंगाबाद में बनवाया जिये द्वितीय ताजमहल कहा जाता है।
- हुमांयू अपने साथ ईरान से दो चित्रकार मीर सैयद अली और अब्दुल समद को साथ लाया था।

मध्यकाल के महत्वपूर्ण तथ्य :-

- अलाउद्दीन खिलजी ने अमीर खुसरो को ''तूतिये हिन्द'' की उपाधि दी थी।
- शाहजहां ने कश्मीर में ''निशान्तबाग'' का निर्माण करवाया।
- दिल्ली नगर की स्थापना तोमरों ने 736 A.D. में की।
- पुरी का जगन्नाथ मन्दिर 11वीं शताब्दी में ''अन्नत वर्मन'' ने बनवाया था।
- ''हुमायूनामा'' बावर की पुत्री ''गुलवदन बेगम'' ने लिखा था।
- जहांगीर ने अपनी आत्मकथा ''तुजके जहांगीरी'' फारसी भाषा में लिखी।
- अमीर खुसरों का जन्म उत्तरप्रदेश के एटा जिले के पटियाली गांव में हुआ था। यह निजामुद्दीन ओलिया का शिष्य था।
- इसे बलवन से लेकर ग्यासुदीन तुगलक के समय तक के सुल्तानों का संरक्षण प्राप्त था।
- अमीर खुसरों ने तम्बूरा और वीणा को मिलाकर संगीत के क्षेत्र में सितार का आविष्कार किया।

मराठा साम्राज्य

शिवाजी :-

- मराठा साम्राज्य की स्थापना शिवाजी ने की थी।
- शिवाजी का जन्म पूना के पास शिवनेर में 20 अप्रैल 1627 को हुआ था।
- इनके पिता शाहजी भौसंले इनकी मां जीजाबाई को छोडकर दूसरी पत्नी तुकोबाई मोहते के साथ रहते थे।
- शिवाजी के जीवन पर सबसे अधिकर प्रभाव उनकी मां जीजाबाई का पड़ा।
- शिवाजी अपने गुरू व संरक्षक दादा कोणदेव से प्रभावित थे।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में शिवाजी के आचरण पर समर्थ गुरू रामदास का काफी प्रभाव था।
- शाहजी ने शिवाजी को अपनी पूना की जागीर देकर बीजाजुर राज्य में नौकरी कर ली।
- शिवाजी का विवाह साइबाई निम्वालकर के साथ हुआ।
- शिवाजी की पहली विजय 1644 में बीजापुर के तोरण के किले पर थी।
- 1668 में शिवाजी ने पुरन्दर के किलो को जीता।
- 1656 में ''रायगढ़''को अपनी राजधानी बनाया।
- शिवाजी का पहली बार मुगलों से मुकावला हुआ 1657 में हुआ था।
- 1659 में शिवाजी ने बीजापुर के सेनापति अफजल खां की हत्या कर दी।
- 1663 में शिवाजी ने मुगल सेनापति शाईस्ता खां को पराजित किया।
- 1664 में शिवाजी ने सूरत को लूटा जो मुगलो का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था।
- 1665 में औरंगजेब के सेनापति मिर्जाराजा जयसिहं ने शिवाजी को एक युद्ध में पराजित किया। इसके बाद दोनों के बीच **पुरन्दर की सन्धि** हुई।
- इस सन्धि के बाद शिवाजी को कई किलें मुगलों को सौंपने पड़े।
- 1666 में शिवाजी आगरा दरबार में मुगल बादशाह औरंगजेब से मिलने गये। लेकिन वहां पर उनको उचित सम्मान नहीं मिला और उन्हें वहां पर कैद कर लिया गया। लेकिन वे वहां से भाग आये।
- 1670 में शिवाजी ने सूरत को दुवारा लूटा।
- 1674 में शिवाजी ने काशी के प्रसिद्ध पं. गंगाभट्ट द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया। और छत्रपति की उपाधि धारण की।
- 1680 में 53 वर्ष की अवस्था में शिवाजी की मृत्यु हुई।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

शम्भाजी :-

- ये शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र थे।
- शम्भाजी ने संस्कृत के महान विद्वान कविकलश को अपना मंत्री नियुक्त किया।
- औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को शरण देने के आरोप में शम्भाजी को मुगल सेना के आक्रमण का सामना करना पड़ा।
- 1689 में मुगल सेना ने संगमेंश्वर के युद्ध में शम्भाजी को पराजित कर दिया कविकलश सहित उसकी हत्या कर दी।
- शम्भाजी की विधवा पत्नि येसूबाई और उसके पुत्र शाहू जी को मुगलों द्वारा बन्दी बनाकर रखा गया।

राजाराम :-

- शिवाजी का दूसरा पुत्र राजाराम शम्भाजी की मृत्यु के बाद 1689 में शासक बना।
- राजाराम ने सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
- 1689 से 1707 में राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी पत्नि ताराबाई ने अपने पुत्र शिवाजी-II को गद्दी पर बैठाकर सघंर्ष जारी रखा।

शाहूजी :-

- 1707 में मुगल बादशाह बहादुर शाह-I के समय शाहूजी कैद से छूटकर आया। इसके बाद 1707 में खेडा के युद्ध में शाहू ने ताराबाई
- को पराजित किया और सतारा में अपना राज्याभिषेक करवाया।
- शाहू ने 1713 में बालाजी विश्वनाथ को अपना पेशवा बनाया। उसके बाद मराठे दक्षिण भारत में ही नही अपितु उत्तर भारत में

समीक्षा इंस्टीट्यूट

प्रवेश कर गये और वे उत्तर भारत की सबसे बडी शक्ति बन गये।

शिवाजी का प्रशासन :-

- शिवाजी ने विशाल मराठा साम्राज्य की स्थापना करने के बाद कुशल प्रशासन की स्थापना की।
- शिवाजी की सहायता करने के लिये आठ मंत्रियों की एक परिषद थी। जिसे ''अष्टप्रधान'' कहा जाता था।
- इस अष्टप्रधान में पेशवा का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता था।
- शिवाजी के समय साम्राज्य को चार प्रान्तों में बांटा गया था।
- शिवाजी के समय राजस्व के प्रमुख स्रोत के रूप में भूमिकर, चौथ और सरदेशमुखी थे।
- शिवाजी के समय भूमि मापन के लिये काठी और मुठी का प्रयोग किया जाता था।
- शिवाजी के समय गांव का लगान अधिकारी पटेल होता था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपियों का आगमन -

पुर्तगाली

- भारत में आनेवाला प्रथम यूरोपीय व्यापारी पुर्तगाल का निवासी **वास्कोडिगामा** था। जो समुद्री मार्ग से 17 मई 1498 को भारत के केरल प्रान्त में कालीकट बन्दरगाह पर पहुंचा। यहां पर कालीकट के शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया।
- वास्कोडिगामा ने भारत और यूरोप के बीच समुद्री मार्ग की खोज की।
- **फ्रांसिस्को डी अल्मीडा** भारत में प्रथम पुर्तगाली वायसराय था। जो 1505 से 1509 तक भारत में रहा।
- भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक अलफ्रांसो-द-अल्वुकर्क था।
- अल्वूकर्क 1509 से 1515 तक भारत में पुर्तगालियों का वायसराय बनकर रहा।
- पुर्तगाली भारत में सबसे पहले आये और भारत से सबसे बाद में गये। 1961 मे इन्होने गोवा को स्वतंत्र किया।

डच

- ये व्यापारी भारत में हॉलेण्ड से आये थे।
- भारत में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1602 में हुई थी।
- डचों ने भारत में सर्वप्रथम् अपनी कोठी (Factory) 1605 में **मुसलीपटट्नम** में स्थापित की थी।
- डचों का अंग्रेजों के साथ 1759 में वेदरा के युद्ध में पराजय हुई। इसके बाद डचों का भारत में व्यापार समाप्त हो गया।

अंग्रेज

- इंग्लैण्ड की महारानी ऐलिजाबेथ-I के समय में 31 दिसम्बर1600 को **ईस्ट इंडिया कंपनी** की स्थापना की।
- इस समय **मुगल बादशाह अकबर** था।
- ब्रिटेन के सम्राट जेम्स प्रथम ने 1608 में **कैप्टन हॉकिन्स** को अपना दूत बनाकर मुगल बादशाह जहांगीर से सूरत में कोठी स्थापित करने की आज्ञा मांगी।
- 1613 में जहांगीर ने एक फरमान द्वारा अंग्रेजों को सूरत में स्थायी रूप से कोठी स्थापित करने की अनुमति दी।
- 1615 में इंग्लैण्ड के सम्राट जेम्स प्रथम् का एक **राजदूत सर टॉमस रो** जहांगीर के दरबार में आया।
- 1639 में **फ्रांसिस डे** ने चन्द्रगिरि के राजा से मद्रास को पट्टे पर लेकर वहां पर "Fort sant gorge" नाम का किला बनवाया।
- 1690 में **जॉब चारनॉक** ने कलकत्ता नगर की स्थापना की और वहां पर **"फोर्ट विलियम"** का निर्माण करवाया।
- 1717 में मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने अंग्रेजो को रियात के तौर पर 3000 रुपये वार्षिक देकर बंगाल में निःशुल्क व्यापार का अधिकार पत्र दे दिया।

फ्रांसीसी

- भारत में फ्रांसीसियों का आगमन फ्रांस से हुआ था।
- भारत में फ्रांसीसियों की पहली कोठी 1668 में सूरत में स्थापित की गई थी।
- फ्रांसीसी कम्पनी के **गर्वनर डूप्ले** ने भारत में फ्रांसीसी प्रभाव को वढाया था।
- 1760 में **बांडीवाश के युद्ध** में अंग्रेजो ने फ्रांसीसियों को अन्तिम रुप से पराजित कर दिया था।

बंगाल पर अंग्रेजो का अधिकार :-

प्लासी का युद्धः- 23 जून 1757 को अंग्रेज सेनापति लॉर्ड क्लाईव ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी के युद्ध में पराजित कर दिया था। इस युद्ध में मीरजाफर अपनी सेना लेकर भाग गया था।

- इस युद्ध के बाद **मीरजाफर को बंगाल का नवाब** बनाया गया।
- इस युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजी राज्य की शुरूआत हुई।
- 1760 में अंग्रेजो ने मीरजाफर को हटाकर उसके दमाद **मीरकासिम को बंगाल का नवाब** बनाया।
- मीरकासिम एक योग्य शासक था। उसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित की। और उसने अपनी सेना को फ्रांसीसियों द्वारा प्रशिक्षित करवाया।

बक्सर का युद्ध :- इस युद्ध का तात्कालिक कारण बंगाल के नवाब मीरकासिम द्वारा बंगाल में चुंगी कर का समाप्त कर देना था। उसने ऐसा इसलिए किया था, कि अंग्रेज अपने दस्तक (free pass) दुरूपयोग कर रहे थै।

- इस युद्ध में बंगाल के नवाब की मीरकासिम की **अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल बदशाह शाह आलम-2** सहायता कर रहे थे।
- अंग्रेज सेनापति **हेक्टर मुनरो** ने 1764 में बक्सर के युद्ध में तीनो सेनाओं को पराजित कर दिया था। इस युद्ध के बाद मीरकासिम के स्थान पर पुनः मीरजाफर को अंग्रेजो ने बंगाल का नवाब बनाया।

प्रथम् आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82) :-

- यह युद्ध 1775 से 1782 के बीच हुआ, इस युद्ध के दौरान 1775 में रघुनाथ राव ने अंग्रेजो के साथ **सूरत की सन्धि की।**
- इसी युद्ध के समय अंग्रेज और पेशवा के बीच 1776 में **पुरंदर की सन्धि** हुई।
- 1782 में महादजी सिंधिया के प्रयासों से अंग्रेजो और पेशवा के बीच **सालबाई की संधि** हुई और प्रथम् आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हो गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-06) :-

- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध ब्रिटिश गवर्नर लॉर्ड वेलेजली द्वारा मराठाओं की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप करने के कारण यह युद्ध प्रारम्भ हुआ।
- इस युद्ध के दौरान सिंधिया ने अंग्रेजो के साथ **"सुरजीअर्जुन गांव" की संधि** भौंसले ने **"देवगांव" की संधि** और होलकर ने **"राजघाट" की संधि** की।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18) :-

- इस युद्ध के दौरान 1818 में पेशवा ने अंग्रेजो के सामने समर्पण कर दिया और अंग्रेजो ने पेशवा का पद समाप्त करके वाजीराव-2 को पेंशन देकर बिठूर भेज दिया।

आंग्ल-सिख युद्ध -

- **महाराजा रणजीत सिंहः-** महाराजा रणजीत सिंह ने 1796 में शासन का दायित्व ग्रहण किया।
- रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- 1809 में चार्ल्स मेटकॉफ और रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि हुई। जिसके तहत सतलज नदी को दोनो के बीच सीमा मान लिया गया।
- 1841 में अफगानिस्तान के शासक शाहशुजा ने रणजीत सिंह को विश्व प्रसिद्ध कोहनूर का हीरा दिया था।

प्रथम् आंग्ल-सिख युद्ध :-

- यह युद्ध 1845- 46 तक चला, इस युद्ध के बाद सिखों को 1846 में **लाहौर की संधि** पर हस्ताक्षर करने पड़े।

द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49) :-

- इस युद्ध में अंग्रेजो ने सिखों को पराजित करके 1849 में लॉर्ड डलहौजी ने पँजाब राज्य को अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित कर लिया था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास

1857 की क्रांति -

- 1857 की क्रांति भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।
- इस क्रान्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सैनिक आदि कारण थे।
- इस क्रान्ति का तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूसों को माना जाता है।
- इस क्रान्ति की शुरुआत **10 मई 1857** को मेरठ के सैनिकों द्वारा की गई थी।
- इससे पहले 29 मार्च 1857 को बैरकपुर (पं. बंगाल) छावनी के 34वीं NI रेजीमेन्ट के **सैनिक मंगल पाण्डे** ने अपने सार्जेन्ट की गोली मारकर हत्या कर दी। मंगल पाण्डे को फांसी दे दी गई।
- 11 मई को मेरठ के सैनिकों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। इन सैनिकों ने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को क्रान्ति का नेता घोषित किया।
- दिल्ली में क्रान्ति का वास्तविक नेतृत्व बख्त खां ने किया था।
- लखनऊ में बेगम हजरत महल, कानपुर में नाना सहाब पेशवा, झांसी और ग्वालियर में रानी लक्ष्मी बाई और तात्या टापे, इलाहाबाद, में लियाकत अली, बरेली में खान बहादुर खां और जगदीशपुर (बिहार) में कुंअर सिंह ने, फतेहपुर में अजीमुल्ला ने क्रांति का नेतृत्व किया। इस क्रान्ति के दमन के दौरान बेगम हजरत महल और नाना सहाब पेशवा नेपाल भाग गए थे।
- रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर में अंग्रेज सेनापति **सर ह्यूरोज** से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त किया।
- सर ह्यूरोज ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा था, कि भारतीय ''क्रान्तिकारियों में यह अकेली मर्द है।''
- इस क्रान्ति के दौरान बहादुर शाह जफर को गिरफ्तार करके रंगून भेज दिया गया। यहीं पर 1862 में इनकी मृत्यु हो गयी थी।
- इस क्रान्ति के दौरान ग्वालियर के सिंधिया आगरा भाग गये।

क्रान्ति के परिणाम -

- इस क्रान्ति के बाद भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी के स्थान पर ब्रिटिश शासन का अधिकार हो गया और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का प्रमुख गर्वनर जनरल के स्थान पर **''वायसराय''** होने लगा।
- इस क्रान्ति को वीर सावरकर ने **''भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम''** बताया।
- डिजरायली ने इसे **''राष्ट्रीय विद्रोह''** कहा था।
- सर जॉन लॉरेन्स और सीले ने इसे **''सैनिक विद्रोह''** कहा था।
- T.R. Homes ने ''सभ्यता और बर्बता के बीच युद्ध'' कहा था।
- James outdram and W.Talior ने ''अंग्रेजों के विरूद्ध इसे हिन्दू मुसलमानों का षडयन्त्र'' कहा था।

सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन -

ब्रह्म समाज

- 19वी शताब्दी को भारत में सामाजिक और धार्मिक पुर्नजागरण की शताब्दी माना गया है।
- भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन को शुरू करने का श्रेय **राजा राम मोहन राय** को जाता है।
- राजा राम मोहन राय को भारतीय पुर्नजागरण का जनक एवं आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है।
- राजा राम मोहन राय ने **''आत्मीय सभा''** की स्थापना 1815 में की।
- राजा राम मोहन राय ने 1825 में कलकत्ता में वेदान्त कॉलेज की स्थापना की।

समीक्षा इन्स्टीट्यूट

- राज राम मोहन राय ने उपनिषदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इनको भारत में **पत्रकारिता का जन्मदाता** कहा जाता है।
- इन्होंने बगला पत्रिका **''सम्वाद कौमुदी''** एवं फारसी पत्रिका **''मिरात-उल-अखबार''** समाचार पत्र का सम्पादन किया।
- इन्होंने 20 अगस्त 1828 को कलकत्ता में **ब्रह्म समाज** की स्थापना की। ब्रह्म समाज हिन्दू धर्म का प्रथम सुधार आन्दोलन था।
- ब्रह्म समाज ने सती प्रथा, बहु विवाह, बाल विवाह, जातिवाद और अस्पृश्यता आदि को समाप्त करने का प्रयास किया।
- इनके प्रयासों से ही 1829 में सती प्रथा को अवैध घोषित किया गया।
- राजा राम मोहन राय के द्वारा मूर्ति पूजा, अवतारवाद, ''बहुदेववाद और धार्मिक कर्मकांड आदि का विरोध किया गया।
- राजा राम मोहन राय ने एकेश्वरवाद में विश्वास व्यक्त किया।
- राजा राम मोहन राय की 1833 में इग्लैण्ड के शहर ब्रिस्टल में मृत्यु हुई थी।
- बाद में **देवेन्द्र नाथ टैगोर** ने ब्रह्म समाज को आगे बढ़ाया। इन्होंने केशव चन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशव चन्द्र सेन में मतभेद हो जाने के बाद 1865 में केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज से बहार निकाल दिया। जिससे ब्रह्म समाज में विभाजन हो गया।
- केशव चन्द्र सेन ने **''भारतीय ब्रह्म समाज''** और देवेन्द्र नाथ टैगोर ने **''आदि ब्रह्म समाज''** की स्थापना की।
- केशवचन्द्र सेन द्वारा 1878 में अपनी 13 वर्षीय पुत्री का बाल विवाह कूच बिहार (पं. बंगाल) के राजा के साथ कर दिया था। जिससे केशव चन्द्र सेन के अधिकतर अनुयायी ने अलग होकर **'साधारण ब्रह्म समाज''** की स्थापना की।
- देवेन्द्रनाथ टैगोर ने 1839 में **'तत्वबोधिनी सभा'** की स्थापना की। इस सभा का मुख्य उद्देश्य धर्म के वास्तविक तत्व की खोज व उपनिषदों के ज्ञान तथा भारत के अतीत के सुव्यवस्थित अध्ययन को प्रोत्साहन देना था।

प्रार्थना समाज -

- प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में की थी। इसके प्रमुख नेता **महादेव गोविन्द रानाडे और N.G. चन्द्रावरकर** थे।
- प्रार्थना समाज द्वारा जाति प्रथा और छुआछूत का विरोध किया गया।
- इन्होंने विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया।

आर्य समाज -

- आर्य समाज की स्थापना 1875 में **स्वामी दयानंद सरस्वती** द्वारा बम्बई में की गई थी।
- दयानंद सरस्वती का वास्तविक नाम मूल शंकर था। इनका जन्म गुजरात के मोरबी नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- इन्होंने मथुरा में **स्वामी विरजानन्द** से वैदिक धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।
- इन्होंने मूर्ति पूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद, पशु बलि, धार्मिक कर्मकांडो आदि का विरोध किया।
- इन्होंने छुआछूत और जातिप्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों का विरोध किया।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों को ईश्वरी ज्ञान मानते हुए **''वेदो की ओर लौटो''** का नारा दिया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती नें हिन्दी भाषा में **''सत्यार्थ-प्रकाश''** पुस्तक लिखी। इसे आर्य समाज की बाईबिल कहा जाता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती देशी राज्य और स्वदेश और देशभक्ति के प्रबल सर्मथक थे।
- सबसे पहले ''स्वराज'' शब्द का प्रयोग किया।
- वे बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बेहतर मानते थे।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **''शुद्धि आन्दोलन''** चलाकर उन लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया जिन्होंने किसी कारणवश इस्लाम धर्म या ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था।
- स्वामी दयानंद की मृत्यु के बाद इनके नाम पर D.A.V. स्कूल और कॉलेज स्थापित किये।
- स्वामी श्रृद्धानन्द सरस्वती ने 1902 में हरिद्वार में **गुरुकुलकांगड़ी** विद्यालय की स्थापना की।
- लाला हंसराज, लाल लाजपत राय, बालगंगा धर तिलक जैसे लोग आर्य समाज से जुडे हुये थे।

रामकृष्ण मिशन -

- रामकृष्ण मिशन की स्थापना **स्वामी विवेकानन्द** ने कलकत्ता के पास बैलूर मठ में 1896 में की।
- स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे।
- रामकृष्ण परमहंस कलकत्ता में दक्षिणेश्वर काली माँ के मंदिर के पुजारी थे। इन्होंने मूर्ति पूजा को ईश्वर की प्राप्ति का साधन माना।
- स्वामी विवेकानन्द का जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था। इनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था।
- इन्होंने 1893 में अमेरिका के **शिकागो नगर में सर्वधर्म सम्मेलन** में विश्व प्रसिद्ध भाषण दिया था।
- इनकी मृत्यु 1902 में हुई थी।
- रामकृष्ण मिशन का वास्तविक मुख्यालय कन्याकुमारी में है।
- 1895 में इन्होंने ''वेदान्त सोसायटी'' की स्थापना की।

थियोसोफिकल सोसायटी -

- इसकी स्थापना 1875 में अमेरिकी कर्नल HS ऑल्काट और रूसी मैडम H.P. व्लावत्स्की ने न्यूयार्क में की थी। बाद में 1886 में इसका मुख्यालय चेन्नई के पास अडयार में स्थानान्तरित कर दिया गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- संस्था के प्रचार-प्रसार का सबसे अधिक श्रेय **ऐनीवेसेन्ट** को दिया जाता है।
- ऐनीवेसेन्ट 1891 में भारत आयी और वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर पूर्णतः भारतीय बन गई।
- ऐनीवेसेन्ट ने 1896 में बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बना। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में मदन मोहन मालवीय का विशेष योगदान है।

यंग बंगाल आन्दोलन

- इसकी स्थापना **हेनरी विवियन डेरोजियो** ने 1826 में कलकता में की थी। वे कोलकाता के हिन्दू कॉलेज में प्राध्यापक थे।
- वे अपने शिष्यों को स्वतंत्र विवेक से सोचने, समानता और स्वतंत्रता से प्रेम करना सिखाते थे।
- इन्होंने ''**ईस्ट इण्डिया**'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- विवियन डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

मुस्लिम समाज सुधार आंदोलन

बहावी आंदोलन -

- इस आंदोलन को भारत में प्रचारित करने का श्रेय **सैय्यद अहमद बरेलवी** को दिया जाता है।
- इस आंदोलन द्वारा ईस्लाम धर्म को पाश्चात्य विचारों के प्रभाव से बचाये रखने का प्रयास किया है।
- इस आंदोलन का प्रमुख केन्द्र पटना था।

अलीगढ़ आंदोलन -

- इसका प्रमुख केन्द्र अलीगढ़ था।
- इसके संस्थापक **सर सैय्यद अहमद खाँ** थे। इसके अलावा इस आंदोलन के प्रमुख नेता नजीर अहमद, चिराग अली, अलताफ हुसैन थे।
- सर सैय्यद अहमद खाँ ने मुस्लिम समाज को आधुनिक बनाने और मुस्लिम समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिये मुसलमानों को पाश्चात्य सभ्यता गृहण करने के लिये प्रेरित किया।
- उन्होंने 1875 में अलीगढ़ में ''एंग्लो-मोहम्डन ओरियंटल कॉलेज'' की स्थापना की जो आगे चलकर 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में सामने आया।
- सर सैय्यद अहमद खाँ ने **'तहजीब-उल-अखलाक'** पत्रिका का सम्पादन किया।
- उन्होंने कुरान पर टीका लिखा।

रहनुमाई माजदयासन सभा -

- रहनुमाई माजदयासन सभा की स्थापना 1851 में **दादा भाई नौरोजी** द्वारा मुम्बई में की गई थी।
- इसका उद्देश्य पारसी धर्म व समाज में सुधार करना था। दादा भाई नौरोजी ने गुजराती भाषा में '**रस्तगोफ्तार** नामक पत्र का प्रकाशन किया।

सत्य शोधक समाज -

- इसकी स्थापना **ज्योतिबाफुले** ने महाराष्ट्र में की थी। 1873 में इन्होंने ''**गुलामगीरी**'' पुस्तक प्रकाशित की।

अखिल भारतीय हरिजन संघ -

- इसकी स्थापना 1932 में महात्मा गांधी द्वारा की गई थी। आत्म सम्मान आन्दोलन
- तमिलनाडु के दलित नेता **ई.वी. रामास्वामी पेरियार** ने 1925 में इस आन्दोलन की स्थापना की।
- इन्होंने बलात मंदिरों में प्रवेश व ब्राह्मणों को अपमानित करने का कार्य किया।
- मनुस्मृति को जलाया और देवी-देवताओं की मूर्तियों का अपमान करने का भी कार्य किया।
- अम्बेडकर ने 1924 में **बहिष्कृत हितकारिणी सभा** की स्थापना की।

काँग्रेस पार्टी -

- कांग्रेस पार्टी की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को एक रिटायर्ड अंग्रेज अधिकारी **ऐलन ऑक्टोवियन ह्यूम** (A.O. Hume) द्वारा की गई थी। जो कांग्रेस के प्रथम सचिव भी थे। कांग्रेस का पहला अधिवेशन 1885 में मुम्बई में व्योमेशचन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ।
- इस अधिवेशन में कुल 72 सदस्यों ने भाग लिया।
- A.O. Hume ने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के महामंत्री पद को संभाला। जिस पर 1907 तक रहे।
- काँग्रेस पार्टी का प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष **बदरुद्दीन तैयबजी** को 1887 के मद्रास अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया।
- काँग्रेस पार्टी का प्रथम यूरोपीय अध्यक्ष **जॉर्ज यूले** था। जो 1888 में इलाहाबाद अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया।
- काँग्रेस पार्टी की प्रथम महिला अध्यक्ष **ऐनीवेसेन्ट** थी जो 1917 के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई।
- काँग्रेस पार्टी की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष **सरोजनी नायडू** थी जो 1925 के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई।
- देश की आजादी के समय काँग्रेस पार्टी के अध्यक्ष जे.बी. कृपलानी थे।
- 1907 में कांग्रेस की सूरत फूट के समय अध्यक्ष रास बिहारी घोष थे।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- 1916 में काँग्रेस पार्टी के अध्यक्ष अम्बिकाचरण मजूमदार थे।
- गाँधी जी काँग्रेस पार्टी के मात्र एक बार 1924 के बेलगाँव अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये।
- बालगंगाधर तिलक काँग्रेस पार्टी के एक भी बार अध्यक्ष नहीं चुने गये।
- काँग्रेस पार्टी के सबसे अधिक समय तक अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद रहे।
- काँग्रेस पार्टी के सबसे युवा अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद थे।

काँग्रेस पार्टी का इतिहास/ (1885-1947) -

काँग्रेस पार्टी के काल को तीन भागों में बांटा जा सकता है-

1. उदारवादी या नरम पंथी - (1885-1905)
2. उग्रवादी या गरम पंथी - (1905-1919)
3. गांधी युग - (1919-1947)

1. उदारवादी युग -

- इस युग में उदारवादी नेताओं का वर्चस्व रहा। जिसमें दादा भाई नोरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मदन मोहन मालवीय आदि प्रमुख थे।
- इस युग के नेताओं को अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास था। इन लोगों ने संवैधानिक दायरे में रहकर, प्रार्थना पत्रों, प्रतिवेदनों, स्मरण पत्रों एवं शिष्ट मण्डलों के द्वारा सरकार के सामने अपनी मांगों को रखा।
- उग्रवादी नेताओं ने इनके व्यवहार को राजनैतिक भिक्षावृत्ति कहा।

A. दादा भाई नोरोजी -

- इनको भारत का ''वयोवृद्ध नेता (Grand old Man of India)'' के नाम से जाना जाता है।
- वे 1886, 93 और 1906 में काँग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुने गये।
- दादा भाई ब्रिटिश संसद के लिए चुने जाने वाले प्रथम भारतीय थे। वे 1892 में चुने गए थे।
- 1906 में इनकी अध्यक्षता में पहली बार कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वराज की मांग की गई।
- इन्होने अपनी पुस्तक ''Poverty and Unbritis rule in India'' में धन निष्कर्षण का सिद्धांत प्रतिपादित किया।

B. गोपाल कृष्ण गोखले-

- ये गांधी के राजनीतिक गुरू थे और महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य थे।
- गोखले ने 1905 में बनारस में कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- ये 1905 में भारत सेवक समाज (Indian Servent Society) की स्थापना की।

2. उग्रवादी युग (1905-1919) -

- इस काल में काँग्रेस पार्टी में उग्रवादी विचारधारा का प्रभाव रहा।
- प्रमुख उग्रवादी नेता में बाल गंगाधर तिलक लाला लाजपत राय ''विपिन चन्द्र पाल और अरबिन्द घोष प्रमुख थे।
- इन नेताओं ने स्वराज प्राप्ति को अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया।
- इन्होने वहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा पर विशेष जोर दिया।
- इन्होंने जुलूस, हड़ताल, प्रदर्शन और तालाबन्दी के द्वारा अपनी मांगों को मनमाने का प्रयास किया।

A. बाल गंगाधर तिलक -

- ये लोकमान्य के नाम से जाने जाते थे।
- इन्हें भारत का बेताज बादशाह भी कहा गया।
- तिलक ने अंग्रेजी भाष में 'मराठा' और ''मराठी भाषा'' में ''केसरी'' समाचार पत्रों का सम्पादन किया।
- तिलक ने लोगों में राष्ट्रवादी भावना जाग्रत करने के लिए ''गणपति उत्सव'' और ''शिवाजी उत्सव'' की शुरुआत की।
- तिलक ने 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कहा था कि **''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।''**
- तिलक ने 1916 में होरूल लीग की स्थापना की।
- तिलक ने अंग्रेजी भाषा में **"Artice home of the Aaryans"** और **''गीता रहस्य''** पुस्तके लिखी।
- 1920 में बम्बई में तिलक की मृत्यु हुई।

B. लाला लाजपत राय-

- इन्हें ''पंजाब केसरी'' के नाम से जाना जाता है।
- इन्होंने 1920 के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।
- नवम्बर 1928 ये लाहौर में साईमन कमीशन का विरोध करते हुऐ पुलिस की लाठियों से घायल होकर इनकी मृत्यु हो गयी।
- लाला जी ने कहा था ''कि मेरे बदन पर पड़ी हुई लाठी का एक-एक प्रहार ब्रिटिश सरकार के ताबूत की आखिरी कील बनकर रहेगा।''

C. अरविन्द घोष -

- अरविन्द घोष ने बंगाल विभाजन का विरोध किया था और जिसके परिणाम स्वरूप इन्हें 1908 में जेल में बन्द कर दिया गया था।
- 1910 के बाद अरविन्द घोष राजनीति से सन्यास लेकर योगी के रूप में पाण्डिचेरी में रहने लगे। इन्होंने **"The life Divine", "The Essay on the Geeta"** पुस्तके लिखी।

बंगाल विभाजन

- लार्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल राज्य का फूट डालो और राज्य करो की नीति पर विभाजन कर दिया।
- इस विभाजन के विरोध में 16 अक्टूबर 1905 को पूरे बंगाल में शोक दिवस मनाया गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आन्दोलन चलाया गया। इस आन्दोलन के दौरान आन्दोलनकारियों ने **'वन्देमातरम' 'के नारे'** लगाऐ।
- इस समय रवीन्द्रनाथ टैगोर के आव्हान पर हिन्दू मुसलमानों ने ऐकता के लिए रक्षा बन्धन का त्यौहार मनाया। जिसके परिणाम स्वरूप 1911 में बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया।

सूरत अधिवेशन

- 1907 के काँग्रेस के सूरत अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिए उदारवादी और उग्रवादी नेताओं में काफी मतभेद था।
- उग्रवादी नेता लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे, जबकि उदारवादी दल ने रास बिहारी घोष को अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया।
- इस अधिवेशन में दोनों दलों में भंयकर मारपीट हुई।
- इससे कांग्रेस में दो दलों में विभाजन हो गया।

मुस्लिम लीग

- 30 दिसम्बर 1906 को ढाका के नबाव सलीमुल्ला खाँ और आंगा खाँ ने ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना की।
- आंगा खाँ को मुस्लिम लीग का स्थायी अध्यक्ष बनाया गया।
- 1916 के लखनऊ समझौता के आधार पर मुस्लिम लीग और कांगेस पार्टी में समझौता हो गया।

1916 का लखनऊ अधिवेशन

- 1916 के लखनऊ अधिवेशन में **एनीवीसेन्ट और बाल गंगाधर** तिलक के प्रयासों से काँग्रेस पार्टी के गरमदल और नरम दल का विलय हो गया।
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने की थी। इसी अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच एक समझौता हुआ। जिसे **''लखनऊ पैक्ट''** के नाम से जाना जाता है।

होमरूल लीग आन्दोलन –

- इस आन्दोलन का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहते हुऐ संवैधानिक तरीके से स्वशासन को प्राप्त करना था।
- तिलक और ऐनीवीसेन्ट इसकी नेता थी।
- आयरलैण्ड की तर्ज पर भारत में इस आन्दोलन को चलाया गया था।
- तिलक ने मार्च 1916 को होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी गतविधियों का केन्द्र मध्यप्रान्त, महाराष्ट्र, कर्नाटक था। प्रमुख केन्द्र पूना था।
- एनीवीसेन्ट ने 1 सितम्बर 1916 में ''भारतीय होमरूल लीग'' की स्थापना मद्रास में की।
- तिलक के होमरूल लीग के प्रभाव क्षेत्र से बाहर के सभी भागों में लीग के प्रभाव को फैलाने की जिम्मेदारी ऐनी वीसेन्ट पर थी।
- तिलक ने अपने समाचार-पत्र मराठा और केसरी, एनीवीसेन्ट ने अपने समाचार-पत्र 'कॉमन व्हील' और 'New India' के माध्यम से होमरूल लीग का प्रचार-प्रसार किया।

क्रान्तिकारी आन्दोलन

- यह आन्दोलन महाराष्ट्र, बंगाल और पंजाब के साथ-साथ विदेशों में भी हुआ।
- **महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन-** भारत में प्रथम राजनीतिक हत्या 1897 में पूना के प्लेग कमिश्नर मि. रेन्ड और उनके सहायक एमहर्स्ट की चापेकर बन्धुओं ने (दामोदर और बाल कृष्ण) गोली मारकर हत्या कर दी। दोनों को पकड़ कर फांसी दे दी गई।
- तिलक को विद्रोह भड़काने के आरोप में 18 माह का कारावास दिया गया।
- महाराष्ट्र में नासिक क्रान्तिकारियों का प्रमुख केन्द था यहां पर 1905 में विनायक दामोदर सावरकर ने **''अभिनव भारत''** नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की।
- क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिये गणेश दामोदर सावरकर को काले पानी की सजा दी गई। (1909)
- सावरकर को सजा देने वाले जिला न्यायाधीश जेक्सन की हत्या 1909 में अनन्त लक्ष्मण कंहिरे ने की।

बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन

- बंगाल में पी.मित्रा ने 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना की।
- 1906 में वारीन्दुघोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त ने ''अनुशीलन समिति'' की स्थापना की। इन दोनो ने **''युगान्तर''** समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1908 में मुजफ्फर पुर के जज किंग्सफोर्ड के मारने के लिऐ **प्रफुल्ल चन्द्र चाकी** और **खुदीराम वोस** ने बम्ब फैका लेकिन गलती से बम्ब केनेडी की गाडी पर फेंक दिया गया जिसमें इसकी पत्नि और पुत्री मारी गई। चाकी ने स्वयं को गोली मार ली और खुदीराम बोस को पकड़कर फांसी दी गयी।
- 1912 में दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग पर रासबिहारी बोस, अमीर चन्द्र, अवध बिहारी और बसन्त विश्वास ने बम्ब फेंका। जिसमें वह बच गया।

विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन

- 1905 में लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने **"Indian Homerule Society"** की स्थापना की।
- इस संस्था के अन्य सदस्य लाला हरदयाल, मदनलाल ढींगरा, विनायक दामोदर सावरकर थे। मदनलाल ढींगरा ने 1909 में प्दकपं भ्वनेम के सर विलियम कर्जन वायली को गोली मारकर हत्या कर दी गई।
- इस संस्था ने **Indian Socialist** मासिक पत्रिका का सम्पादन किया।
- 1913 में लाला हरदयाल ने सेनफ्रांसिसको (अमरीका) में **''गदर पार्टी''** की स्थापना की और यहीं से ''गदर'' समाचार-पत्र निकाला गया।

रौलेट एक्ट –

- 1919 में देश में फैल रही राष्ट्रीयता की भावना एवं क्रांन्तिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिए 1919 में रौलेट एक्ट पारित किया गया। जिसके तहत किसी भी व्यक्ति को बिना कारण बताऐ गिरफ्तार दिया जा सकता था।

समीक्षा इन्स्टीट्यूट

- इसलिये इस कानून को **काला कानून** कहा गया।
- इस कानून के बारे में कहा जाता है कि **''न कोई वकील, न कोई अपील, न कोई दलील''**
- गांधी जी ने इसके विरोध में 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी हड़ताल का ऐलान किया।

जलिया वाला बाग हत्याकांड

- पंजाब के दो लोकप्रिय नेता **डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू** की गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के जलिया वाला बाग में **13 अप्रैल 1919** को वैशाखी के दिन एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा पर **जर्नल डायर** ने गोलियां चलवा दी। जिसमें कई लोग मारे गए, बहुत से घायल हुये।
- इस घटना का पूरे देश में विरोध हुआ। इस घटना के विरोध में टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई **''नाईटहुड''** की उपाधि लौटा दी थी और इस घटना की जांच के लिये सरकार ने **''हंटर कमेटी''** का गठन किया गया। इस कमेटी ने जनरल डायर को निर्दोष सावित कर दिया।

''गांधी युग'' (1919-1947)

- गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम मोहनदास कर्मचन्द्र गांधी था।
- इनकी माँ का नाम पुतली बाई था। इनके पिता राजकोट के दीवान थे।
- इनकी पत्नि का नाम कस्तूरबा था।
- गांधी जी ने इंग्लैण्ड से बैरिस्ट्री की पढ़ाई की थी।
- ये 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहां पर उन्होंने ब्रिटिश सरकार की रंग भेद नीति के खिलाफ प्रथम **''सत्याग्रह आन्दोलन''** चलाया।
- गांधी जी ने वहां पर **''फिनिक्स फोर्म आश्रम''** की स्थापना की।
- गांधी जी 9 जनवरी 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आये।
- गांधी जी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु बनाया।
- 1916 में गांधी जी ने अहमदाबाद में ''**साबरमती आश्रम**'' की स्थापना की।
- गांधी जी ने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों का सहयोग करने के लिये लोगो को सेना में भर्ती करने के लिऐ प्रोत्साहित किया। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने **''केसरे हिन्द''** की उपाधि दी।
- गांधी जी ने भारत में सर्वप्रथम 1917 में **चम्पारण (बिहार) सत्याग्रह** चलाया।
- 1918 में गांधी जी ने गुजरात के खेड़ा नामक स्थान पर किसानों के आन्दोलन का नेतृत्व किया।

खिलाफत आन्दोलन -

- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1919 में ब्रिटेन ने तुर्की के खलीफा का पद समाप्त कर दिया था। जिसके फलस्वरूप 1919 में भारत में **अली बन्धुओं (मोहम्मद और शौकत)** ने खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- हिन्दु मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिये गांधी जी ने इस आन्दोलन का सर्मथन किया।
- 1924 में यह आन्दोलन स्वतः समाप्त हो गया।

असहयोग आन्दोलन -

- सितम्बर 1920 में असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम पर विचार करने के लिऐ कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में बुलाया गया।
- दिसम्बर 1920 में नागपुर अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव की पुष्टि कर दी गई।

असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम -

- सरकारी उपाधि और पदो का त्याग
- सरकारी उत्सवों का बहिष्कार
- सरकारी स्कूलों और कॉलेजो का बहिष्कार
- वकीलों द्वारा न्यायालयों का बहिष्कार
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना
- पंचायती अदालतों द्वारा आपसी मामलों का निपटारा
- खादी कार्यक्रम

- गांधी जी ने **''केसरे हिन्द''** की उपाधि त्याग दी थी।
- कई वकीलो ने वकालत छोड़ दी थी।
- असहयोग आन्दोलन के खर्च के लिए ''तिलक स्वराज फण्ड'' की स्थापना की गई। जिसमें लोगों द्वारा 1 करोड़ रूपए से ज्यादा जमा किया।
- नवम्बर 1921 में Prince of Valse के भारत आगमन के समय बम्बई में काला झण्डा दिखाकर और हड़ताल से उनका स्वागत किया गया।
- **5 फरवरी 1922** को उ.प्र. के चोरीचौरा नामक स्थान पर एक हिसंक भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगाकर एक थानेदार और 21 सिपाही को मार डाला। इस घटना से दुखी होकर गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया गया।

स्वराज पार्टी -

- 1923 में चितरन्जन दास और मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में स्वराज पार्टी की स्थापना की।
- स्वराज पार्टी का उद्देश्य कौंसिल में प्रवेश कर सरकार के काम में व्यवधान पैदा करना था।
- 1923 के चुनाव में स्वराज पार्टी को काफी बड़ी सफलता मिली।
- 1925 में चितरन्जन दास की मृत्यु के बाद स्वराज पार्टी कमजोर हो गई और 1926 के चुनाव में स्वराज पार्टी को अधिक सफलता नहीं मिली।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का दूसरा चरण -

- 1924 में सभी क्रान्तिकारी दलों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ जिसमें **''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशियेशन''** की स्थापना की गई।
- इसके मुख्य कार्यकर्त्ता सचिन्द्र नाथ सन्याल, राम प्रसाद विस्मिल, असफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, योगेश, चन्द्र चटर्जी आदि थे।
- इस संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने **9 अगस्त 1925** को सहारनपुर लखनऊ लाईन पर काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन को लूटा। इस

समीक्षा इंस्टीट्यूट

काकोरी कांड में रामप्रसाद विस्मिल, असफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहडी और रोशन सिंह को फाँसी की सजा दी गई।

- 1928 में चन्द्रशेखर आजाद, की अध्यक्षता में इस संगठन का नाम बदलकर "Hindustan Socialist Republican Army" 'कर दिया गया।
- लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए लाहौर के सहायक पुलिस कप्तान सान्डर्स को भगत सिंह के नेतृत्व में 1928 में क्रान्तिकारियों ने गोली मार दी।
- 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त ने Central lagislative Assembly में खाली बैंचों पर बम्ब फैका और इसी समय भगत सिंह ने **"इन्कलाब जिन्दाबाद"** का नारा दिया।
- इस नारे को मोहम्मद इकबाल ने लिखा था।
- 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को लाहौर में फांसी दी गई।
- अप्रैल 1930 में मास्टर सूर्यसेन ने चटगाँव शस्त्रागार पर आक्रमण करके उसे लूटा। इसके परिणाम स्वरूप 1934 में उन्हें फाँसी दी गई।
- चन्द्रशेखर आजाद **27 फरवरी 1931** को पुलिस से मुकाबला करते हुये इलाहाबाद में शहीद हुए।

साईमन कमीशन –

- 1919 के एक्ट के अनुसार समय से दो वर्ष पूर्व 1927 में ब्रिटिश P.M. द्वारा सर जॉन साईमन की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय साईमन कमीशन गठित किया गया। जिसमें कोई भी सदस्य भारतीय नहीं था।
- साईमन कमीशन 1928 में भारत आया था।
- यह कमीशन जहां-जहां गया, वहाँ पर काले झण्डे दिखाए गए और साईमन वापस जाओं के नारे लगाए गए।
- 1928 में लाहौर में साईमन कमीशन का विरोध करते समय पुलिस की लाठियों से घायल होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हुई।
- 27 मई 1930 को साईमन कमीशन की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

नेहरू रिपोर्ट –

- भारत सचिव बर्कनहेड ने भारतीय नेताओं को एक ऐसा संविधान का मसौदा तैयार करने की चुनौती दी जो विभिन्न सम्प्रदायों की आपसी सहमति से तैयार किया गया हो।
- भारतीय नेताओं ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुऐ फरवरी 1928 में दिल्ली में एक सर्वदलीय सम्मेलन हुआ।
- इसके बाद 19 मई 1928 को बम्बई में सर्वदलीय सम्मेलन हुआ। जिसमें पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए 8 सदस्यीय समिति का गठन हुआ।
- इस समिति की रिपोर्ट को नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है।
- मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मोहम्मद अली जिन्ना ने इस रिपोर्ट को अस्वीकार कद दिया और बदले में अपना 14 सूत्रीय कार्यक्रम (1929) को प्रस्तुत किया।

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन –

- 31 दिसम्बर 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू ने रावी नदी के तट पर रात के 12 बजे एक जनसमूह के सामने तिरंगा झण्डा फहराया और इस अधिवशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज का अपना लक्ष्य घोषित किया।
- इस सम्मेलन में 26 जनवरी को प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषण की गई।
- 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930) –

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत करने के लिये गांधी जी ने ''12 मार्च 1930'' को सावरमती आश्रम से अपने 78 साथियों के साथ डांडी तक की यात्रा की।
- 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने डांडी में समुद्र तट पर नमक कानून को तोड़ा।
- उसके बाद नमक कानून देश के कई भागों में तोड़ा गया।
- इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रम में सरकारी नौकरी, अदालतो, स्कूलों और उपाधियों का त्याग करना था।
- महिलाओं द्वारा शराब, अफीम और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया गया।
- इसी समय उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त में **खान अब्दुल गफ्फार खान** के नेतृत्व में **''खुदाईखिदमतगार'' (लाल कुर्ती आन्दोलन)** आन्दोलन चलाया गया।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन –

- 1930 में लन्दन में भारतीयों की समस्याओं पर विचार करने के लिऐ प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इसमें काँग्रेस पार्टी ने भाग नहीं लिया।

गांधी-इरविन समझौता –

- तेज बहादुर सप्रू और जयकर के प्रयासों से गांधी जी और वायसराय लार्ड इरविन के बीच **5 मार्च 1931** को दिल्ली में एक समझौता हुआ। जिसे गांधी इरविन समझौता कहा जाता है।
- इस समझौते में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस लेने और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की बात कही।

1. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन–

- 1931 में लन्दन में होने वाले द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस पार्टी की ओर से गांधी जी ने भाग लिया।
- एनीबीसेन्ट और मदन मोहन मालवीय जी ने इस सम्मेलन में व्यक्तिगत रूप से भाग लिया।
- इस सम्मेलन में गांधी जी दुखी होकर लौटे।

2. तृतीय गोलमेज सम्मेलन–

- 1932 में होने वाले तृतीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस पार्टी ने भाग नहीं लिया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

साम्प्रदायिक निर्णय [COMMUNAL AWARDS]

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री **रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने 1932 में साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा की जिसमें दलित वर्ग को अल्पसंख्यक घोषित करते हुए हिन्दुओं से अलग प्रथक निर्वाचन की व्यवस्था की गई थी।
- इस निर्णय के विरोध में गांधी जी ने 20 सितम्बर 1932 को यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया।
- इसके बाद मदनमोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद और राजगोपालाचारी के प्रयासो से गांधी जी और अम्बेडकर के बीच 26 सितम्बर 1932 को समझौता हुआ जिसे **'पूना पैक्ट'** के नाम से जाना जाता है।

समाजवादी कांग्रेस पार्टी -

- आचार्य नरेन्द्रदेव, अशोक मेहता,डॉ. राममनोहर लोहिया और अच्युत पटवर्धन ने समाजवादी कांग्रेस पार्टी की स्थापना 1934 में की।

1937 के चुनाव -

- भारतीय शासन अधिनियम-1935 के तहत 1937 में प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव हुये।
- इन चुनावों में कांग्रेस ने 8 प्रान्तों में अपनी सरकार बनाई।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने पर भारतीय विधान मण्डलों की सहमति के बिना भारत को युद्ध में शामिल कर दिया गया था, इसलिये 1939 में समस्त प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रीमण्डलों ने इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुये **22 दिसम्बर 1939 को मुक्ति दिवस** के रूप में मनाया।

1939 का त्रिपुरी अधिवेशन -

- 1939 के कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में सुभाष चन्द्र बोस ने अध्यक्ष पद के लिए हुये चुनाव में गांधी जी के समर्थक **वी. पट्टाभि सीतारम्मैया** को हराया था, लेकिन कांग्रेस कार्यकारिणी में उनका निरन्तर विरोध होने के कारण उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर **''फारबर्ड ब्लॉक''** पार्टी की स्थापना (1939) में की। इनके त्यागपत्र के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

व्यक्तिगत सत्याग्रह -

- 17 अक्टूबर 1940 को गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्यागह आन्दोलन शुरू किया। **पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही विनोवा भावे** थे।
- दूसरे सत्याग्रही पं. जवाहरलाल नेहरू थे।

पाकिस्तान की मांग -

- मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में मोहम्मद अली जिन्ना की अध्यक्षता में 23 मार्च 1940 को भारत से अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की मांग की।
- ''पाकिस्तान'' शब्द सर्वप्रथम केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र **रहमत अली चौधरी** ने दिया था।
- सर्वप्रथम द्वि-राष्ट्र का सिद्धांत सर मोहम्मद इकबाल ने दिया था।
- मोहम्मद इकबाल ने **''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा''** गीत की रचना की।

अगस्त प्रस्ताव -

- संवैधानिक गतिरोध को दूर करने के लिए 8 अगस्त 1940 को वायसराम लार्ड लिनलिथगो ने एक प्रस्ताव की घोषणा की जिसे अगस्त प्रस्ताव कहते हैं।

क्रिप्स मिशन -

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीयों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने ब्रिटिश संसद के सदस्य स्टेफोर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता में एक मिशन भारत भेजा जो 23 मार्च 1942 को दिल्ली पहुंचा।
- 30 मार्च 1942 को अपनी योजना प्रस्तुत की।
- क्रिप्स मिशन में युद्ध के बाद Dominian Status भारत को देने और प्रान्तों को पृथक संविधान बनाने की बात की गई थी।
- गांधी ने इसे **Post Dated Chek** कहा था जो कंगाल बैंक के नाम था।
- इस योजना का मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनो ने विरोध किया था।

''भारत छोड़ो आन्दोलन'' और अगस्त क्रान्ति -

- अगस्त प्रस्ताव और क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।
- **8 अगस्त 1942** को बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में एक सभा हुई और जिसमें भारत छोड़ों आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ।
- इस सम्मेलन में गांधी जी ने **''करो या मरो''** का नारा दिया।
- 9 अगस्त की सुबह ही काँग्रेस पार्टी के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- अंग्रेजों ने इस अभियान को ''ओपरेशन जीरो ओवर'' का नाम दिया।
- गांधी जी को सरोजनी नायडू और कस्तूरवां गांधी के साथ पूना के आगां खा महल में गिरफ्तारी के बाद रखा गया और अन्य नेताओं को अहमद नगर के किले में रखा गया।
- जयप्रकाश नारायण को हजारीबाग में नजर बंद कर दिया गया, लेकिन वे वहाँ से भागने में कामयाब रहे।
- काँग्रेस पार्टी को असंवैधानिक घोषित किया गया।
- आन्दोलन के नेतृत्व विहीन होने पर जनता ने स्वयं ही नेतृत्व सम्भाला।
- इस आन्दोलन का स्वरूप हिंसात्मक हो गया था।
- जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और अरूणा आसिफ अली आदि नेताओं ने भूमिगत होकर इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- आन्दोलन के दौरान ऊषा मेहता ने रडियों प्रसारण किया।
- मुस्लिम लीग इस आन्दोलन से दूर रही।
- कम्युनिस्ट पार्टी और डॉ. अम्बेडकर ने इस आन्दोलन का विरोध किया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- कस्तूरबा गांधी की इस आन्दोलन के दौरान पूना में ही मृत्यु हो गयी थी।

सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज –

- इनका जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक में हुआ था।
- 1920 में इनका I.C.S. में चयन हुआ था, लेकिन 1921 में गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन शुरु करने पर इन्होंने नौकरी छोड़कर राजनीति में प्रवेश किया।
- 1939 में द्वितीय वर्ल्ड वार शुरु होने पर उन्हें सरकार ने कलकत्ता में उनके निवास स्थान पर नजर बंद कर दिया, लेकिन जनवरी 1941 में वे मौका पाकर भाग निकले। वे अफगानिस्तान होते हुऐ जर्मनी पहुंचे और हिटलर से मिले।
- इसके बाद वे जापान पहुंचे। इसी दौरान 1942 में टोकियों में रह रहे रासबिहारी बोस और कैप्टन मोहन सिंह ने India National Army (आजाद हिन्द फौज) का गठन किया।
- 4 जुलाई 1943 को सुभष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज की कमान सम्भाली और सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में अस्थायी सरकार की स्थापना 21 अक्टूबर 1943 को की।
- इन्होंने सिंगापुर में **''दिल्ली चलो''** का नारा दिया। इन्होने आजा हिन्द फौज के सैनिको से कहा था कि **''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजदी दूँगा''।**
- द्वितीय वर्ल्ड वार में जापान की पराजय से आजाद हिन्द फौज को समर्पण करना पड़ा।
- 1945 में आजाद हिन्द फौज के समस्त सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया गया और दिल्ली के लाल किले में इन पर मुकदमा चलाया गया।
- कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरूदास ढिल्लो और मेजर शहनवाज खाँ पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया।
- इसके पक्ष में सर तेजबहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू, भोलाभाई देसाई और कैलाश नाथ काटजू ने वकालत की।

सी.आर. फार्मूला –

- 1944 में मुस्लिम लीग से समझौता करने के लिए चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने एक प्रस्ताव पेश दिया। जिसे सी.आर. फार्मूला कहा जाता था।

वैवल योजना –

- वायसराय लार्ड वैवल ने 1945 में भारत में संवैधानिक गतिरोध दूर करने के लिऐ वैवल योजना प्रस्तुत की।
- इस योजना के तहत वायसराय की कार्यकारिणी में भारत के सभी दलों को प्रतिनिधित्व दिया जाना था।

शिमला सम्मेलन –

- वैवल योजना पर विचार करने के लिऐ 25 जून 1945 को शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इस सम्मेलन में मौलाना अबुल कलाम आजाद को काँग्रेस पार्टी की ओर से कार्यकारणी में सम्मिलित करने का प्रस्ताव रखा। जिसका जिन्ना ने कड़ा विरोध किया। जिससे यह सम्मेलन असफल हो गया।

नौसेना विद्रोह –

- फरवरी 1946 में बम्बई में नौसेना के एन.एस. तलवार जहाज के कर्मचारियों ने विद्रोह कर दिया विद्रोह के प्रमुख नेता एम.एस. खान

केबिनेट मिशन –

- भारतीय स्वतंत्रता पर भारतीय नेताओं से विचार करने के लिऐ 1946 में पैथिक लारेन्स, की अध्यक्षता में केबिनेट मिशन भारत आया।
- इसके दो अन्य सदस्य ए.व्ही. अलेक्जेडर और स्टेफोर्ड क्रिप्स थे।
- इस योजना के तहत संविधान सभा के द्वारा एक संविधान के निर्माण की बात कही गई थी।
- इसमें पाकिस्तान की मांग को स्वीकार नहीं किया गया था। इसलिये मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की मांग के लिए 16 अगस्त 1946 को **प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस** के रूप में मनाया।
- इसके बाद देश के कई भागों में कई स्थानों पर सम्प्रदायिक दंगे हुऐ।
- 3 सितम्बर 1946 को पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में 12 सदस्यी ''अंतरिम सरकार'' ने शपथ ग्रहण की।

क्लीमेंट एटली की घोषणा –

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने 20 फरवरी 1947 को घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार जून 1948 से पूर्व भारत को आजाद कर देगी।

माउन्ट बेटन योजना –

- 3 जून 1947 को लार्ड माऊन्ट बेटन ने अपनी योजना प्रस्तुत की।
- इसी योजना के आधार पर ''भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम-1947'' पारित किया गया। जिसके तहत भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों का निर्माण हुआ।
- लार्ड माऊन्ट वेटन स्वतंत्र भारत का प्रथम गर्वनर जनरल और पं. जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री बने।
- मोहम्मद अली जिना पाकिस्तान के प्रथम गर्वनर जनरल और लियाकत अली प्रथम प्रधानमंत्री बने।

प्रमुख गवर्नर जनरल

1. लॉर्ड क्लाइवः-(1750-60,1765-67) –

- इसको भारत में अंग्रेजी राज्य का संस्थापक माना जाता है। यह बंगाल का प्रथम् गर्वनर था। इसने बंगाल में द्वैध शासन स्थापित किया। इसने 1757 में प्लासी के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व किया और सिराजुद्दौला को हराया।

2. वारेन हेस्टिंग्स (1772-85) –

- इसके समय 1773 में "रेग्यूलेटिंग एक्ट" आया। इसके तहत वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का गवर्नर जनरल बनाया गया।
- यह बंगाल का अन्तिम गवर्नर और **प्रथम् गवर्नर जनरल** था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत भारत में 1774 में कोलकाता में प्रथम् **"सुप्रीम कोर्ट"** खोला गया,
- 1784 में विलियम जोन्स की सहायता से एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की।
- वारेन हेस्टिंग्स एक मात्र ऐसा गर्वनर जनरल था जिस पर भारत से लौटकर इंग्लैड में **महाभियोग** चलाया गया।
- 1781 में कलकत्ता मदरसा की स्थापना की।

3. लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93) -

- इसके समय 1793 में भूमि का **स्थाई बन्दोवस्त** किया गया था।
- इसने भारत में सिविल सेवा और पुलिस सेवा का आरम्भ किया।
- इसके समय भारत में पुलिस थानों की स्थापना हुई।
- इसने भारत में प्रचलित विभिन्न कानून एंव नियमों का सग्रह करके "कार्नवालिस कोड" (1793) का निर्माण किया।
- इसने तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध में भाग लिया।

4. लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) -

- इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार के लिए सहायक सन्धियों का उपयोग किया।
- इसने पहली सहायक सन्धि 1798 में हैदराबाद के निजोम के साथ की। इसके बाद उसने 1799 में मैसूर राज्य के साथ सहायक सन्धि की।
- 1799 में चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध में वेलेजली ने अंग्रेजी सेना का नेतृत्व किया।

5. लॉर्ड मिण्टो (1807-13):-

- 1809 में पंजाब के शासक रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की सन्धि की।
- इस सन्धि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजी साम्राज्य और पंजाब राज्य के बीच की सीमा रेखा माना गया।

6. लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23) -

- इसके समय अंग्रेजो का नेपाल राज्य के साथ युद्ध हुआ था। इस युद्ध के बाद 1816 में अंग्रेजो ने नेपाल राज्य के साथ संगोला की सन्धि की। इसके तहत भारत और नेपाल के बीच सीमा रेखा का निर्धारण हुआ।
- इसके समय पिण्डारियो का दमन किया गया।
- इसके समय मद्रास के गर्वनर सर टोमस मुनरो ने मद्रास प्रेसीडेन्सी में रैयतबाडी भूमि की व्यवस्था की।
- बम्बई के गर्वनर एल.फिस्टन ने बम्बई प्रेसीडेन्सी में महालवाडी और रैयतबाडी व्यवस्था का मिश्रित रूप लागू किया।

7. विलियम वैंटिंक (1828-35) -

- इसके समय में 1833 का चार्टर एक्ट आया था। जिसके तहत बंगाल का गर्वनर जनरल भारत का गर्वनर जनरल होने लगा।
- विलियम वैटिंक को भारत का प्रथम् गर्वनर जनरल बनाया गया और बंगाल का अन्तिम गर्वनर जनरल था।
- इसने 1829 में **सतीप्रथा को प्रतिबन्धित** कर दिया था।
- इसने लॉर्ड मैकाले की सलाह पर अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बना दिया।
- इसके काल में कलकत्ता में 1835 में देश का पहला मेडीकल कॉलेज खोला गया।

8. सर चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36) -

- इसने प्रेस को स्वतंत्रता प्रदान की।

9. लॉर्ड डलहौजी (1848-56) -

- इसने **हडपनीति या विलयनीति या व्यापगत सिद्धांत** के तहत भारतीय राजाओं को दत्तकपुत्र को गोद लेने की प्रथा को समाप्त करके कई भारतीय राज्यों को ब्रिटिश राज्य में शामिल किया।
- इसने 1856 में कुशासन के आधार पर अवध राज्य को ब्रिटिश राज्य में मिला लिया था।
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के बाद 1849 में पंजाब को डलहोजी ने अंग्रेजी राज्य में मिलाया।
- 1853 में लॉर्ड डलहोजी के समय मुम्बई से थाणे के बीच **पहली रेलगाड़ी** चलाई गई।
- 1854 में इसने डाक कानून लागू किया और डलहोजी के समय भारत में करांची में1852 में पहली बार दो पैसें का डाकटिकट जारी किया गया।
- इसने शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया और सेना का मुख्यालय भी शिमला में बनाया गया।
- डलहोजी ने भारत में 1854 में पहली बार **P.W.D.** की स्थापना की।
- इसके समय शिक्षा संबंधी सुधारो के लिए 1854 में "**वुड डिस्पैच**" लागू किया। जिसके तहत तीनों प्रेसीड़ेंसियों में एक-एक विश्वविद्यालय स्थापित किया गया।
- रूड़की में प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की।

10. लॉर्ड कैनिंग (1856-62) -

- इसके समय 1857 का विद्रोह हुआ।
- 1858 में महारानी विक्टोरिया की घोषणा हुई।
- इसके समय 1857 के विद्रोह के बाद भारत में 1858 के अधिनियम के द्वारा अंग्रेजी शासन कम्पनी के हाथ से लेकर सीधे ब्रिटिश क्राउन को दे दिया गया। और भारत में गर्वनर जनरल के स्थान पर वायसराय ब्रिटिश प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने लगा।
- 1858 में लॉर्ड कैनिंग को प्रथम् वायसराय के रूप में नियुक्त किया गया और यह भारत में अन्तिम ब्रिटिश राज्य का गर्वनर जनरल था।
- इसके समय 1862 में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास तीनों जगह पर एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- 1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम लागू किया।
- इसके समय कलकत्ता, मद्रास, और बम्बई प्रसीड़ेंसी में एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

11. लॉर्ड एल्गिन-1 (1862-63) -

- इसकी मृत्यु हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में हुई थी।

12. लॉर्ड मेयो (1869-1872) -

समीक्षा संस्थान

- इसने भारतीय राजाओं के पुत्रों की उचित शिक्षा के लिए अजमेर में **मेयो कॉलेज** की स्थापना की।
- इसकी 1872 में एक अफगान द्वारा चाकू मार कर हत्या कर दी गई।
- इसके समय 1872 में भारत में पहली अमान्य जनगणना की गई।

13.लॉर्ड लिटन (1876-80) -

- इसके समय 1878 में **"वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट"** पारित करके प्रेस पर कई प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
- इसके समय 1878 में **"इंडियन आर्म्स एक्ट"** पारित करके भारतीयों को हाथियार रखने के लिए लायसेन्स लेना अनिवार्य कर दिया गया।

14. लॉर्ड रिपन (1880-84) -

- इसके समय 1881 में देश में प्रथम् नियमित रूप से जनगणना प्रारम्भ की गई।
- इसके समय 1881 में प्रथम् फैक्ट्री एक्ट पारित किया गया।
- इसके समय 1882 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया गया। 1882 में स्थानीय स्वशासन की शुरूआत हुई।
- इसे भारत में **स्थानीय स्वशासन का जनक** कहा जाता है।
- इसके समय 1882 में **विलियम हंटर** की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन किया गया।
- इसके समय 1883 में **इल्वर्ट बिल** पारित किया गया जिसमें भारतीय जजों को यूरोपीयों के मामले मामले सुनने का अधिकार दिया गया। लेकिन अंग्रेजो के विरोध के कारण इसमें संशोधन किया गया।

15. लॉर्ड डफरिन (1884-88) - इसके समय 1885 में ए. ओ. ह्यूम द्वारा **कांग्रेस** की स्थापना बम्बई में की गई।

16. लॉर्ड लेन्सडाऊन (1888-94) - इसके समय सर डूरन्ड द्वारा भारत और अफगानिस्तान के बीच डूरन्ड रेखा खीची गई है। इसके समय दूसरा फैक्ट्री एक्ट 1891 में बना।

17. लॉर्ड एल्गिन-2(1894-99) - इसने भारत के विषय में कहा था "कि भारत को तलबार के बल पर जीता गया है और तलबार के बल पर ही इसकी रक्षा की जायेगी।"

18. लॉर्ड कर्जन (1899-1905) - इसके समय 1905 में बंगाल राज्य में हिन्दू-मुस्लिम एकता को समाप्त करने के लिए साम्प्रदायिकता के आधार पर बंगाल का विभाजन कर दिया गया।

- 1904 में प्राचीन स्मारक कानून पारित करके भारत में पहली बार एंतिहासिक इमारतों की सुरक्षा और मरम्मत की ओर ध्यान दिया गया। इसके लिए कर्जन ने भारतीय पुरातात्विक विभाग की स्थापना की।

19. लॉर्ड मिण्टो-2(1905-10) -

- इसके समय 1906 में ढाका में **मुस्लिम लीग की स्थपना** की गई।
- इसके समय 1909 में भारतीय परिषद् अधिनियम मार्ले मिण्टो सुधार के नाम से जारी किया गया। इस अधिनियम के द्वारा मुस्लमानों को **साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व** दिया गया।
- 1907 में कांग्रेस का सूरत में विभाजन कर दिया गया।

20. लॉर्ड हार्डिग-2(1910-16) -

- इसके समय 1911 में ब्रिटेन के राजा जॉर्ज-पंचम के सम्मान में **दिल्ली में एक दरबार** का आयोजन किया गया।
- इस दरबार में बंगाल विभाजन को रद्द करने, और भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की गई।
- भारत की राजधानी 1912 में कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित हुई।
- इसके समय मदन मोहन मालवीय द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की 1916 में की गई।
- 1915 में गांधीजी द.अफ्रीका से भारत वापस लौटे।

21. लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-21) -

- इसके समय प्रथम् विश्व युद्ध 1919 में समाप्त हुआ।
- इसके समय "रौलेट एक्ट-1919" पारित हुआ।
- इसके समय 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में **जलियावाला बाग हत्याकांड** हुआ।
- इसके समय 1919 में मोण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम लाया गया।
- इसके समय गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ 1920 में किया।
- तिलक और एनीबीसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की।

22.लॉर्ड रीडिंग (1921-25) -

- इसके समय 1921 में एम. एन. राय द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई।
- इसके समय 5 फरवारी 1922 को चौरी-चौरा हत्याकांड हुआ।
- इसके समय 1923 में मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास ने **स्वराज पार्टी** की स्थापना की।
- इग्लैण्ड और भारत में एक साथ आई. सी. एस. परीक्षाओं का आयोजन प्रारम्भ हुआ।

23.लॉर्ड इरविन (1926-31) -

- इसके समय 1928 में साईमन कमीशन भारत आया।
- गांधी जी ने 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- 1930 में लंदन में प्रथम् गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसका कांग्रेस पार्टी ने बहिष्कार किया।
- 5 मार्च 1931 को **गांधी-इरविन समझौता** हुआ।
- 1929 में **कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन** हुआ, जिसमें पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया गया।

24. लॉर्ड वेलिंगटन (1931-36) -

- इसके समय 1931 में लन्दन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें कांग्रेस की तरफ से गांधी जी ने भाग लिया।
- 1932 में साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा और पूना समझौता हुआ।
- 1934में समाजवादी कांग्रेस पार्टी की स्थापना आचार्य नरेन्द्रदेव, अच्युतपटवर्धन, डा.लोहिया ने की।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- 1935 में भारत सरकार अधिनियम पारित हुआ।

25.लॉर्ड लिनलिथगो (1936-43) -

- इसके समय द्वितीय विश्व युद्ध 1 सितम्बर 1939 में प्रारम्भ हुआ।
- 1939 में सुभाषचन्द्र बोस ने **फॉरवर्ड ब्लॉक** पार्टी की स्थापना की।
- इसके समय 1942 में **क्रिप्स मिशन** भारत आया।
- 1942 में ही भारत छोड़ो आन्दोलन गांधी जी ने शुरू किया।
- 23 मार्च 1940 को लाहौर प्रस्ताव जिन्ना द्वारा द्विराष्ट्र का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

26.लॉर्ड बेबेल (1943-47) -

- इसके समय 1945 में शिमला सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इसके समय 1946 में केविनेट मिशन भारत आया।
- 1946 में नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अन्तरिम सरकार का गठन किया गया।

27.लॉर्ड माउन्टवेटन (1947-48) -

- इसके समय भारत को स्वतंत्र 1947 में किया गया।
- ये अन्तिम ब्रिटिश वायसराय और स्वतंत्र भारत का प्रथम् गर्वनर जनरल थे।

28.सी. राजगोपालाचारी (1948-50) -

- ये स्वतंत्र भारत के अन्तिम गर्वनर जनरल थे। साथ ही ये स्वतंत्र भारत के एक मात्र प्रथम् भारतीय गर्वनर जनरल भी थे।

IMPORTANT BOOKS

• Indian Struggle	सुभाष चन्द्र बोस
• सत्यार्थ प्रकाश	दयानन्द सरस्वती
• Indian Mirror	केशव चन्द्र सेन
• War of Indian Independance	वीर सावरकर
• A Song of India	सरोजनी नायडू
• गीता रहस्य	लोकमान्य तिलक
• The Great Revalion	अशोक मेहता
• My experiments with the truth	महात्मा गांधी
• Indian Home rule (हिन्द स्वराज)	महात्मा गांधी
• Discovery of India	पं. जवाहर लाल नेहरू
• आनंद मठ	बंकिम चन्द्र चटर्जी
• नील दर्पण	दीन बन्धु मित्रा
• India wins freedom	मौलाना अबुल कलाम आजाद

प्रमुख नारे

• सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है	राम प्रसाद विस्मिल
• आराम हराम है	पं. जवाहर लाल नेहरू
• वंदे मातरम्	बंकिम चन्द्र चटर्जी
• वेदो की ओर लौटो	दयानन्द सरस्वती
• मैं स्वभाव से ही समाजवादी हूँ।	जवाहर लाल नेहरू
• सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा	मोहम्मद इकबाल
• इन्कलाब जिन्दाबाद	भगत सिंह
• दिल्ली चलो, जयहिन्द	सुभाष चन्द्र बोस
• हम दया की भीख नहीं मांगते हम तो केवल न्याय चाहते हैं, ब्रिटिश नागरिक के समान अधिकारों का जिक्र नहीं करते हम स्वशासन चाहते हैं।	दादा भाई नौरोजी
• जो स्वदेशी होता है वह सर्वोपरि एवं उत्तम होता है।	दयानन्द सरस्वती
• विश्व विजयी तिरंगा प्यारा	श्याम लाल गुप्त (पार्षद)

प्रमुख समाचार-पत्र

• प्रथम समाचार पत्र	बंगाल गजट (1780 में कलकत्ता से अंग्रेजी भाषा में जेम्स आगस्ट हिक्की द्वारा निकाला गया।)
• सम्वाद कौमुदी	राजाराममोहन राय (बंगाली)
• मिरातुल अखबार	राजाराममोहन राय (फारसी)
• रस्त गोफ्तार	दादा भाई नौरोजी (गुजराती) बम्बई
• सोम प्रकाश	ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (बंगला) कलकत्ता
• Indian opinion	महात्मा गांधी (S. A.)
• अलहिलाल	मौलाना अबुल कलाम आजाद
• Independent	मोतीलाल नेहरू (इलाहाबाद)
• नवजीवन (गुजराती), यंग इंडिया (अंग्रेजी), हरिजन (हिन्दी)	महात्मा गांधी
• The Nation	गोपाल कृष्ण गोखले
• Indian Socialist	श्यामजी कृष्ण वर्मा (लन्दन)
• डॉन	जिन्ना

प्रमुख संस्थाएँ-संस्थापक

• आत्मीय सभा (1815)	राजाराममोहन राय
• तत्वबोधिनी सभा (1839)	देवेन्द्रनाथ टैगोर
• पूना सार्वजनिक सभा (1867)	महादेव गोविन्द रानाडे

समीक्षा इंस्टीट्यूट

• ऐशियाटिक सोसायटी (1784)	विलियम जोन्स
• वहिष्कृत हितकारणी सभा (1924)	बी.आर. अम्बेडकर
• हिन्दू महासभा (1915)	मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, केलकर
• राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (1925)	डॉ. हेडगेवार और डॉ. बी.एस. मुंजे
• Land Holders Society (1838)	द्वारिकानाथ टैगोर
• ईस्ट इंडिया ऐसोसिऐशन (1860)	दादा भाई नेरोजी (England)
• मद्रास महाजन सभा (1889)	बी. राघवाचारी
• बोम्बे प्रेसीडेन्सी ऐसोसिऐशन (1885)	फिरोजशाह मेहता
• यूनाइटेड इंडियन पेट्रियाटिक एसोसिऐशन (1888)	सर सैयद अहमद खाँ
• भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस (1920)	एन.एम. जोशी

स्वतंत्रता के बाद का भारतीय इतिहास

1948 –

1. कश्मीर का भारत मे विलय। (हरीसिंह राजा)
2. 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने महात्मा गॉधी की गोली मारकर हत्या कर दीं।

1949 –

1. 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को स्वीकार किया गया था।
2. 15 नवम्बर 1949 को नाथूराम गोडसे और नारायण आपटे को फॉसी दी गई थी।

1950 –

1. 26 नवम्बर 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया थां डॉ राजेन्द्र प्रसाद को देश का पहला राष्ट्रपति नियुक्त किया गया था।
2. 15 दिसंबर 1950 सरदार बल्लभ भाई पटेल की म्रत्यू हो गई थी।
3. 15 मार्च 1950 को योंजना आयोग का गठन।
4. देशी रियासतों का भारत मे पूर्ण विलय हुआ।

1951–

- 1 अप्रैल 1951 को प्रथम पंचवर्षीय योजना प्रांरभ की गई।

1952 –

- प्रथम आमचुनाव संपन्न हुए और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए।

1953 –

- 29 मई 1953 को तेनजिंग शेरपा एडमंड हिलेरी ने पहली बार मांउट एवरेस्ट पर चढ़ाई की थी।
- 1 अक्टूबर 1953 को आंध्रप्रदेश राज्य का निर्माण हुआ।

1954 –

- 20 अप्रैल 1954 को भारत और चीन के बीच पंचशील समझौता हुआ।

1955 –

- 18 मई 1955 को हिन्दू विवाह अधिनियम पारित हुआ।

1956 –

- भारतीय जीवन बीमा निगम का राष्ट्रीयकरण हुआ।
- फ्रांस द्वारा भारत मे पाण्डिचेरी सहित अपनी वस्तियों का भारत को हस्तांतरण कर दिया।

1956 –

- 1 नवम्बर को म. प्र. और राजस्थान राज्यों का गठन किया।

1958 –

- 1958 मे माप और तौल की मैट्रिक प्रणाली की शुरूआत की गई।

1959 –

- 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले से देश मे पहली बार पंचायती राज्य व्यवस्था लागू की।
- भारत मे दूरदर्शन की शुरूआत हुई।

1960 –

- 1960 में बम्बई राज्य का विभाजन करके महाराष्ट्र और गुजरात दो नये राज्य बनाए गये।

1961 –

- 18 दिसंबर को गोवा, दमण और दीप को पुर्तगाल से मुक्त कराकर भारत में विलय किया गया।

1962 –

- 20 अक्टूबर 1962 को चीन ने भारत पर आक्रमण किया।

1964 –

- 27 मई 1964 को जवाहर लाल नेहरू क निधन।
- लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमत्री बनाये गये।

1965 –

- कच्छ सिंध सीमा पर पाकिस्तान का हमला भारत-पाक युद्ध।
- 1 दिसंबर 1965 को सीमा सुरक्षा बल का गठन।

1966 –

1. 10 जनवरी 1966 को तांशकंद में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रध्यक्ष जनरल अयूब के बीच ताशकंद समझौता।
2. 11 जनवरी 1966 को ताशकंद मे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का निधन।
3. 19 जनवरी 1966 को इंन्दिरागॉधी भारत की प्रधानमंत्री बनी।
4. विश्व विख्यात डॉ होमी जहॉगीर भामा की विमान दुर्घटना में मृत्यु।
5. 1 नवम्बर 1966 को पंजाब राज्य का पंजाब और हरियाणा में विभाजन।
6. 1967 में नई राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारो का गठन।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

1968 –

- भारतीय मूल के डॉ. हरगोविन्द का डी. एन. ए. थियोरी के लिए चिकित्सा विज्ञान का नोवेल पुरूस्कार।

1969 –

1. मद्रास राज्य का नाम बदलकर तमिलनाडु रखा गया।
2. देश का पहला आणविक विद्युत स्टेशन तारापुर में प्रांरभ किया गया।
3. 14 बैकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

1970 –

- नोवेल पुरस्कार विजेता भारतीय भौतिक विज्ञान के ज्ञाता सी. बी. रमन का निधन।

1971 –

- पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण और पाकिस्तान की पराजय।
- भारत द्वारा पूर्वी पाकिस्तान को स्वंतंत्र कराकर नवोदित राष्ट्र बंग्लादेश को मान्यता।

1972 –

- 3 जुलाई 1972 को प्रधानमंत्री इंदिरा गॉधी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फीकार अली भुट्टो के द्वारा शिमला समझौते पर हस्ताक्षर।
- भारतीय डाक विभाग द्वारा पॉस्टल इंक्ड्रेक्स नम्बर पिन कोड प्रणाली की शुरूआत की गई थी।

1973 –

- 1 जनवरी 1973 को भारत मे साधारण बीमा का राष्ट्रीयकरण हुआ।
- मैसूर राज्य का नाम बदलकर कर्नाटक कर दिया गया।

1974 –

- 18 मई 1974 को राजस्थान के पौखरन् मे भारत ने पहला परमाणु विस्फोट करके विश्व में 6वॉ परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बना।

1975 –

- 19 अप्रैल 1975 को भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष मे छोड़ा गया।
- देश मे राष्ट्रीय आपात की घोषणा की गई। जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई सहित अनेक विपक्षी तथा असंतुष्ट कांग्रसी नेताओं की गिरफ्तारियाँ की गई।

1976 –

1. संसद द्वारा संविधान मे 42 वॉ संविधान संशोधन करके भारत को समाजवादी, पंथनिरपेक्ष गणराज्य घोषित किया गया।
2. बंधुआ मजदूरी प्रथा को अवैध घोषित कर दिया गया।

1977 –

1. जनता पार्टी का गठन (कांग्रेसी संगठन) जनसंघ भारतीय लोकदल और समाजवादी, दल को मिलाकर घटित की गई और लोकसभा के चुनाव मे जनता पार्टी को सफलता मिली। इसके बाद मौरारजी देसाई भारत के प्रधानमंत्री बने।
2. बावू जगजीवन राम द्वारा कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र देकर कांग्रेस Democracy पार्टी का गठन किया।
3. नीलम संजीव रेड्डी निर्विरोध राष्ट्रपति चुने गए।
4. फरक्का बाध पर बंग्लादेश और भारत के बीच संधि हुई।

1978 –

1. इंदिरागॉधी द्वारा कांग्रेस (आई) पार्टी का गठन किया गया।
2. संसद द्वारा विवाह की आयु पुरूषो के लिए 21 वर्ष और महिलाओं के लिए 18 वर्ष करने का अधिनियम पारित किया गया।
3. 44वॉ संविधान संशोधन किया गया जिसके द्वारा संपति के अधिकार को मौलिक अधिकार की श्रेणी से हटा दिया गया।

1979 –

1. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेल्यूलर जेल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया।
2. मदर टेरेसा को शांति के लिए नोवेल पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।
3. मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दिया और चौधरी चरणसिंह ने कांग्रेस के साथ मिलकर अपनी सरकार बनाई।

1980 –

1. इस वर्ष के लोकसभ चुनाव में इंदिरागॉधी को प्रचंड बहुमत मिला और वे प्रधानमंत्री बनी।
2. युवा नेता संजयगॉधी का निधन।
3. अटलबिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में बी. जे. पी. का गठन।
4. देश की अन्य 6 बैकों का राष्ट्रीयकरण।

1981 –

- भारत का प्रथम दूरसंचार उपग्रह एप्पल अपनी कक्षा में स्थापित और इसके माध्यम से दूरदर्शन के कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक प्रसारण।

1982 –

1. भारत का प्रथम अभियानदल डॉ. एस. जेड. कासिम के नेतृत्व में अंटार्कटिका पहुचा।
2. इंदिरा गॉधी द्वारा नये 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की घोषणा की गई।
3. भारत मे 9वें एशियाई खेलो का आयोजन नई दिल्ली में किया।
4. इसी वर्ष भारत में रंगीन टी.वी. प्रसारण शुरू किया गया।

1983 –

- भानू मुथैय्या ऑस्कर पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी।

1984 –

1. क्वेड्रन लीडर राकेश शर्मा भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री बने।
2. 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गॉधी की हत्या।
3. 3 दिसंबर 1984 को भोपाल गैस काण्ड,।
4. पी. टी. ऊषा ओलम्पिक खेलो के फाइनल मे पुहॅचने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरब प्राप्त किया।

1985 –

- इस वर्ष दलबदल विरोधी कानून पारित किया गया।

1986 –

- जनरल करिअप्पा को भारतीय सशस्त्र सेनाओ के आजीवन मानद फील्ड मार्शल की उपाधि दी गई।
- देश में पहला टेस्ट ट्यूब का जन्म (हर्षा मुबंई की हिन्दुजा हॉस्पीटल)

समीक्षा इंस्टीट्यूट

1987 –

- सुनील गावस्कर ने टेस्ट क्रिकेट में 10 हजार रन पूरे किए।
- गोवा भारत का 25वॉ राज्य बना।

1988 –

- खान अब्दुल गफ्फार और राजकपूर का निधन।
- देश की सबसें तेज चलने वाली रेलगाड़ी शताब्दी एक्सप्रेस नई दिल्ली भोपाल के बीच प्रांरभ।
- आरती शाह इंगलिश चैनल पार करने वाली महिला तैराक बनी।

1989 –

1. देश की पहली मध्यम दूरी की मिसाइल अग्नि का सफल परीक्षण हुआ।
2. मीरा साहब फातिमा बीबी सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला न्यायाधीश बनीं।
3. दलाई लामा को नोवेल पुरस्कार
4. जनतादल पार्टी ने विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व मे सरकार बनाई।

1990 –

1. डॉ. भामराव अम्बेडकर को मरणोपरान्त भारत रत्न।
2. मंडल आयोग की सिफारिश के आधार पर अन्य पिछड़ी जातियों को 27 प्रतिशत आरक्षण।
3. दक्षिण अफ्रीका नेलशन मंडेला को भारत रत्न से सम्मानित किया।

1991 –

- 21 मई को प्रधानमंत्री राजीव गॉधी की तमिलनाडु के पेरूम्बदुर मे हत्या हुई।
- सत्यजीत रे विशेष ऑस्कर पुरूस्कार मिला।

1992 –

- 3 बीघा गलियारा बंग्लादेश को पट्टे पर दिया भारत ने।
- 6 दिसंबर 1992 को रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद का विवादास्पद ढ़ाचा कार्य सेवको द्वारा ध्वस्त कर दिया गया।

1993 –

1. मुंबई मे श्रंखलावद्ध 13 बम विस्फोटो मे 270 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।
2. महाराष्ट्र मे लातूर मे भयंकर भूकंप आया जिसमें 50000 से अधिक लोगो की मृत्यु।
3. संतोष यादव माउण्ट एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने वाली विश्व की पहली महिला बनी।

1994 –

1. 24 अप्रैल 1984 पंचायती राज अधिनियम पारित।
2. सुष्मिता सेन पहली मिस यूनिवर्स बनी।
3. देश मे डॉ. वेणुगोपालन ने पहला हृदय प्रत्यरोपण।
4. मिस वर्ल्ड ऐश्वर्याराय को बनाया गया।

1995 –

- बंबई का नाम बदलकर मुम्बई दिया गया।

1996 –

- I.S.R.O. द्वारा स्वेदेशी क्रायोजेनिक इंजन का विकास।
- लिएंडर पेश ने अटलांटा ओंलंपिक में टेनिस में कांस्यपदक जीतां।

1997 –

1. भारत विदेशी मुद्रा प्रवंधन कानून FERA के स्थान पर नया विधेयक FEMA लाने के प्रस्ताव लाने की स्वीकृति दी गई।
2. मदर टेरेसा का निधन।
3. भारत की कल्पना चावला अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाली पहली भारतीय मूल की महिला बनी।

1998 –

1. कर्नाटक शैली की गायिका एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी को भारत रत्न सम्मान दिया गयां।
2. अटल बिहारी वाजपेयी भारत के 13 वे प्रधानमंत्री बने।
3. 11 मई 1998 भारत द्वारा राजस्थान के पोखरन में 3 परमाणु परीक्षण किए गए।
4. डॉ. अमर्त्य सेन नोवेल पुरस्कार पाने वाले (अर्थशास्त्र) एशिया के पहले व्यक्ति।
5. 31 दिसंबर 1998 को भारत और श्रीलंका के बीच मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

1999 –

1. 20 फरवरी 1999 को अटलबिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान की एतेहासिक यात्रा की थी।
2. इस वर्ष दिल्ली औार लाहौर के बीच बस सेवा शुरू हुई।
3. कारगिल युद्ध हुआ। पाक समर्थित घुसपेठियो की वापसी हुई।

2000 –

- 1 नवम्बर को छत्तीसगढ़, 9 नवम्बर को उत्तराखंड़ और 15 नवम्बर को झारखंड़ नये राज्य बने।

2001 –

- गुजरात मे 26 जनवरी 2001 को विनाशकारी भूकंप।
- लता मंगेश्कर, बिस्मिला खॉ को भारत रत्न।
- निजी बेवसाइट तहलका डॉटकाम द्वारा रक्षा सौदों मे दलाली का रहस्य उदघाटित हुआ।
- भारत और बंग्लादेश के बीच 12 जुलाई 2001 को मैत्री बससेवा शुरू हुई।
- 11 सितंबर 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर।

2002 –

- डॉ. अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति बने।
- 24 सिंतबर 2002 को दिल्ली मे मेट्रो रेलसेवा शुरू हुई।
- 13 दिसंबर 2002 को संसद पर हमला।

2003 –

1. भारत द्वारा संचार उपग्रह का सफल परीक्षण किया गया।
2. भारत मे पहली बार एशिया कप हॉकी चैम्पियनशिप जीती।
3. भारत द्वारा रिमोट सेटेलाइट का सफल परीक्षण किया गया।

2004 –

1. भारत का स्वदेश निर्मित टी-मुख्य युद्ध टैंक सेना को सौपा गया।
2. राष्ट्रीय किसान आयोग का गठन किया गया।
3. भारत के द्वारा शैक्षणिक उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

4. देश मे निवेश संवर्धन हेतु राष्ट्रीय निवेश आयोग का गठन किया गया था।

2005 –

1. सानिया मिर्जा W.T.A. टेनिस खिताब जीतने वाली भारत की पहली महिला खिलाड़ी बनी।
2. 1 अप्रैल 2005 से 21 राज्यो मे ब्रिकी कर के स्थान पर वेट लागू किया।
3. 12 अप्रैल 2005 से राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरूआत की गई।
4. सेम पित्रोदा की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का गठन किया गया।
5. दक्षिण कोरिया की इस्पात कंपनी उड़ीसा सरकार के साथ पारादीप में इस्पात प्लांट लगाने हेतु समझौता।

2006 –

- बजाहत हबी बुल्लाह देश के पहले मुख्य सूचना आयुक्त नियुक्त हुऐ।
- 2 फरवरी 2006 को डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गांरटी योजना का अनंतपुर जिले शुभारंभ किया गया।
- महाराष्ट्र मे राजठाकरे ने महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के नाम से नई पार्टी का गठान किया ।
- उमा भारती द्वारा भारतीय जनशक्ति पार्टी का गठन।
- 1 अक्टूबर 2006 से केन्द्रशासित क्षेत्र पाडिचेरी का नाम बदलकर पुदुचेरी कर दिया गया।
- बी. एस. पी. नेता काशीराम का निधन।
- 26 अक्टूबर 2006 को घेरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा हेतु घरेलू अधिनियम लागू किया गया।

2007 –

- 1 जनवरी 2007 को उत्तरांचल का नाम बदलकर उत्तराखंड कर दिया गया।
- भारत की टाटास्टील कंपनी द्वारा यूरोपीय इस्पात कंपनी कोरस का अधिग्रहण कर लिया गया।
- यूनेस्कों ने दिल्ली के लाल किला को विश्व धरोहर सूची मे शामिल किया।
- पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर का निधन।
- 25 जुलाई 2007 को श्री मती प्रतिभा पाटिल देश की पहली महिला राष्ट्रपति बनी।
- मोहम्मद हामिद अंसारी- उपराष्ट्रपति।

2008 –

- 25 जून 2008 से केन्द्र सरकार ने बहुप्रतीक्षित **'ई-पासपोर्ट योजना'** का शुभारम्भ किया। इसके साथ भारत उन 41 देशों में शामिल हो गया हैं। जहाँ यह व्यवस्था लागू है।
- पूर्वोत्तर के राज्यों के लिए 'विजन-2020' 2 जुलाई 2008 को प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने पूर्वोत्तर राज्यों के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु **'विजन-2020'** दस्तावेज जारी किया।
- 10 अप्रैल, 2008 में दूरगामी महत्व के एक महत्वपूर्ण फैसले के तहत् सर्वोच्च न्यायालय की पाँच न्यायाधीशों की एक संविधान पीठ ने आईआईटी (IIT) व आईआईएम (IIM) सहित अनेक केन्द्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों में अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के कानून पर अपनी मुहर लगा दी।
- मई 2008 में केन्द्र सरकार ने सपा, राजद, जनता दल (यू), लोजपा व द्रमुक के भारी विरोध के बीच बहुप्रतीक्षित एवं विवादित महिला आरक्षण विधेयक (**108वाँ संविधान संशोधन विधेयक**) संसद में प्रस्तुत किया।
- **हिमाद्री** – अटार्कटिका के बाद अब आर्कटिक क्षेत्र में भी भारत ने अपना अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया हैं इसे हिमाद्री नाम दिया गया है। उत्तरी ध्रुव से 1200 किमी. दूर नि-एलिसंड (Ny-Alesund) में यह अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया है। भारत ऐसा ग्यारहवाँ देश है जिसने आर्कटिक में अपना अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया हैं ।
- **गंगा राष्ट्रीय नदी घोषित** – केन्द्र सरकार ने गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित करने का फैसला किया है। इसके साथ ही एक अधिकार प्राप्त **गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी** बनाने का भी निर्णय किया गया। यह गंगा की स्वच्छता आदि कार्यक्रमों की योजनाएँ तैयार कर उनका प्रभावी क्रियान्वयन करेगी।
- **कालका शिमला रेलवे** – जुलाई 2008 में यूनेस्को (UNESCO) ने भारत की पर्वतीय रेल लाइन 'कालका-शिमला रेलवे को अपनी विश्व धरोहर सूची में शामिल किया।
- 26 नवंबर, 2008 को मुम्बई में आंतकवादी हमला किया गया जिसमें 166 लोग मारे गये।

2009 –

- आतंकवादी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए केन्द्र सरकार के द्वारा राष्ट्रीय जांच एजेंसी (INA) का गठन किया गया।
- गंगा नदी में पायी जाने वाली डालफिन को भारत सरकार ने राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया है।
- नवंबर 2009 में अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत की यात्रा की।

2010 –

- **गुजरात 'ऑन लाइन वोटिंग' की सुविधा वाला पहला राज्य** – 10 अक्टूबर, 2010 को गुजरात में अहमदाबाद में म्युनिस्पिल चुनाव में 'आन लाइन वोटिंग' की सुविधा उपलब्ध कराने वाला देश का पहला राज्य हो गया है।
- **यूनिक पहचान संख्या का वितरण**– 29 सितम्बर, 2010 को महाराष्ट्र के आदिवासी जिले नंदुरबार के तेंभली गाँव की रंजना सोनावणे देश की पहली भाग्यशाली महिला बनीं, जिन्हें आधार योजना के तहत प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने यूआईडी नम्बर प्रदान किए।
- **राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण** – पर्यावरण सम्बन्धी कानूनों के प्रभावी कार्यान्वयन व पर्यावरण के अधिकारों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (NGT- National Green Tribunal) अक्टूबर 2010 में अस्तित्व में आ गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

- **लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) विधेयक -2010** - प्रवासी भारतीयों को मताधिकार प्रदान करने हेतु लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) विधेयक 2010 (The Representation of the People (Amendment) Bill-2010) संसद के दोनों सदनों में अगस्त 2010 में पारित किया गया ?
- **होमी एन. सेठना** - 5 सितम्बर, 2010 को परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष और भारत के पहले परमाणु परीक्षण के सूत्रधार होमी नौसेरवांजी सेठना का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। वह 86 वर्ष के थे। परमाणु वैज्ञानिक और रासायनिक इंजीनियर सेठना ने ही वर्ष 1959 में ट्रांबे में भारत क पहले प्लूटोनियम संयंत्र की स्थापना की थी।
- **संयुक्त राष्ट्र संघ** - महिलाओं के लिए नए एकल निकाय को महासभा की मंजरी- विश्वभर में महिला अधिकारों की स्थिति में सुधार अर्थात लैंगिक समानता व महिला सशक्तिकरण (Gender Equality and Empowerment of Women) के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के तहत् एक नए महिला निकाय का गठन किया जाएगा। 'यू एन विमन' (UN Women) नाम के इस निकाय को संयुक्त राष्ट्र संघ की 192 सदस्यीय महासभा ने 2 जुलाई 2010 की सर्वसम्मति से मंजूरी प्रदान की।
- **आंग सान सू की की रिहाई** - म्यामार की लोकतन्त्रवादी नेता और नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता **आंग सान सू की**, जो विगत 15 वर्षों से नजरबद थीं, को 13 नवम्बर, 2010 को रिहा कर दिया गया।
- **बुर्ज दुबई उर्फ बुर्ज खलीफा** - संयुक्त अरब अमीरात (UAE) में दुबई आबूधाबी में नवनिर्मित भवन 'बुर्ज दुबई' अब विश्व में सबसे ऊँचा भवन हो गया है। 828 मीटर (2717 फुट) ऊँचे इस भव का निर्माण एम्मार प्रॉपर्टीज द्वारा किया गया है।

2011 -

- 27 दिसंबर 2011 को राष्ट्रगान के 100 वर्ष पूर्ण हो गये है।
- 5 अगस्त 2011 से खाद्य सुरक्षा एवं मानक विनियम (The Food Safety and standards Regulations) लागू कर दिया गया।
- देश में सामाजिक-आर्थिक एवं जाति जनगणना 2011 का सुभारंभ 29 जून, 2011 को त्रिपुरा राज्य के हाजेमारा-ब्लॉक के संखोला गांव में किया गया।
- उ. प्र. को चार भागों में विभाजित करने का प्रस्ताव राज्य विधान सभा में 21 नवंबर, 2011 को ध्वनि मत से पारित किया गया था। प्रस्तावित चार भाग 1. पूर्वांचल, 2. बुंदेलखण्ड, 3. अवध प्रदेश, 4. पश्चिम प्रदेश थे।
- 3 जून, 2011 को सोनिया गांधी द्वारा बासौड़ा राजस्थान में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वराज योजना के पुनर्गठित स्वरूप राष्ट्रीय ग्रामीण आजीवका मिशन का औपचारिक सुभारंभ किया गया।
- वर्ष 2011 में देश की जनगणना 121.02 करोड़ है। जिनमें ग्रामीण जनसंख्या 83.31 करोड़ और शहरी जनसंख्या 37.17 करोड़ है। इस जनगणना के अनुसार देश की कुल साक्षरता 74.04% है।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक 2011 के प्रावधानों के तहत परिवारों को BPL, APL एवं अंत्योदय वर्ग के स्थान पर दो वर्गों प्राथमिकता वर्ग एवं सामान्य वर्ग में बाँटा गया। प्राथमिकता वर्ग में आने वाले गरीबों को मोटा अनाज 1 रूपया, गेहूँ 2 रूपया और चावल 3 रूपये प्रति किलोग्राम की दर से प्राप्त होगा।

2012 -

- जनवरी 2012 में डिब्रुगढ़ से कन्याकुमारी के बीच चलाई गई विवेक एक्सप्रेस रेलगाड़ी देश में सर्वाधिक दूरी तय करने वाली रेल गाड़ी बन गई है। यह रेलगाड़ी 4286 किमी. की दूरी 82.30 घंटे में तय करती है।
- 16 मार्च, 2012 को बंगला देश के मीरपुर स्थित सेरेबंग्ला स्टेडियम में सचिन तेन्दुलकर ने अपना 100 अंतर्राष्ट्रीय शतक बंगलादेश के विरूद्ध शाकिब-अल-हसन की गेंद पर पूरा किया।
- 4 अप्रैल, 2012 को भारतीय नौसेना में आई एन एस चक्र पंड्डुबी को शामिल कर लिया गया है।
- देश में 4जी वायरलेस ब्रॉडबैंड सेवा शुरू हो गई। एयरटेल ने इसे 10 अप्रैल को कोलकाता में लाँच किया। यह 3जी से 5 गुना तो 2जी से 10 गुना तेज है।
- 19 अप्रैल 2012 को अग्नि-V मिसाइल का उड़ीसा के पास व्हीलर द्वीप से परीक्षण किया गया। इसकी मारक क्षमता 5000 किमी. तक है।
- केन्द्रीय खेल मंत्री अजय माकर ने मई 2012 में नई युवा नीति का मसौदा तैयार किया इसके तहत अब 16 से 30 आयु वर्ग के लोग ही युवा माने जाएंगे।
- 25 जुलाई को प्रणव मुखर्जी ने राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण की। उन्होंने इस चुनाव में पी. ए. संगमा को पराजित किया था।
- मुम्बई विस्फोट के आरोपी आतंकवादी अजमल आमिर कसाब को पुणे की यरवदा जेल 21 नवंबर को सुवह 7:30 फांसी पर चढ़ा दिया गया। कसाब को फांसी देने की कार्यवाही का खुफिया नाम ऑपरेशन 'एक्स' रखा गया था।
- 22 दिसंबर, 2012 को सचिन तेंदुलकर ने अंतर्राष्ट्रीय वन-डे क्रिकेट मैचों से सन्यास ले लिया।
- 12 दिसंबर, 2012 को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल का निधन हो गया।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

विश्व इतिहास

औद्योगिक क्रांति -

- औद्योगिक क्रांति की शुरूआत 1759 में इंग्लैड से हुई थी। औद्योगिक क्रांति की शुरूआत सूती कपड़ा उद्योग से हुई थी। इंग्लैड के बाद फ्रांस बैल्जियम, जर्मनी आदि देशो में इसका विस्तार हुआ।

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम -

- अमरीकी स्वंतत्रता संग्राम की शुरूआत 16 दिसंबर 1773 की बॉस्टन टी-पार्टी से मानी जाती है। अमेरिकी स्वंतत्रता की घोषणा 4 जुलाई 1776 को की गई थी।
- 1781 में ब्रिटिश सेनापति लार्डकार्नवालिस ने जार्ज वांशिगटन के नेतृत्व वाली अमरिकी सेना के सामने आत्मसर्मपण कर दिया था।
- अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम 1783 पेरिस की संधि के बाद समाप्त हुआ। जार्ज बांशिगटन अमेंरिकी के प्रथम राष्ट्रपति बने।
- विश्व में सर्वप्रथम लिखित संविधान U.S.A. मे 1789 मे लागू हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका को गणतंत्र की जननी कहॉ जाता है।

अमेरिकी गृह युद्ध, (1861-65) -

- अमरीकी गृहयुद्ध अमेरिका के उत्तरी राज्यों और दक्षिणी राज्यों के बीच 1861-65 तक वर्षो तक चला। दास प्रथा अमेरिकी गृहयुद्ध का एक प्रमुख कारण था।
- अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन के नेतृत्व मे अमेरिका के उत्तरी राज्यों की अखंण्डता को बनाए रखा।
- 1863 मे अब्राहिम लिंकन ने अमेरिका मे दास प्रथा को समाप्त घोषित कर दिया। अब्राहिम लिकंन की 4 मार्च 1865 को जॉन विल्कीज बूटा द्वारा कर दी गई थी।
- अब्राहम लिंकन के अनुसार प्रजातंत्र जनता को जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन है।

फ्रांसीसी क्रांति-

- फ्रांसीसी क्रांति 1789 में हुई थी। इसमें फ्रांस के राजा लुई 16वाँ और रानी एत्वानेट को फॉसी दे दी गई थी।
- फ्रांसीसी कृांति में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का नारा दिया गया था।
- फ्रांसीसी कृांति में वाल्टेयर, रूसो और मान्टेस्क्यू का विशेष योगदान था। रूसो ने Social contract पुस्तक लिखी।

नेपोलियन बोनापार्ट -

- नेपोलियन का जन्म 1769 कोर्सिका द्वीप में हुआ था। 1799 मे नेपोलियन फ्रांस का प्रथम कौसिंल बना और 1802 मे आजीवन कौंसलर बन गया। 1804 मे नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना। नेपोलियन का आधुनिक फ्रांस का निर्माता माना जाता है।
- नेपोलियन ने यूरोप के कई देशो को जीत लिया था, लेकिन 18 जून 1815 को मित्र राष्ट्रो की सेना ने उसे वाटरब्लू के युद्ध मे पराजित किया था।
- नेपोलियन को बंदी बनाकर सेंट हेलेना द्वीप पर भेज दिया गया था और वही पर 1821 में उसकी मृत्यु हो गई थी।

इटली का एकीकरण-

- इटली का एकीकरण का श्रेय मैजिनी, काबूर गैरीवाल्डी को दिया जाता है। गैरीवाल्डी ने लालकुर्ती (Red Shirt) सेना का संगठन करके इटली का एकीकरण करने का प्रवास किया था। इटली का एकीकरण 1871 में पूर्ण हुआ और रोम को इटली की राजधानी बनाया गया।

विस्मार्क-

- लौह और रक्त की नीति में विश्वास रखने वाले विस्मार्क ने 1871 मे जर्मनी का एकीकरण पूर्ण कर दिया था।
- पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी का एकीकरण 1990 में पूर्ण हुआ था।

क्रीमिया युद्ध 1854-56 -

- इस युद्ध मे ब्रिट्रेन फ्रांस और तुर्की के सेनाओं ने रूस को पराजित कर दिया था।

चीन-जापान युद्ध 1894-95 -

- इस युद्ध मे जापान ने चीन को पराजित कर दिया था।

रूस जापान युद्ध, 1905 -

- युद्ध मे जापान ने रूस को पराजित कर दिया था। इस युद्ध मे पहली बार एशिया महाद्वीप के किसी देश की यूरोप महाद्वीप के किसी देश पर पहली विजय थी।

चीनी क्रांति, 1911-

- 1911 में डॉ. सनयात सेन के नेतृत्व में चीनी क्रांति हुई। जिसमें चीन के मंचू राजवंश का पतन हो गया था।
- डॉ. सनयात् सेन चीन के पहले राष्ट्रपति बने। सनयात् सेन का चीन का राष्ट्रपिता कहाँ जाता है।
- 1949 में माओत्से तुंग के नेतृत्व मे चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) -

- प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत 28 जुलाई 1914 को हुई थी। इसका तात्कालिक कारण आस्ट्रिया के राजकुमार डयूक फर्डीनेंड की बोस्निया की राजधानी सेरोजेवो मे हत्या कर दी गई थी। प्रथम विश्वयुद्ध में संपूर्ण विश्व दो भागो मे बॅट गया था मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र। मित्र राष्ट्रो में फ्रांस, इटली, रूस, जापान, और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल थे। धुरी राष्ट्रो में जर्मनी आस्ट्रिया, हंगरी, तुर्की आदि देश शामिल थे।
- 1919 मे इस युद्ध के बाद पेरिस शांति सम्मेलन हुआ जिसमे जर्मनी पर वर्साय की अपमानजनक संधि थोप दी गई।
- 1920 मे अमेरिकी के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के प्रयासों से लीग ऑफ नेशन्स नामक संस्था की स्थापना की गई।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

रूस की क्रांति –

- रूस की क्रांति 1917 मे लेनिन के नेतृत्व मे हुई थी। इस क्रांति मे राजतंत्र को समाप्त करके रूस में साम्यवादी शासन स्थापित किया गया।
- 1921 मे रूस ने विश्व में सर्वप्रथम आर्थिक नियोजन की शुरूआत की गई थी।
- 1991 मे सोवियत संघ का विघटन हो गया था।

इटली में फॉसिस्टवाद का उदय –

- इटली मे मुसोलिनी ने फासिस्टवाद की स्थापना की थी। मुसोलनी 1922 मे इटली का शासक बना। 1943 मे उसकी हत्या कर दी गई थी।

जर्मनी में नाजीवाद का उदय –

- जर्मनी मे नाजीवाद की स्थापना हिटलर ने की थी। हिटलर 1930 मे जर्मनी का चांसलर बना। हिटलर ने द्वितीय विश्वयुद्ध मे जर्मनी का नेतृत्व किया।
- 30 अप्रैल 1945 को हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी। हिटलर मे मीन कैम्प (मेरा संघर्ष) अपनी आत्मकथा लिखी थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939–45) –

- इस युद्ध की शुरूआत 1 सितंबर 1939 को हुई थी। इस युद्ध का तात्कालिक कारण जर्मनी का पौलेण्ड पर आक्रमण कर दिया था।
- इस युद्ध मे बिट्रेन, फ्रांस, अमेरिका, और रूस ने जर्मनी, जापान और इटली को पराजित कर दिया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल था और अमेरिका का राष्ट्रपति फ्रकलिन डी रूजवेल्ट था।
- इस युद्ध में अमेरिका ने 6 अगस्त 1945 को जापान के शहर हिरोशिमा पर 9 अगस्त को नागासाकी पर बम्ब फैके थे। इस युद्ध के बाद फ्रेकंलिन डी रूजवेल्ट के प्रयासों से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी।

पंचशील समझौता–

- 1954 मे भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई ने परस्पर सहयोग और सीमाओं का सम्मान करने के लिए पंचशील समझौता किया था।

समीक्षा इंस्टीट्यूट

समीक्षा
इंस्टीट्यूट